ओ३म्

परिवार और समाज के नवनिर्माण का साहित्यिक मासिक

शांतिधर्मी

जुलाई-2025

01 मई 1936 20 जून 2025

वैदिक पथ के पथिक स्व. चौधरी मित्रसेन आर्य की सहधर्मिणी, आर्ष विद्या की संपोषिका, परममित्र मानव निर्माण संस्थान की संरक्षिका ममतामयी, श्रद्धामयी

स्वर्गीया माता परमेश्वरी देवी जी

शांतिधर्मी परिवार की ओर से विनम्र श्रद्धाञ्जलि

प्रकाशन का 27वां वर्ष

₹20

वैदिक पथ के पथिक स्व. चौधरी मित्रसेन आर्य जी की सहधर्मिणी, श्रीमती परमेश्वरी देवी जी का गत 20 जून को देहावसान हो गया। दिवंगत पुण्यात्मा के प्रति रोहतक में श्रद्धाञ्जलि सभा का आयोजन किया गया, जिसमें देश भर के धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक नेताओं ने श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

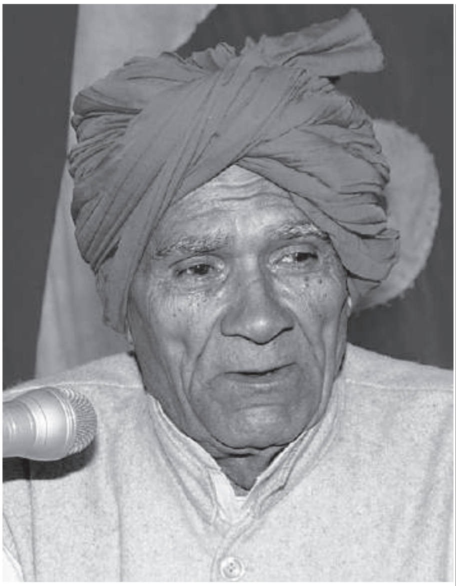

संस्थापक एवं आद्य सम्पादक

पं० चन्द्रभानु आर्य भजनोपदेशक (स्व०)

●सम्पादक

सहदेव समर्पित

94162 53826, 99963 38552

●उपसम्पादक

सत्यसुधा शास्त्री

●विधि परामर्शक :

डॉ० नरेश सिहाग 'बोहल' एडवोकेट

●कार्यालय व्यवस्थापक

रवीन्द्रकुमार आर्य

सहयोग राशि

एक प्रति	:	२०.०० रु०
वार्षिक	:	२००.०० रु०
दस वर्ष	:	१५००.०० रु०

●सहयोग राशि खाते में जमा कराने के लिये 99963 38552 (व्हाट्स एप) पर सम्पर्क करें।

●उक्त सहयोग राशि में साधारण डाक खर्च सम्मिलित है। साधारण डाक से पत्रिका न मिलने पर हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। यदि आप अपनी प्रति रजिस्टरी से मंगाना चाहते हैं तो एक वर्ष के लिये 300 रुपये अतिरिक्त जोड़कर भेजें।

ओ३म्

शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्यमा।

परिवार और समाज के नवनिर्माण का मासिक

शान्तिधर्मी

प्रकाशन का सताईसवाँ वर्ष

जुलाई, २०२५ ई०

वर्ष २७, अंक : ६, आषाढ़, 2082 विक्रमी

सृष्टि सम्वत् 1960853126, दयानन्दाब्द : 201

अन्तर्यात्रा

इन्द्र के हृदय में (सामवेद अनुशीलन) ६

आस्तिकता : जीवन का आधार (शांतिप्रवाह पुनर्प्रकाशन) ७

मोक्ष का मार्ग अत्यंत कठिन है (सन्तवचन) ९

जातिभेद विनाशक आर्यसमाज (अनुभव) १०

साइबर अपराध : सावधानी ही है बचाव (जागरूकता) १२

भारतीय शिक्षा का सर्वनाश (शैक्षिक) १४

पेड़ों पर उगते पेड़े (सन्तान निर्माण) १५

गृहस्थ ही (बहिष्ठ)ऽस्वर्ग है (घर-परिवार) १७

रामायण के स्थानों का भौगोलिक परिचय (इतिहास) १९

ऋग्वेद का तृतीय सूक्त (आओ वेद पढ़ें-४) २२

पुनर्जन्म क्यों और कैसे? (आत्मिक उन्नति) २६

एक अनोखा तलाक (पारिवारिक कहानी) ३०

प्रकृति का उपहार : केला (स्वास्थ्य चर्चा) ३१

कविता :- ८, ११, १६, १८, ३२, ३७ **बालवाटिका**-३६, **भजनावली**-३५, प्रेरक वचन, प्रेरणा पथ, कड़वे मीठे बोल, बिन्दु बिन्दु विचार, समाचार सूचनाएँ

कार्यालय :

सम्पादक शांतिधर्मी, **पो बाक्स नं० 19**

मुख्य डाकघर जींद 126102

७५६/३, आदर्श नगर, सुभाष चौक, जीन्द—१२६१०२ (हरि०)

दूरभाष : 9996338552

ईमेल- **shantidharmijind@gmail.com**

पूर्ण सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। पत्रिका में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्याय क्षेत्र जीन्द होगा।

❑सहदेव समर्पित

ईश्वर की स्तुति और निन्दा

यदि हम ईश्वर को जानते और मानते हैं तो हमारे जीवन में ईश्वरीय प्रभाव स्पष्ट नजर आएगा। ईश्वरीय प्रभाव का अर्थ है कि हमारे मन, वचन, कर्म पवित्र होंगे और हमारे पवित्र आचरण की सुगंधि दूसरों को भी प्रेरित करेगी। यदि हम अपनी भावनाओं के अनुरूप ईश्वर को बनाना चाहेंगे तो सब कुछ गड़बड़ हो जाएगा। अत: हमें अपनी भावनाएँ ईश्वर के अनुरूप बनानी होंगी। जो हम ईश्वर को सर्वव्यापक न जानकर एक स्थान या लोक में रहने वाला मान लेंगे तो फिर आवश्यकता पड़ने पर उसके आने की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। यदि हम मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, चर्च आदि स्थानों को उसके निवास स्थान मानेंगे तो हमारी धार्मिक भावनाएँ केवल उनके अन्दर जाने या उनके आगे से निकलने के समय तक ही सीमित रहेंगी। यदि हम 'ईशावास्यम्' (सारा जगत् ईश्वर से ओतप्रोत है) को समझ लेंगे तो वही भावनाएँ प्रत्येक काल में प्रत्येक स्थान में बनी रहेंगी।

अपने जीवन में ईश्वरीय प्रभाव लाने के लिए आस्तिक लोग ईश्वर की भक्ति करते हैं। भक्ति में हम ईश्वर की स्तुति करते हैं अर्थात् उसके गुणों का चिन्तन करते हैं। जब हम रचना का चिन्तन करते हैं, उसके अनन्त बल और अनन्त ज्ञान का विचार करते हैं, उसके न्याय और दया को देखते हैं तो हमारा ईश्वर में प्रेम बढ़ता है और यह स्वाभाविक बात है कि जिससे हम प्रेम करते हैं तो उसके गुणों का प्रभाव भी हमारे ऊपर होने लगता है। बच्चा अनुकरण करके ही सीखता है। ईश्वर अनन्त सामर्थ्यवान् है। जीवात्मा अल्प सामर्थ्य वाला है। उसके सारे गुण तो जीवात्मा ग्रहण नहीं कर सकता पर उसके गुण कर्म स्वभाव में सुधार तो आता ही है।

प्रश्न आता है कि सर्वव्यापक को एकदेशी मानने वाले उसकी प्रशंसा करते हैं या निन्दा करते हैं? किसी के गुणों को गुण कहना तो उसकी स्तुति है। किसी के गुणों को बढ़ा चढ़ा कर कहना उसकी खुशामद या चाटुकारिता हो सकती है, पर किसी के गुणों को कम करके कहना तो उसकी निन्दा ही है। आज की भक्ति में यही हो रहा है। जो परमेश्वर इस सृष्टि के कण-कण में व्यापक है उसको एकदेशी मानना, न्यायकारी को पक्षपाती कहना यह ईश्वर की निन्दा ही तो है। एक भक्त कहता है कि मेरे बेटे को बिजली के तार ने पकड़ लिया। उसको आकाश मार्ग से आकर भगवान ने बचा लिया। कहने को तो यह बात सामान्य सी है। पर इसमें परमेश्वर का कितना अवमूल्यन हुआ है इसको केवल स्वाध्यायशील भक्त ही समझ सकता है। पहले तो वह भगवान अल्पज्ञ था कि जब बच्चा मरणासन्न हुआ तब उसको पता चला। दूसरे वह अल्प सामर्थ्यवान् हुआ क्योंकि बिना स्वयं जाए उसको बचा न सका। जब वह बिना स्वयं जाए उसको पकड़वा सकता है तो स्वयं जाए बिना छुड़वा क्यों नहीं सकता? तीसरे वह अन्यायकारी हुआ। प्राणी के सुख-दु:ख परमेश्वर की व्यवस्था से उसके कर्मों के फल ही होते हैं। वह किसी को छुड़वा दें किसी को मरने दे?

परमेश्वर ने इतनी विशाल, विचित्र सृष्टि की है, और कितना नियमित और व्यवस्थित संचालन हो रहा है। सृष्टि के कण कण में ईश्वरीय चमत्कार नजर नहीं आता और पेट दर्द ठीक हो जाने में ईश्वरीय चमत्कार नजर आता है यह ईश्वर की निन्दा है या प्रशंसा?

जब हम ईश्वर की स्तुति करते हैं तो उसकी बुद्धिपूर्वक रचना और उसके महान् गुणों को देखकर हमारा ईश्वर से प्रेम बढ़ता है, हमारे गुण कर्म स्वभाव सुधरते हैं। जब हम पूर्ण पुरुषार्थ के साथ परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं तो सबसे पहले तो हमारे अभिमान की समाप्ति होने लगती है। साथ ही हमारा कार्य करने में उत्साह होता है कि हम ईश्वर की आज्ञा के अनुसार पूर्ण पुरुषार्थ कर रहे हैं तो ईश्वर की कृपा से हमें सफलता अवश्य मिलेगी। ईश्वर उसी की सहायता करता है जो ईश्वर की आज्ञा के अनुसार पुरुषार्थ करता है।

परमेश्वर की व्यवस्था में जो कार्य ईश्वर के हैं वही ईश्वर करता है, जो कार्य मनुष्य के करने के हैं वे मनुष्य को ही करने हैं। परमेश्वर ने इतना सुन्दर और सामर्थ्यवान् शरीर और बुद्धि प्रदान कर दी है, अब वह भक्त की रसोई बनाने आएगा तो यह सब क्या काम आएगा। ईश्वर का ईश्वरत्त्व इस बात में है कि वह सब जीवों को उनके कर्मों के ठीक-ठीक फल दे। इसलिए परमात्मा की सच्ची भक्ति द्वारा आत्मकल्याण का प्रयत्न करना चाहिए।

आपकी सम्मतियाँ

जून अंक मिला। मुख्य पृष्ठ पर ऑपरेशन सिंदूर के चित्र गर्वान्वित करते हैं। 'मां की याद में-- ' आपकी रचना भावुक कर देने वाली है। आत्मचिंतन में संपादकीय-- 'संस्कृति की रक्षा' विचारोत्तेजक है। संस्कृति देश की आधारशिला है जो कि हमारे रीति रिवाजों, धर्म, परंपरा, सभ्यता, हमारी सोच, रहने का ढंग, हमारे सामाजिक ढांचे, शिक्षा प्रणाली, शासन व्यवस्था का प्रतिनिधित्व करती है। शताब्दियों से संचित शाश्वत वेद हमारी संस्कृति की धरोहर हैं। समय-समय पर महान् व्यक्तित्त्व संस्कृति की रक्षा के लिए युद्ध करते रहे और जहाँ जरूरत पड़ी वहाँ बलिदान भी देते रहे। विदेशी शासकों ने इस संस्कृति का सत्यानाश करने की कोशिश की। अब हम स्वर्णिम संस्कृति को भुलाकर पश्चिमी संस्कृति को ही ज्यादा महत्त्वपूर्ण समझने लगे। इस बात का श्रेय स्वामी दयानंद सरस्वती को जाता है कि उन्होंने पृष्ठभूमि में पड़े हुए भारतीय संस्कृति के संवाहक वेदों को आर्यसमाज की स्थापना के द्वारा लोगों तक एक बार फिर पहुंचाने का कार्य किया। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में आर्यसमाज ने अहम भूमिका निभाई। आज फिर विलुप्त होती भारतीय संस्कृति को पुनर्जीवित करने के लिए भरसक प्रयत्न किए जाने की आवश्यकता है। मार्गदर्शन करने वाले संपादकीय के लिए हार्दिक बधाई। भलेराम आर्य के बिंदु बिंदु विचार, स्व. पं चंद्रभानु आर्य का लेख 'गृहस्थ : संतान निर्माण के लिए' गौरी शंकर वैश्य की रचना 'राष्ट्र प्रथम' प्रशंसनीय हैं। 'अंकों की होड़ में गुम होता बचपन' अभिभावकों के लिये मार्गदर्शक है। सेवासिंह वर्मा के 'प्रेरक वचन' अच्छे लगे। 'शाकाहार से स्वास्थ्य की सुरक्षा' पढ़ने से निश्चित हो जाता हैं कि शाकाहार, मांसाहार से हर लिहाज से अच्छा है। बारूराम मलिक का लेख बहुत ज्यादा उपयोगी है। बाल वाटिका ज्ञानवर्धक व मनोरंजक है।

प्रोफेसर शाम लाल कौशल, मोबाइल--9426359045
रोहतक--124001(हरियाणा)

✉ 📄 ✉

अपनी गौरवशाली परंपरा में, आकर्षक सज्जा, विविध विषयों में ज्ञान गंगा उंडेलती सुव्यवस्थित कालम से परिपूर्ण शांतिधर्मी प्राप्त हुई। शाकाहार से स्वास्थ्य की सुरक्षा, अमृत तुल्य है नीम-जिसमें नीम के दो अन्य भेद का भी विवरण दे कर 'नीम' को सभी प्रकार से महत्वपूर्ण बताया है। साइबर क्राइम से बचने के उपाय, प्लास्टिक एक अभिशाप-लोक कल्याण कारी हैं, अमल करने से सुरक्षित रहा जा सकता है। 'नम्र बनो कठोर नहीं' 'एक बूंद कितनी कीमत?' 'मेहनत को अपनाना' 'कड़वे मीठे बोल' 'मन कंजूसी मत करना' 'आशावादी बनो' अल्प विस्तार के पश्चात् भी व्यक्ति की उन्नति के सोपान हैं। राष्ट्र प्रथम, रणभेरी, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस का आह्वान, इक शम्मा तो जल जाये, ईश प्रार्थना, अभिलाषा, देशप्रेम की कामना करती रचनाएं हैं। नाहर ज्योति जलती रहे, बलि वेदी पुकारती है, भारतीय रण बांकुरों की शौर्य गाथा- राष्ट्र भक्ति का पाठ पढ़ाने का कार्य करती हैं। आदर्श गुरु भक्त प्रकाश के दर्पण में अति सुन्दर रचना है। वर्तमान समय में विद्यार्थियों तथा युवा पीढ़ी में कुंठाग्रस्तता के कारण आत्महत्या का दौर बढ़ता जा रहा है। इसके समुचित हल के लिए मार्ग दर्शक का कार्य करता है आलेख 'अंकों की होड़ में गुम होता बचपन'। गृहस्थ संतान निर्माण के लिए, जन जन के लिए अति उत्तम ही नहीं अपितु महत्वपूर्ण भी है। क्या है दर्शनों की आध्यात्मिक धारा, बहुत बढ़िया आलेख, 'स्वर्ग' सामवेद मंत्र की अति सुंदर व्याख्या। ऋग्वेद का द्वितीय सूक्त शानदार प्रस्तुति है। 'संस्कृति रहेगी तो मानवता जीवित रहेगी' चेतना उत्पन्न करता आत्मचिंतन 'संस्कृति की रक्षा' बहुत ही महत्वपूर्ण दिशा निर्देश दे रहा है।

डॉ. विजय कुमार पाठक (9407169323)
जी 93, एल आई जी, ऋषि नगर, उज्जैन (म. प्र.)

✉ 📄 ✉

देश की प्रतिष्ठित मासिक पत्रिका शांतिधर्मी साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक क्षेत्र में अपनी पहचान बनाकर यश प्राप्त कर रही है। हार्दिक बधाई व शुभकामनायें।

डॉ. केवल कृष्ण पाठक, सम्पादक रवीन्द्र ज्योति
आनन्द निवास, गीता कालोनी, जींद-126102

पाठक अपनी सम्मति, सुझाव, सूचनाएँ
व्हाट्सएप- 9996338552, 9416253826
ईमेल : shantidharmijind@gmail.com
पर भेज सकते हैं।

इन्द्र के हृदय में

वृषा मतीनां पवते विचक्षणः सोमो अह्नां प्रतरीतोषसां दिवः ।
प्राणा सिन्धूनां कलशा अचिक्रदिन्द्रस्य हार्द्याविशन्मनीषिभिः ॥ 6 ॥

ऋषिः-कविः = क्रान्तदर्शी।

(उषसां, अह्नां, दिवः) उषाओं का, दिनों का, द्युलोक का, (प्रतेरीता) बढ़ाने वाला (मतीनां वृषा) सद् बुद्धि की वृष्टि करने वाला (सोमः) रस-रूप (विचक्षणः) आत्मदर्शी (पवते) पवित्रता का प्रवाह ला रहा है। (सिन्धूनां प्राणा) नदियों का जिलाने वाला (मनीषिभिः) मन का संयम कर (इन्द्रस्य हार्दि कलशान् [इव] आ-विशन्) इन्द्र के हृदय को कलशों की तरह आविष्ट कर-कर (अचिक्रदत्) गरजने लगा है।

आत्म-दर्शी ने एक नया रस-पूर्ण संसार पाया है। उस की अन्तर्मुख दृष्टि ने विश्वामित्र की तरह एक नई सृष्टि की है। उस की उषाओं में एक नई उषा की वृद्धि हुई है। उस के दिनों में एक नये आध्यात्मिक दिन का उदय हुआ है। उस ने एक नये द्युलोक का आविष्कार किया है जो इस भौतिक द्युलोक से कई गुणा अधिक प्रकाश-युक्त है।

सच तो यह है कि उस उषा के उदय से, उस नये दिन के प्रादुर्भाव से, ये भौतिक उषाएँ, ये सामान्य दिन अधिक आलोकित हो उठे हैं। द्युलोक में पहिले, जैसे ज्योति थी ही नहीं। आन्तरिक चक्षु की एक दृष्टि से सभी ग्रह-उपग्रह चमचमा उठे हैं। अब इन में एक विशेष रस की आभा है। इन पर एक विशेष दृष्टि- विशेष मति-बरस गई है। इन पर और इन के समस्त निवासियों पर एक पवित्रता का प्रवाह बह गया है।

प्रवाह पूर्व भी थे। भावनाओं की गंगाएँ सब ओर बह रही थीं, पर उन में जान न थी। आज वायु का थपेड़ा किसी वायु वाले का थपेड़ा है। नदियों की तरंगें किसी तरंगित हृदय की तरंगें हैं। अणु-अणु में विभु बोलता है। अल्प में महान की झाँकी है।

संसार पहले प्रलोभन का कारण था अब पूजा का स्थान है। पहले भोग की स्थली थी, अब योग की। पहले विषयों पर गिरे जाते थे अब उन के द्वारा उठे जाते हैं। पहले जो पदार्थ मनोहारी थे, अब मनीषी हैं। सौन्दर्य प्रभु का है, स्वाद स्वाद वाले का। गन्ध सभी उस परम गन्धी के हैं। यह विचार आया नहीं और रोमांच हुआ नहीं।

हृदय क्या है? सद्भावनाओं के सोम का कलश। कलश भर रहा है, उमड़ रहा है, छलक रहा है। एक नहीं, अनेक कलश हैं। इन्द्रिय-इन्द्रिय, अंग-अंग, नाड़ी-नाड़ी, रोम-रोम कलश बन रहा है। प्रभु के प्रेमागार में विहार कर, पवित्र विहार कर। मनीषियों का सा विहार कर। तेरा हृदय इन्द्र का हृदय है —इन्द्रियों के राजा इन्द्र का। इन्द्र के हृदय में इन्दु गरज रहा है। सुन, उसके वीरनाद को सुन। अपने भक्ति-रस के सरस सन्देश को सुन। अपने वीर-भाव के विमल आदेश को सुन।

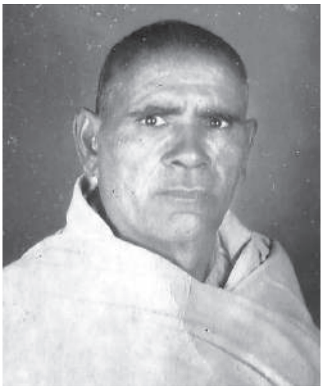

शान्तिप्रवाह (पुनर्प्रकाशन)

फरवरी 1999 ई. से दिसम्बर 2014 तक के सम्पादकीय अग्रलेख

❑स्व. पं. चन्द्रभानु आर्य भजनोपदेशक

संस्थापक एवं आदि सम्पादक शान्तिधर्मी

●●●

आस्तिकता जीवन का आधार है

आज बढ़ती हुई नास्तिकता का कारण यही है कि हम ईश्वर के स्वरूप के अनुसार अपनी भावनाएँ नहीं बनाते अपितु अपनी भावनाओं के अनुसार ईश्वर के स्वरूप की कल्पना करते हैं।

आस्तिकवाद मानव संस्कृति का आधार है और हमारी सबसे बड़ी सम्पत्ति भी है। आस्तिक होने से ही हमारा जीवन सार्थक होता है। यदि जीवन का कोई उद्देश्य ही न हो तो जीवन के होने का अर्थ ही समाप्त हो जाता है। मैंने पहले भी उल्लेख किया था कि हमारे आस्तिक होने या न होने से ईश्वर को कोई अन्तर नहीं पड़ता, परन्तु हमारे अपने जीवन में परिवर्तन आता है।

आस्तिक होने से हमारे जीवन का उद्देश्य होता है -जीवन के पश्चात् मोक्ष रूप ईश्वरीय आनन्द की प्राप्ति और जीवन में मोक्ष के साधनभूत धर्म अर्थात् ईश्वरीय आज्ञा का पालन। तभी हमारा यह जीवन भी प्राणिमात्र के लिये और सारी सृष्टि के लिए उपयोगी और कल्याणकारी होता है। आस्तिकता हमें सिखाती है कि यदि हम अपने कल्याण के लिए प्रयत्नशील होंगे तो हम संसार के लिए भी उपयोगी ही होंगे।

कई बार लोग प्रश्न किया करते हैं कि संसार में इतने धार्मिक लोग बढ़ रहे हैं, इतने उपदेश प्रवचन लोग सुनते हैं कि रोज नये नये टी वी चैनल इसी कार्यक्रम के लिए शुरु हो रहे हैं, हर धार्मिक आयोजन में लाखों की भीड़ होती है फिर भी धरती पर इतने पाप क्यों बढ़ रहे हैं।

इसका उत्तर एक प्रबुद्ध संन्यासी ने तो इस प्रकार दिया था कि यदि इतने उपदेश प्रवचन भी न होते तो कल्पना करो कि कितने पाप बढ़ते? प्रवचनों से कुछ तो अंकुश होता ही है। पर सच्चाई यह है कि इतना सब कुछ होने पर भी नास्तिकता बढ़ ही रही है। वास्तव में नास्तिक नहीं, अपने आप को आस्तिक कहने वाले नास्तिकता के प्रसार में ज्यादा योगदान दे रहे हैं। इसका कारण यह है कि आस्तिकता केवल कहने मात्र की चीज नहीं है कि मैं आस्तिक हूँ बल्कि यह जीवन में आत्मसात् करने की बात है।

वास्तव में आस्तिकता का आधार इस विचार में है कि मेरे होने का क्या अर्थ है और मेरे जीवन में परमेश्वर के होने का क्या अर्थ है? ईश्वर को मानना भी और जानना भी। ईश्वर के स्वरूप को जाने बिना उसको माना नहीं जा सकता। 'जा की रही भावना जैसी' यह एक कवि का भावुक वचन है, इससे ईश्वर की प्राप्ति नहीं की जा सकती। हमारी भावनाओं के अनुसार ईश्वर नहीं हो सकता। बल्कि हमारी भावनाएँ ईश्वर के अनुरूप होनी चाहिएँ। आज बढ़ती हुई नास्तिकता का कारण यही है कि हम ईश्वर के स्वरूप के अनुसार अपनी भावनाएँ नहीं बनाते अपितु अपनी भावनाओं के अनुसार ईश्वर के स्वरूप की कल्पना करते हैं।

ईश्वर का मानवीकरण-अर्थात् उसको मनुष्य जैसा शरीरधारी समझना इसी प्रकार की एक कल्पना है जो शास्त्र विरुद्ध भी है और युक्ति विरुद्ध भी है। इसी विचार के कारण यह कल्पना करनी पड़ी कि वह एक स्थान विशेष पर रहता है। इसी कारण पैगम्बरवाद,

सन्देशवाहक और अवतारवाद मानने की आवश्यकता पड़ी। इसी स्थिति का लाभ उठाकर आज भी कम से कम एक दर्जन लोग हैं जो अपने आप को भगवान होने का दावा कर रहे हैं।

यदि हम इस प्रश्न पर गंभीरता से जिज्ञासु भाव से विचार करें तो बात समझ में आ सकती है। भगवान करता क्या है? इस सृष्टि के निर्माण के साथ उसका मुख्य कार्य है जीवों को उनके कर्मों के अनुसार फल देना। कर्मों के अनुसार फल वही दे सकता है जो कर्म करने वालों के कर्मों को यथावत् जानता हो। जो किसी लोक या आसमान पर बैठा हुआ हो वह अन्तर्यामी नहीं हो सकता और अन्तर्यामी हुए बिना कर्मों को नहीं जाना जा सकता।

अन्तर्यामी तो वही हो सकता है जो सर्वव्यापक हो, और मानव स्वरूप वाला कभी सर्वव्यापक नहीं हो सकता। जिसे मनुष्यों तक अपना सन्देश पहुंचाने के लिए संदेशवाहकों की आवश्यता पड़ती है वह सर्वशक्तिमान भी नहीं है। सर्वशक्तिमान का अर्थ है कि उसे अपने कार्यों के लिए दूसरों की सहायता की अपेक्षा नहीं होती। बिचौलियों के ऊपर आश्रित रहने के कारण वह न्यायकारी भी नहीं हो सकता। यदि वह पाप क्षमा करेगा तो पाप ही बढ़ेगा। यदि वह ऐसा ही है तो ईश्वर का ईश्वरत्व ही समाप्त हो जाता है।

ईश्वर को सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी जानना और मानना ही उसकी स्तुति है, तभी उसके होने का हमारे जीवन पर प्रभाव पड़ सकता है। जब हम यह जानेंगे कि वह हमारे कर्मों का बिना किसी गलती के फल देता है तभी हम अच्छे कर्मों में प्रवृत्त होंगे व बुरे कर्मों से दूर होंगे। तभी हमारे जीवन में परिवर्तन आएगा। ईश्वर को एक स्थान पर रहने वाला, कमजोर और किसी की सिफारिश से पाप माफ करने वाला समझने से हम आस्तिक की श्रेणी में नहीं आ सकते। वास्तव में नास्तिक का अर्थ ईश्वरीय ज्ञान के विपरीत आचरण करने वाला है। अपने आपको आस्तिक कहने से हम आस्तिक नहीं हो सकते, अपितु ईश्वरीय ज्ञान के अनुसार आचरण करने से ही हम सच्चे आस्तिक हो सकते हैं। तब हमारे जीवन में ईश्वरीय प्रभाव स्पष्ट नजर आएगा।

राजस्थान में महर्षि दयानन्द का विषय पाठ्य पुस्तक में जोड़ा गया।

हर्ष का विषय है कि राजस्थान राज्य के पाठ्यपुस्तक में महर्षि दयानन्द जी का विषय जोड़ा गया है। वैदिक विद्वान् डॉ. जयसिंह सिकरवार के महनीय प्रयासों से कक्षा 5 की हमारा पर्यावरण की पुस्तक में पृष्ठ 7 से 8 तक महर्षि दयानन्द जी का विषय जोड़ा गया है। इसके अतिरिक्त 3 से 5 की अन्य कक्षाओं में भी वैदिक संस्कार और ऋषि की विचारधारा को समुचित स्थान दिया गया है। इस हेतु से डॉ. सिकरवार बधाई के पात्र हैं और राजस्थान सरकार भी साधुवाद की पात्र है। उक्त जानकारी सिकरवार जी ने व्हाट्स एप के माध्यम से शांतिधर्मी को उपलब्ध कराई है।

भुलाते रहे

जब-जब भी आया सामने,
संकटों और झंझटों का दौर ।
चारों ओर नजर डाली,
बुद्धि विवेक परिवार डगमगाते रहे।।

जिसके घेरे में आते ही हम,
आह भरते रहे छटपटाते रहे।
जो सरपट झटपट आते रहे,
रुलाते रहे झनझनाते रहे।।

मन को बेकल करे शांति और सुख हरे,
देखते सब रहे सांत्वना कौन करे ?
सूझे कुछ ना कहीं साथी संगी नहीं,
सोचते ही रहे बिलबिलाते रहे।।

आस- विश्वास तेरा प्रभु सामने,
जिससे संबल मिला आ गया थामने।
तू सहायक और रक्षक समर्थ हर विधि,
क्यों तुम्हें ही अहो नाथ! भुलाते रहे पछताते रहे।।

-सत्यदेव प्रसाद आर्य मरुत
आर्य समाज नेमदारगंज
(नवादा-बिहार) पिन 805121

मोक्ष का मार्ग अत्यन्त कठिन है।

आचार्य सोमदेव आर्य, स्वामी आत्मानन्द वैदिक गुरुकुल
मलारना चौड़, सवाई माधोपुर (9024669555)

कोई भी मार्ग ऋजु-सरल हो तो यात्रा भी सरल हो जाती है। यदि मार्ग टेढ़ा-मेढ़ा हो, संकरा हो तो यात्रा भी कठिन हो जाती है। यात्रा केवल मार्ग पर ही निर्भर नहीं करती अपितु यात्री पर भी निर्भर करती है। यदि यात्री कमजोर, रोगी, निरुत्साही और प्रमादी हो तो वह ऋजु-सरल मार्ग पर भी यात्रा नहीं कर सकता और इसके विपरीत यदि यात्री बलवान्, स्वस्थ, उत्साही और उद्यमी है तो मार्ग भले ही कठिन, टेढ़ा-मेढ़ा, संकरा हो तो भी यात्री अपने गन्तव्य को प्राप्त कर ही लेता है।

आज बहुत से बलहीन, मानसिक व शारीरिक रूप से अस्वस्थ, निरुत्साही, प्रमादी मतानुयायी यह दम्भ भरते हैं कि हम परमलक्ष्य तक पहुंच गए हैं और जो हमारा शिष्य बनेगा उसको भी परम लक्ष्य तक पहुँचा देंगे। उनका यह कथन मिथ्या प्रलाप मात्र है। क्योंकि शास्त्र कहता है- **नायमात्मा बलहीनेन लभ्यो न च प्रमादात्तपसो वाप्यलिङ्गात्।** -मुण्डकोपनिषद्

'यह आत्मा (परमात्मा) बलहीन अर्थात् शारीरिक-मानसिक-बौद्धिक-आत्मिक बल से हीन व्यक्ति को प्राप्त नहीं हो सकता, न प्रमादी को और न ही लक्ष्यहीन तप करने वाले को। यदि हम इस शास्त्रवचन पर विचार करते हैं तो हमें लगता है कि इन मतानुयायी गुरुओं के पास यह वस्तु है ही नहीं जिससे परमलक्ष्य अर्थात् मोक्ष प्राप्त किया जाता है। वह वस्तु तो वेद पथानुगामी ऋषियों को ही प्राप्त होती है। मुक्ति के मार्ग को ऋषियों ने अणु-पन्था कहा है-

अणुः पन्था विततः पुराणो-----। मुक्ति का जो मार्ग है, सो अणु अर्थात् अत्यन्त सूक्ष्म है। (ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका) यहाँ महर्षि ने मुक्ति के मार्ग को अत्यन्त सूक्ष्म कहा है। यह सूक्ष्मता कौन सी है, इस पर विचार करते हैं।

सूक्ष्म शब्द का अर्थ बारीक, पतला, गूढ़ रहस्य आदि। मार्ग का अर्थ है- सड़क, रास्ता, पगदण्डी आदि। यदि हम अणु-पन्था का अर्थ अभिधा में लेते हैं तो अर्थ होगा- संकरा, पतला रास्ता और यह अर्थ यहाँ संगत न होगा। यहाँ अर्थ लक्षणा में करेंगे तो अर्थ संगत और सार्थक भी होगा। लक्षणा में अर्थ होगा- 'सूक्ष्म विषय' अर्थात् मुक्ति का जो मार्ग= विषय है वह अत्यन्त कठिनता से बुद्धिगम्य है। इन्द्रियों और उनके विषयों को समझना, मन और मन के विषय को जानना, बुद्धि को जानना कि यह क्या वस्तु है व मेरे लिए कल्याणकारी अथवा अकल्याणकारी कैसे सिद्ध हो सकती है। आत्मा क्या है, ईश्वर क्या है, कैसे प्राप्त होता है- आदि को देखना व विचारना बड़ा कठिन है।

प्रायः व्यक्ति थोड़ी बहुत संध्या करके, पूजा-पाठ अथवा मंदिरों व तीर्थों का अटन करके और आजकल के तथाकथित गुरुओं का शिष्य बनकर सोचते हैं- हम मुक्ति के मार्ग पर हैं। यह उनका भ्रम है। क्योंकि मुक्ति का मार्ग तो अणु-पन्था है।

जिसका अन्तःकरण शुद्ध है और जो अन्तः करण शुद्ध करने में लगा है वही मोक्ष का अधिकारी और मोक्षमार्ग का पथिक है। जब व्यक्ति अपनी शारीरिक क्रियाओं अर्थात् यह देखना कि मेरा उठना-बैठना, चलना, मेरा हंसना, मेरे मुखमण्डल के भाव आदि ऋषियों के तुल्य हैं या नहीं। मैं शरीर से हिंसा, व्यभिचार, चोरी आदि तो नहीं करता। इस मार्ग का पथिक अपनी वाणी के व्यवहार को देखता है कि कहाँ-कहाँ मैं बिना प्रयोजन के बोलता हूँ, कहाँ मुझसे असत्य भाषण होता है, कब मैं द्वेषयुक्त होकर वाणी से अप्रिय वचन बोलता हूँ। मन का विश्लेषण करता है कि मेरे मन में कब कैसे भाव उठते हैं, क्या देख-सुनकर मेरे मन के अन्दर कैसी प्रतिक्रिया होती है। सब ऐषणाओं को छोड़कर इन सब शारीरिक, वाचिक और मानसिक व्यवहारों को देखकर जो इनमें अधर्मयुक्त व्यवहार हैं उन सबको छोड़कर और जिसमें धर्मयुक्त व्यवहार हैं, उन सब को करता है तब उसका अन्तःकरण शुद्धि की ओर चल पड़ता है। सांसारिक इच्छाओं को न रखकर केवल ईश्वर इच्छा के अनुकूल चलना, परमेश्वर की इच्छा का पहचानना, ऋषियों के मन्तव्यों को ठीक-ठीक समझना, उन मन्तव्यों के अनुकूल चलना-- यह बड़ा कठिन कार्य है। इसी कठिनता को देखकर ऋषियों ने मुक्ति के मार्ग को अणु-पन्था कहा।

इस अणु पन्था पर ऋषि दयानन्द जैसे धीर, समुद्र के तुल्य गंभीर, अतुल्य ब्रह्मचर्य के बल से ओत-प्रोत, सतत उत्साही व्यक्ति चलते हैं। जब से महर्षि ने गृहत्याग किया, तब से लेकर अंतिम क्षणों पर्यन्त असत्य को छोड़ सत्य को ही अपनाते चले गये। महर्षि ने जयपुर राज्य में शैवमत का प्रचार किया और इतना प्रचार किया कि वहाँ के स्त्री पुरुष तो क्या- हाथी-घोड़ों को भी रुद्राक्ष पहना दिये गए। यह केवल वैष्णव मत को दबाने के लिए था। कुछ काल पश्चात् किसी ने महर्षि से पूछा कि महाराज आपने ऐसा क्यों किया तो सत्याग्रही ऋषि ने कहा कि वह हमारी भूल थी। हमें ऐसा नहीं करना चाहिए था। क्योंकि मोक्षपथ गामी कभी कूटनीति, अन्याय, अधर्म का आश्रय नहीं करता। यदि उससे अज्ञानवश ऐसा हो जाता है और उसका पता लग जाता है तो उसको वह तत्काल छोड़ देता है।

मोक्षपथ का यात्री व्यवसायी के तुल्य हो जाता है। जैसे व्यवसायी धन का संचय करता रहा है, अधिक से अधिक धन संचय कैसे हो, इसके विषय में सोचता रहता है, वैसे ही मोक्षमार्गी धर्म का संचय करता है, अधिक से अधिक धर्म संचय कैसे हो, यही विचार करता है। आईये हम धर्म को अपना कर मोक्षपथगामी बनें।

जातिभेद विनाशक आर्यसमाज :एक गुरुकुल में पढ़े विद्वान् का अनुभव

❑**प्रा. कुशलदेव शास्त्री,** नान्देड़ (महाराष्ट्र) प्रस्तुति-रामयतन

मेरी शिक्षा-दीक्षा आर्यसमाजी शिक्षण संस्था गुरुकुल झज्जर (हरियाणा) और गुरुकुल ज्वालापुर में हुई। गुरुकुलीय जीवन में एक-दो जातियों के नाम तो सुने थे, पर जातिगत भेदभाव और उच्च-नीचता का थोड़ा भी अहसास नहीं हुआ था। स्वयं मुझे मेरी तथा अन्य छात्रों की जातियों के बारे में भी कुछ अता-पता नहीं था, अत: अस्पृश्यता का कोई सवाल ही नहीं था। हम सभी छात्र एक ही परिवार के स्नेहिल सदस्यों की तरह अपना-अपना जीवन यापन करते थे। पं. गंगाप्रसाद जी उपाध्याय ने ठीक ही कहा है कि 'गुरुकुल के प्रवेश-पत्रों में जाति बिरादरी का खाना नहीं था।' (भारतीय उत्थान और पतन की कहानी-पृष्ठ 119)

गुरुकुल की चारदीवारी से बाहर आने के बाद जातियों का पहले परिचय हुआ, फिर धीरे-धीरे जातिगत भेद-भाव की कटुताओं का परिचय होने लगा। हमारा घर आर्यसमाजी और वह भी क्रियात्मक जीवन में अन्तर्जातीय विवाह का समर्थक होने से सामाजिक सौहार्द का पक्षधर रहा। गाँव में पिताजी 'एक गाँव-एक पनघट' तथा 'मन्दिर प्रवेश' जैसे उपक्रमों द्वारा सतत् समता-बन्धुता का वातावरण बनाने के लिए आजीवन प्रयत्नशील रहे। इस कारण गुरुकुल और घर दोनों से ही मानवतावादी संस्कार प्राप्त हुए।

गुरुकुल के विषय में अपनी टिप्पणी अंकित करते हुए श्री पं. उदयवीरजी 'विराज' (जन्म-1921) लिखते हैं- 'मेरे विचार से गुरुकुल शिक्षा पद्धति आदर्श शिक्षा पद्धति है। जब कहीं दलितोद्धार नहीं था, तब गुरुकुल में दलितोद्धार था। जब कहीं समाजवाद नहीं था, तब गुरुकुल में समाजवाद था। जब कहीं हिन्दी में पढ़ाई नहीं होती थी, तब गुरुकुल में सब विषय हिन्दी में पढ़ाये जाते थे। 'महात्मा मुन्शीराम ने युवकों को ब्रह्मचर्य की दीक्षा देकर उन्हें आदर्श नागरिक, आदर्श मनुष्य बनाना चाहा था।' (निजामशाही पर पहली चोट-पृष्ठ 41) डॉ. अम्बेडकरजी ने तो स्वामी श्रद्धानन्दजी को 'दलितोद्धार का चैम्पियन' ही कहा है।

उपन्यास सम्राट् प्रेमचन्द (1880-1936) डॉ. अम्बेडकर के समाज-सुधार विषयक रचनात्मक कार्यों से सुपरिचित थे, अत: उन्होंने अपने द्वारा सम्पादित 'हंस' मासिक के अगस्त-1933 के मुखपृष्ठ पर डॉ. बाबा साहब अम्बेडकर का चित्र छापा था। अप्रैल-1936 में लाहौर आर्यसमाज की जुबली के अवसर पर 'आर्य भाषा सम्मेलन' के अध्यक्ष के नाते प्रसंगवशात् प्रेमचन्दजी ने आर्यसमाज पर टिप्पणी करते हुए कहा था- 'मैं तो आर्यसमाज को जितनी धार्मिक संस्था मानता हूँ, उतनी ही तहजीबी (सांस्कृतिक) संस्था भी समझता हूँ। उसके तहजीबी कारनामे उसके धार्मिक कारनामों से ज्यादा प्रसिद्ध और रोशन हैं। दलितों के उद्धार में सबसे पहले आर्यसमाज ने कदम उठाया। लड़कियों की शिक्षा की जरूरत को सबसे पहले उसने समझा। वर्ण-व्यवस्था को जन्मगत न मानकर कर्मगत सिद्ध करने का सेहरा उसके सिर पर है। जातिगत भेदभाव और खान-पान में छूत-छात और चौके चूल्हे की बाधाओं को मिटाने का गौरव उसी को प्राप्त है। उसके उपदेशकों ने वेदों और वेदांगों के गहन विषय को जन-साधारण की सम्पत्ति बना दिया, जिन पर विद्वानों और आचार्यों के कई-कई लीवर वाले ताले लगे हुए थे।'

इस सृष्टि में परमेश्वर द्वारा दिया गया ज्ञान वेद ही है

किसी ग्रंथ के ईश्वरीय होने की कसौटी यह हैं-

1. जिस पुस्तक में ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव के अनुकूल कथन हो वही ईश्वरीय है। ईश्वर पवित्र, सर्वविद्यावित्, शुद्ध गुण कर्म स्वभाव वाला है और न्यायकारी तथा दयालु आदि गुणों से युक्त है। उदाहरणार्थ ईश्वर न्यायकारी है तो उसका उपदेश अन्याययुक्त नहीं हो सकता।

2. सृष्टिक्रम, प्रत्यक्षादि प्रमाण, आप्तों के व्यवहार के विरुद्ध कथन न हो, वही ग्रंथ ईश्वरोक्त हो सकता है। सृष्टिक्रम के विरुद्ध जैसे गधे के सींग, बांझ से पुत्र होना, बिना पिता के पुत्र उत्पन्न होना, हथेली रगड़कर आदमी पैदा होना आदि कथनों से युक्त ग्रंथ ईश्वर के बनाए नहीं हो सकते। इसी प्रकार प्रत्यक्षादि प्रमाण के विरुद्ध जैसे- पृथिवी आदि का गोल होना प्रत्यक्ष है, किसी ग्रंथ में इन्हें चपटा आदि लिखा हो तो वे ईश्वरोक्त नहीं।

3. ईश्वर का ज्ञान निर्भ्रम है। उसके बनाए ग्रंथ में भी भ्रांतियुक्त ज्ञान नहीं होना चाहिए।

4. जैसा परमेश्वर है और जैसी उसकी बनाई सृष्टि है, वैसा ही वर्णन उसके बनाए ग्रंथ में होना चाहिए। जैसे ईश्वर सर्वव्यापक है, और किसी ग्रंथ में उसको पहाड़ आदि पर रहने वाला, वैकुण्ठ या क्षीरसागर, चौथे या सातवें आसमान पर रहने वाला बताया जाए तो वह ग्रंथ ईश्वरोक्त नहीं। ऐसे ही प्रकृति और जीव का भी सही प्रतिपादन ईश्वरीय ग्रंथ में होना चाहिए।

5. जो प्रत्यक्षादि प्रमाण विषयों से अविरुद्ध, शुद्धात्मा के स्वभाव से विरुद्ध न हो- इन परीक्षाओं से वेद ही ईश्वरीय ज्ञान सिद्ध होता है। इसके अतिरिक्त ईश्वरीय ग्रंथ में अनित्य मनुष्यों, नगरों, स्थानों का इतिहास नहीं है। क्योंकि ये सब चीजें बदलती रहती हैं। ईश्वर का ज्ञान नित्य है, वह कभी नहीं बदलता।

-महर्षि दयानन्द जी के लेखन पर आधारित

राहों में खुशियां बिछाते चलो

❒सतीश कुमार नारनौंद, 82295960700

मिले आत्म शांति कर्म वृक्ष लगाते चलो।
सब की राहों में खुशियां बिछाते चलो।

माना रिश्ते आज स्वार्थी हो चले यहां।
बुझेगी प्रेम से प्यास अमृत बहाते चलो।

सतत् दोहन प्रकृति का बढ़ाएगा कष्ट।
एक दिन मिटेंगी नस्लें ये बताते चलो।

देखो पी रहे सांसों में जहर हम सभी।
बनें खुशी के आंगन पेड़ उगाते चलो।

फैले भ्रातृभाव मकरंदी इस जहां में।
घट में सबके ऐसा दीप जलाते चलो।

दिलों से नफरत की वह दीवार तोड़ दे।
ऐसे मानव धर्म की राह दिखाते चलो।

कड़वे मीठे बोल

❒प्रोफेसर शामलाल कौशल 9416359045

❖सूर्य कड़वे मीठे बोलऔर बाप की गर्मी को सहन करना सीखो क्योंकि जब ये दोनों डूबते हैं तब चारों तरफ अंधेरा हो जाता है।

❖स्वयं को माचिस की तीली मत बनाओ जो थोड़ा सा घर्षण होते ही सुलग उठे। स्वयं को शांत सरोवर बनाएं जिसमें कोई अंगारा भी फैंके तो खुद ही बुझ जाए।

❖यह रोटी भी सस्ती नहीं यारो, कोई इसे कमाने को दौड़ता है तो कोई पचाने के लिए दौड़ता है।

❖परिवार का हाथ पकड़ कर चलिए, लोगों के पैर पकड़ने की जरूरत नहीं होगी।

❖सिर्फ धोखा ही शुद्ध मिलता है इस जमाने में, बाकी तो हर चीज में मिलावट है।

❖मौत के होते हुए इनसान में इतनी अकड़ है, जरा सोचो अगर मौत न होती तो यह दुनिया कितनी गुरूर से भरी होती।

साइबर अपराध : सावधानी ही है बचाव

❑बारूराम मलिक (9017425471) नायब तहसीलदार (रिटायर)
द्वारा सन्दीप मलिक एडवोकेट, पंजाब एण्ड हरि. हाईकोर्ट, चंडीगढ़

साइबर अपराध कैसे होता है

❖साइबर अपराध कंप्यूटर नेटवर्क या डिजिटल उपकरणों का उपयोग करके किए जाने वाले अपराध होते हैं।

❖बिना अनुमति के कंप्यूटर सिस्टम से नेटवर्क में प्रवेश करते हैं। ❖कंप्यूटर या नेटवर्क से संवेदनशील जानकारी चुराई जाती है। ❖ऑनलाइन माध्यमों से लोगों को धोखा देकर पैसे या संपत्ति हड़पी जाती है।

❖किसी को ऑनलाइन परेशान करना या धमकी देना, किसी की निजी जानकारी या तस्वीरें सार्वजनिक करने की धमकी देकर ब्लैकमेल किया जा सकता है।

❖कंप्यूटर या डाटा चोरी करके फिरौती मांगी जाती है। ठगी करके संपत्ति को नुकसान पहुंचाया जाता है।

❖सार्वजनिक वाईफाई का उपयोग करते समय आपकी निजी जानकारी को हैक किया जा सकता है।

❖वित्तीय या कार्ड भुगतान डेटा की चोरी।

❖फिशिंग हमले में धोखेबाज ऐसे संदेश भेजते हैं जो जाने-पहचाने लगते हैं। यह धोखा देना होता है।

❖साइबर जासूसी हमला करके आपका संपूर्ण डाटा हैक करके किसी कंपनी या संपदा तक पहुंचा जा सकता है।

❖साइबर अपराध में हैकिंग, ऑनलाइन धोखाधड़ी, अवैध गतिविधियां शामिल हैं।

❖साइबर अपराध में शामिल लोगों को हैकर, स्कैमर, धोखेबाज कहा जाता है।

❖तकनीकी ज्ञान, समस्या समाधान कौशल, रचनात्मक या दृढ़ता का इस्तेमाल करके हैकिंग के जरिए लोगों की कमजोरी का फायदा उठाया जाता है।

❖धोखाधड़ी वाले फोन कॉल का उपयोग करके संवेदनशील जानकारी- क्रेडिट कार्ड नंबर, बैंक विवरण, पासवर्ड इत्यादि का विवरण प्राप्त किया जाता है।

❖ साइबर अपराधी व्यक्तियों, कंपनियों, स्कूलों, विश्वविद्यालयों, सरकारी एजेंसियों इत्यादि का डाटा तलाश करके निशाना बनाते हैं। ❖साइबर अपराधी किसी भी भाषा में किसी भी समय आपकी जानकारी लेकर आप को ठग सकते हैं।

❖यदि आप सचेत रहें, ध्यान रखें, स्वयं सोचें, जल्दी ना करें, संदेशों की ओर प्रभावित न हों तो बचाव हो सकता है।

साइबर क्राइम में धोखाधड़ी

❖यौन शोषण, पीछा करना, उत्पीड़न करना, वित्तीय या रोमांस धोखाधड़ी की जाती है। यह धोखाधड़ी बिना इंटरनेट प्रयोग भी की जा सकती है।

❖साइबर फ्रॉड, जिसे हिंदी में साइबर ठगी, डिजीटल धोखाधड़ी भी कहा जाता है, जो मोबाइल, टेक्नोलॉजी या कंप्यूटर उपयोग से की जा सकती है।

❖साइबर बुलिंग (ऑनलाइन रैगिंग) से अपमानजनक संदेश भेजना, झूठी अफवाह फैलाना, किसी को धमकाना, परेशान करना, अपमानित करना, मानसिक तनाव पैदा करना, किसी व्यक्ति की भावनाओं को आहत किया जाता है।

❖पुलिस या सरकारी कर्मचारी बनकर लोगों को धमकाना, पैसे ऐंठना और ठगी करके धोखाधड़ी की जा सकती है।

❖लोगों को झूठी लॉटरी जीतने का लालच देकर पैसे ऐंठना।

❖किसी और का नाम या पहचान उपयोग करके धोखाधड़ी करना।

❖किसी के बारे में ऑनलाइन बुरी दु:खदायी या शर्मनाक टिप्पणियां या अफवाहें पोस्ट करना।

❖किसी को चोट पहुंचाने की धमकी देना या उसे आत्महत्या करने के लिए कहना।

❖साइबर अपराधी कस्टमर केयर या टेक्निकल सपोर्ट देने वाली फर्जी वेबसाइट के जरिए ठगी कर सकते हैं।

❖आपका बैंक खाता अपडेट करना है, आपका फोन बंद होने वाला है, आपराधिक मामले में फंसे हैं, आपने किसी कंपनी से धोखाधड़ी की है- अपराधी इस प्रकार की बात कर सकते हैं। पुलिस वर्दी में आपको किसी अधिकारी का फोटो भी दिखेगा। आपको भयभीत करके पीछा छुड़वाने के

लिए पैसे की मांग की जाएगी या आपकी जानकारी हासिल करके आपके खाते से रकम निकाल ली जाएगी। ऐसी धोखाधड़ी आम हो रही है जिसमें बैंक कर्मचारियों की मिलीभगत हो सकती है।

❖औरत, लड़कियां भी उपर्युक्त प्रकार से धोखाधड़ी कर सकती हैं, अत्यंत दर्दनाक हादसे में फंसा सकती हैं।

साइबर अपराधियों की सजा

❖साइबर अपराधियों को सजा के तौर पर आईटी अधिनियम 2000 के तहत अपराध की गंभीरता के आधार पर 2 साल से लेकर आजीवन कारावास तक की सजा हो सकती है। साथ ही जुर्माना भी लगाया जा सकता है।

❖धोखाधड़ी, चोरी, गोपनीयता का उल्लंघन, आपत्तिजनक संदेश, साइबर आतंकवाद के लिए दंड से संबंधित 3 साल की कैद या 5 लाख तक का जुर्माना या दोनों हो सकती हैं।

❖हस्ताक्षर, पासवर्ड या अन्य विशिष्ट पहचान का उपयोग करने पर 3 साल की सजा या एक लाख तक का जुर्माना।

❖अपराधी राष्ट्रीय सुरक्षा या अन्य सिस्टम को नुकसान पहुंचाता है जिससे सुरक्षा को खतरा पहुंचता है तो 20 साल तक सजा हो सकती है।

बचाव के उपाय

❖साइबर अपराधों से निपटने के लिए साइबर सेल क्राइम ब्रांच जैसी विशेष ईकाइयां स्थापित की गई हैं।

❖किसी भी व्यक्ति को, अनजान को, जानकार को, दोस्त को, रिश्तेदार को, सहपाठी को, औरत या लड़की या नौजवान को अपना मोबाइल मत दें। आपके मोबाइल से कोई भी गलत कॉल की जा सकती है।

❖मोबाइल को अपने कब्जे में रखें। किसी को इसका गोपनीय पासवर्ड नंबर ना बताएं।

❖अपराधियों को पकड़वानेने में आपको पूर्ण सहयोग देना चाहिए तथा नौजवानों को प्रेरित करें कि इस अपराध से बचें तथा दूसरों को बताएं मार्गदर्शन करें।

❖साइबर क्राइम, वित्तीय धोखाधड़ी के मामले में तत्काल रिपोर्ट करने के लिए 1930 नंबर (पहले 155 260) पर कॉल करें।

❖1930 पर कॉल करने से आपकी शिकायत दर्ज की जा सकती है तथा जिस खाते में आपका पैसा गया है उसे फ्रीज कर दिया जाएगा। ❖शिकायत तब दर्ज की जाएगी जब आप बैंक के लिंक्ड रजिस्टर्ड मोबाइल नंबर से कॉल करेंगे।

❖आपको अपना शिकार बनाने के लिए इन नंबरों से शुरू होने वाले नंबर्स +87 + 86 + 67 + 69 से कॉल की जा सकती है। ये सभी फ्रॉड हैं। इनसे बचिये। भारतीय नंबर +91 होता है।

प्रेरणा-पथ

❖पवित्र जीवन ही एकमात्र दु:ख निवृत्ति का साधन है, मन की शांति के लिए विचार, वाणी और व्यवहार की पवित्रता आवश्यक है।

❖जलते हुए वृक्ष पर पक्षी नहीं रह सकते, वैसे ही विकारों से युक्त मन में सत्य और अहिंसा नहीं रह सकते।

❖प्रेम तथा समय; दो चीजें ऐसी हैं जिन्हें सारी दुनिया में आजीवन खर्च तो किया जा सकता है परन्तु खरीदा नहीं जा सकता।

❖निष्काम सेवा से दूसरे का भला हो चाहे न हो, अपना भला जरूर होता है।

❖जो कोई जितने बड़े पद पर बैठ जाता है, उसे उतना ही विचारवान् व आचारवान् भी होना चाहिए।

प्रेषक-आर्यवीर कर्मवीर

गंगायचा अहीर बीकानेर रेवाड़ी हरियाणा

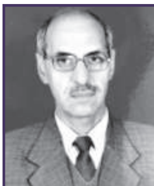

प्रेरक-वचन

सेवासिंह वर्मा, पूठ खुर्द, नई दिल्ली

(9958594981)

♦जीवन को आसान नहीं, बस स्वयं को मजबूत बनाना सीखो।

♦झूठ को अगर धीरे से भी बोलोगे तब भी सब सुन लेंगे और सच चिल्लाने पर भी कोई नहीं सुनता।

♦बड़ों की छत्रछाया बोझ नहीं है। यह हमारा सुरक्षा कवच है। इन्हें सम्भालकर रखिये। यही हमारी संस्कृति व संस्कार हैं।

♦प्रतिभा आपको शीर्ष पर ले जाती है। परंतु आपका व्यवहार निश्चित करता है कि आप वहां कितने समय तक बने रहेंगे।

♦जीवन में कुछ भी अच्छा करने के लिए आपको किसी डिग्री की आवश्यकता नहीं है। बस आपके मन में एक अच्छी भावना की आवश्यकता है।

भारतीय शिक्षा का सर्वनाश

लेखक : आचार्य भगवान देव

(कीर्तिशेष स्वामी ओमानन्द सरस्वती) गुरुकुल झज्जर

प्रस्तुति : अमित सिवाहा

अंग्रेजों के भारत आने से पूर्व योरूप के किसी भी देश में इतना शिक्षा का प्रचार नहीं था जितना कि भारतवर्ष में था। भारत विद्या का भण्डार था। सार्वजनिक शिक्षा की दृष्टि से भारत सब देशों का शिरोमणि था। उस समय असंख्य ब्राह्मण आचार्य अपने-अपने कुल में शिष्यों को शिक्षा देते थे। मुख्य-मुख्य नगरों में विद्यापीठ स्थापित थीं। छोटे बालकों की शिक्षा के लिए प्रत्येक ग्राम में पाठशालायें थीं , जिनका संचालन पंचायतों की ओर से किया जाता था।

इङ्गलिस्तान पार्लियामेंट के सदस्य केर हार्डी ने अपनी पुस्तक 'इण्डिया' में लिखा है- 'मैक्समूलर ने, सरकारी उल्लेखों और मिशनरी की रिपोर्ट के आधार पर जो बंगाल पर कब्जा होने से पूर्व वहाँ की शिक्षा की अवस्था के सम्बन्ध में लिखी गई थी, लिखा कि उस समय बंगाल में 80 हजार पाठशालाएं थीं।'

सन् 1823 ई. की 'कम्पनी' की एक सरकारी रिपोर्ट में लिखा है- 'शिक्षा की दृष्टि से संसार के किसी भी अन्य देश में किसानों की अवस्था इतनी ऊँची नहीं है जितनी ब्रिटिश भारत के अनेक भागों में।'

भारत के जिस-जिस प्रान्त में 'कम्पनी' का राज्य स्थापित होता गया, उस उस प्रान्त में सहस्रों वर्ष पुरानी शिक्षा प्रणाली सदा के लिए मिटती चली गई। ग्राम पंचायतों और देशी रियासतों के साथ साथ पाठशालाओं का भी लोप होता गया। क्योंकि ग्राम पंचायतें पाठशालाओं का प्रबन्ध करना अपना कर्तव्य समझती थीं और देशी रियासतों के राजाओं की आय का बहुत बड़ा भाग शिक्षा प्रचारार्थ पाठशालाओं को दिया जाता था। यह सहायता मासिक और वार्षिक बंधी हुई थी।

हमारे प्राचीन इतिहास और साहित्य को नष्ट कर उसके स्थान में मिथ्या इतिहास लिखवाकर भारतीय स्कूलों में पढ़ाना प्रारम्भ किया गया। सखेद लिखना पड़ता है कि वही मिथ्या इतिहास स्वतन्त्र भारत में आज भी पढ़ाया जा रहा है। सन 1757 से लेकर 1857 तक निरन्तर एक शताब्दी तक यह विवाद रहा कि भारतीयों को शिक्षा देना अंग्रेजों की राज्य सत्ता के लिए हितकर है या अहितकर। प्रारम्भ में प्राय: सभी अंग्रेज शासक भारतीयों को शिक्षा देने के कट्टर विरोधी थे। जे. सी. मार्शमैन ने 15 जून 1853 ई. को पार्लियामेंट की सिलेक्ट कमेटी के सन्मुख साक्षी देते हुए कहा था।

'भारत में अंग्रेजी राज्य के कायम होने के बहुत दिन बाद तक भारतवासियों को किसी प्रकार को भी शिक्षा देने का प्रबल विरोध किया जाता रहा।'

भारतीयों में शिक्षा का ह्रास हो गया। अंग्रेज शासकों को सरकारी विभागों में हिन्दुस्तानी कर्मचारियों की आवश्यकता अनुभव हुई, क्योंकि इनके बिना उनका कार्य चल सकना सर्वथा असम्भव था। 18 वीं शताब्दी के अन्त में अंग्रेज शासकों के विचारों में परिवर्तन हुआ। उन्होंने अपनी आवश्यकता पूर्ति के लिए ऐसी शिक्षा प्रणाली प्रचलित की जिससे लेखक (कलर्क) तैयार किये जा सकें। डायरेक्टरों ने 5 सितम्बर, 1827 के पत्र में गवर्नर जनरल को लिखा कि 'इस शिक्षा का धन उच्च और मध्यम श्रेणी के उन भारतवासियों पर व्यय किया जाये, जिनमें से कि आपको अपने शासन के कार्यों के लिए सबसे अधिक योग्य देशी एजेन्ट मिल सकते हैं और जिनका अपने देश वासियों के ऊपर सबसे अधिक प्रभाव है।'

इस प्रकार अंग्रेजों ने भारत की प्राचीन शिक्षा प्रणाली को नष्ट कर दिया। जिससे भारत में विद्वानों का अभाव होता गया और क्लर्कों की वृद्धि होती गई। क्योंकि शिक्षित भारतीयों से अंग्रेज बहुत डरते थे। अंग्रेजों का अतीत काल इतना प्रभावशाली न था जितना भारतीयों का। भारतवासियों को ज्यों-ज्यों ब्रिटिश भारतीय इतिहास के आन्तरिक वृत्तान्त का ज्ञान होता है , त्यों-त्यों उनके चित्त में यह विचार उत्पन्न होता है कि भारत जैसे विशाल देश पर मुट्ठी भर विदेशियों का आधिपत्य होना बड़ा भारी अन्याय है। अत एव उनकी इच्छा हो जाती है कि वे अपने देश को इस विदेशी शासन से स्वतन्त्र कराने में सहायक हों। यह मैं ही नहीं लिख रहा अपितु एक अनुभवी अंग्रेज मेजर रालेण्डसन जो वहां की शिक्षा-कमेटी का मन्त्री भी रह चुका है , उसने 4 अगस्त 1853 ई. में पार्लियामेंट कमेटी के सम्मुख ऐसी सम्मति प्रकट की थी। इसीलिए अंग्रेजों ने हमारे इतिहास, साहित्य और शिक्षा प्रणाली का सर्वनाश कर डाला।

पेड़ों पर उगते पेड़े

□ **देवनारायण भारद्वाज** 'वरेण्यम्' अवन्तिका (प्रथम) रामघाट मार्ग, अलीगढ़-202001

वैदिक विद्यालय सासनी में प्रविष्ट छात्रों के विद्यारम्भ संस्कार हेतु उस वर्ष कन्या गुरुकुल सासनी की मुख्याधिष्ठात्री मान्या कु. कमला स्नातिका को आमन्त्रित किया था; जिन्होंने अपनी ब्रह्मचारिणियों को साथ लेकर मधुर मन्त्रोचारण पूर्वक यज्ञ एवं गायन कराया, फिर बच्चों को विद्यारम्भ सम्बन्धी शास्त्रीय उपदेश दिया।

प्राय: ऐसे अवसरों पर विद्यालय के बच्चों से बात करने के लिए आचार्यश्री इस लेखक को भी बुला लेते थे। इस बार जब मैं वहाँ गया तो बच्चों से वार्ता की सामग्री मुझे बस से उतरते ही अड्डे पर मिल गयी। सासनी के अमरूद दूर दूर तक अपनी मिठास के लिए प्रसिद्ध हैं। उत्तम श्रेणी के अमरूद तो प्रात: काल की मण्डी से ही बाहर हो निर्यात हो जाते हैं।

शेष बचे अमरूद दिन भर बस-अड्डे के आस पास ठेलों पर बिकते रहते हैं। ठेले वाले जोर जोर की आवाज लगाकर अपने अमरूदों की गुणवत्ता का बखान कर ग्राहकों को अपनी ओर खींचते हैं। प्रात: से सायं तक उनके वाक्य तो बदलते रहते हैं, किन्तु तत्काल जो वाक्य मैंने सुने- उन्हें आप भी सुनिये।

एक ठेले वाला बोला- 'लो जे हैं पेड़े'। दूसरा ठेले वाला बोला- 'पेड़े वे है कि जे हैं पेड़े'। तभी तीसरा ठेले वाला बोला-'पेड़े न उसके न तेरे-पेड़े हैं मेरे।' ये तीनों वाक्य सुनकर मुझे हँसी आ गयी और मैं उस बाजार से निकल कर बड़े मनोविनोद के वातावरण में वैदिक विद्यालय के अतिथि, शिक्षक एवं विद्यार्थियों से भरे हुए सभागार में पहुँच गया। यज्ञ की ब्रह्मा और उपदेष्टा पूज्या कमला स्नातिका जी के संस्कार-सम्बोधन के बाद मुझे भी बच्चों से संवाद करने का आदेश दिया गया।

मैंनें अपनी बात तीनों ठेले वालों द्वारा कहे गये वाक्यों को दोहराते हुए प्रारंभ की। अमरूद के ठेले वाले हों या अन्य वस्तुओं को बेचने वाले, सभी अपनी भाषा को अलंकारपूर्वक ही बोलते हैं। तीनों ठेले वाले बेच रहे अमरूदों का नाम नहीं ले रहे थे, किन्तु पेड़े की उपमा से महिमामण्डित करके ग्राहकों को आकर्षित कर रहे थे। अमरूद मीठा व स्वादिष्ट भी हो सकता है; नहीं भी हो सकता है। पर पेड़ा तो मीठा ही मीठा होगा। स्वास्थ्य एवं रोग प्रतिरोधक क्षमता के कारण अमरूद पेड़े की तुलना में कहीं अधिक वजनदार है; किन्तु आर्थिक मूल्य की दृष्टि से पेड़ा अमरूद की अपेक्षा बीस गुना भारी पड़ता है।

मैंने बच्चों से पूछा- अमरूद कहाँ से आता है? उन्होंने ठीक उत्तर दिया- बाग से; फिर पूछा- पेड़ा कहाँ से आता है? उन्होंने इसका भी ठीक उत्तर दिया- हलवाई की दुकान से। इस कथन से बच्चों से संवाद करने की सरल भूमिका बन गयी। मैंने उन्हें बताया ये दोनों वस्तुएँ बाग व दुकान पर आने से पहले धरती माता के गर्भ में आती हैं। भूपालक किसान ही इनका उत्पादन करके बाजार में पहुँचा देता है। अमरूद जैसे उपजते हैं वैसे ही बाजार में आ जाते हैं। अधिक गुणकारी होते हुए भी इनका मूल्य कम ही रहता है। भू माता से उपजे गन्ने की खाँड, भूमि से निकले चारा-दाना को खाकर गौमाता के दूध से बने खोये को मिश्रित कर हलवाई स्वादिष्ट पेड़े बना देता है; और इसका मूल्य बहुत बढ़ा देता है। स्थान-स्थान के अमरूद प्रसिद्धि पाते हैं; पर अपनी ऋतु में ही मिल पाते हैं; किन्तु बारहों महीने मिलने वाले पेड़े अपने स्वाद के कारण नगरों को विश्व प्रसिद्ध बना देते हैं, जैसे 'मथुरा व बदायूँ का पेड़ा' कहते कहते ही मुँह में पानी आने लगता है।

पता यह चला कि प्रकृति के माध्यम से परमात्मा सभी वस्तुओं की 'कच्चे माल' के रूप में उत्पत्ति करता है, और मनुष्य उन्हीं वस्तुओं से एक ही प्रकार की नहीं, आवश्यकतानुसार विविध वस्तुओं का निर्माण कर लेता है। सोना, चाँदी, लोहा आदि धातुएँ एवं हीरा आदि माणिक्य यदि तराशे व तपाये न जायें तो मिट्टी में ही पड़े रहें और उपयोगी मुद्रा व आभूषण न बन पायें।

परमात्मा की प्राकृतिक सम्पदा को सुखदा-वसुधा बनाने का कार्य मनुष्य को करना पड़ता है। इसीलिए परमात्मा ने मनुष्य को सब जीवों से ऊपर अपने प्रतिनिधि के रूप में

उत्पन्न किया है। अपने ब्रह्माण्ड के भू, अन्तरिक्ष एवं सूर्यलोक की भाँति उसे भी शरीर एवं हृदय का परिपूर्ण पिण्ड प्रदान किया है। सृष्टि के प्रारंभ में ही परमपिता परमात्मा ने मार्गदर्शन कर दिया है, जिसे श्रुति कहते हैं। आदि ऋषियों ने इस श्रुति-दर्शन को देखा और आगे आने वाले अपने शिष्य ऋषियों को इस श्रुति की संस्कृति को सुनाये जाने की परम्परा स्थापित कर दी। वेद में वर्णित पदों का निहितार्थ उन्होंने सृष्टि के पदार्थों का अवलोकन कराके मनुष्यों के हृदय में प्रकाशित कर दिया। इसके आभा-क्षेत्र में जो बना रहेगा वह मनुष्य से पितर-देव के महान पद का अधिकारी बन जायेगा, और जो इसकी उपेक्षा कर देगा, वह पशु-राक्षस होने से बच नहीं पायेगा।

'मनीषिभि: पवते पूर्व्य:' (साम 822) मननशील होकर व्यक्ति सनातन रचनाओं को पवित्र या रक्षित करता है। यह यम-नियम आदि साधनों से शाश्वत आनन्दमय आदि कोशों को सींचता है। तीनों शरीरों में निवास करने वाले जीवात्मा को प्रसिद्ध करता, संसार में मित्रता के लिए जीवनशक्ति को बढ़ाता और आनन्द की वर्षा करता। सत्संगति से वह कौन सी ऊँचाई है, जिसे प्राप्त नहीं कर सकता और कुसंगति से बढ़कर वह कौन सी खाई है, जिसमें जाकर वह डूब नहीं जाता?

चित्रकार ने विद्यालय-दर-विद्यालय घूमते हुए एक नन्हें भोले भाले बालक का चित्र बनाया। इसके प्रदर्शन से उसने खूब प्रसिद्धि पायी व प्रभूत धन भी कमाया। बूढ़ा होते होते वर्षों बाद चित्रकार के मन में एक भयंकर वीभत्स मनुष्य का चित्र बनाने की कामना जाग उठी। जेल-दर-जेल भटकते हुए वह एक कैदी के सामने रुक गया और उसका चित्र बनाने की इच्छा प्रकट की। जब वह तैयार नहीं हुआ, तो उसे एक चित्र दिखाकर बताया- मेरा तो काम ही चित्र बनाने का है। प्रस्तुत चित्र को देखकर भयंकर कैदी जब दहाड़ें मार कर रोने लगा, तब जेलर ने कहा भयंकर-उत्पीड़क यातनायें दिये जाने पर भी तुमने आँसू नहीं गिराये और आज इस चित्र को देखकर रो रहे हो। रोते हुए कैदी ने उत्तर दिया- 'वर्षों पूर्व बनाया गया यह चित्र मेरा ही है। मैं क्या से क्या हो गया।'

कई ऐसी घटनायें देखने में आयी हैं जिनमें भेड़िये जैसे हिंसक पशु किसी छोटे बालक को उठा ले गये, उसे मारा नहीं अपने साथ रख लिया। वह उन्हीं के साथ बड़ा होता गया। मानव की संतान समझ कर उसे पकड़ लिया गया। लाख प्रयत्न करने पर भी चलने-फिरने बोलने-खाने-पीने में पशु ही बना रहा। मानवीय स्वभाव सिखाते-सिखाते चिकित्सक थक गये और उसके प्राण पखेरू उड़ गये, किन्तु वह मनुष्य नही बन पाया।

सामयिक रूप से प्राप्त माता की लोरियाँ व पिता की थपकियाँ एवं अध्यापक भी झिड़कियाँ ही खोलती हैं वे खिड़कियाँ जिनसे निर्बाध आती शिक्षा-संस्कार की बयार बालक के मानस को निरंतर परिष्कृत करती रहती हैं और वे पशुता की दुष्प्रवृत्तियों को छोड़कर मानवता की सद् वृत्तियों से अलकृंत हो उठते हैं। (शांतिधर्मी अक्तूबर 2011)

पुनः प्रस्तुति : राजेन्द्र आर्य जीरकपुर

जय भारतमाता

-गौरीशंकर वैश्य विनम्र 09956087585
117 आदिलनगर, विकासनगर, लखनऊ 226022

जय भारतमाता देवि रूप।
भावना स्वदेशी अपनाकर भारत ने पाया नव स्वरूप।
जन-जन में जागा स्वाभिमान,
निर्मित करता नित कीर्तिमान,
सुन नाम शत्रु भी उठे काँप,
बल-शौर्य नहीं पा रहे भाँप,
जल-थल-नभ की सेना सशक्त
नतमस्तक होते महाभूप।
गोली का गोले से उत्तर,
आतंकी को मारें घुसकर,
अब 'शठे शाठ्यम्' सिद्ध मंत्र,
फल-फूल रहा शुभ लोकतंत्र,
चहुँमुखी प्रगति अद्भुत अपूर्व
जग चकित देखकर छवि अनूप।
पद मिला वैश्विक महाशक्ति,
जन-गण में व्यापी राष्ट्रभक्ति,
सब साथ-साथ, सबका विकास,
छाया समृद्धि का शुचि प्रभास,
घर-घर सुख की पहुँचीं किरणें
पट गए, मिट गए अंधकूप।
भारत ने पाया नव स्वरूप।।

गृहस्थ ही बहिष्ठ=स्वर्ग है

❑सहदेव समर्पित

सभी मत मतान्तरों का मूल स्त्रोत वेद है। उनमें जो सच्चाई है वह वेद की है और जो मिथ्या कल्पनाएँ हैं वे वेद विद्या के अभाव में आई हैं। ऐसी ही कुछ स्थिति बहिश्त या स्वर्ग की है।

स्वर्ग की चाह किसे नहीं है? स्वर्ग की प्राप्ति के लिए मनुष्य न जाने कितने प्रयास करता है। एक समय तो स्वर्ग प्राप्त करने के लिए लोग पोप की हुण्डी लिखवाते थे। पोप धन लेकर श्रद्धालु को एक हुण्डी लिखकर देता था कि हे प्रभु इस व्यक्ति ने मेरे पास एक लाख रुपये जमा करवा दिए हैं। आप इन रुपयों से स्वर्ग में इसके लिए नौकर चाकर और सब सुविधाओं की व्यवस्था कर देना। वह उस हुण्डी को मृत्यु के समय अपनी कब्र में सिरहाने रखने को कहता था ताकि फरिश्ते उसके साथ उसकी हुण्डी को भी ले जा सकें। यहाँ काशी में स्वर्ग प्राप्ति के लिए करौंत चलते थे, जिनमें भोले लोग स्वर्ग प्राप्त करने के लिए अपने आप को आरे से चिरवाते थे। आज भी इसी प्रकार के अनेक प्रयास स्वर्ग प्राप्ति की चाह में लोग करते देखे जा सकते हैं। इससे यह पता चलता है कि स्वर्ग की चाह जितनी अधिक है, स्वर्ग के बारे में ज्ञान का उतना ही अभाव है।

स्वर्ग के बारे में यह कल्पना की गई है कि वह कोई स्थान विशेष है, जहाँ जीवन में कुछ कर्म विशेष (या विश्वास) करने वाले लोग मृत्यु के पश्चात् जाते हैं। विमान में बैठकर या फरिश्तों की गोद में बैठकर। आर्ष परम्परा में स्वर्ग किसी 'स्थान' विशेष को नहीं माना जाता अपितु 'सुख विशेष' को माना जाता है। सुख विशेष का नाम स्वर्ग है और दु:ख विशेष का नाम नरक है। जो पूर्ण योगी आप्त पुरुष मोक्ष को प्राप्त करते हैं, यदि उसके कारण स्थान विशेष की कल्पना कर ली गई हो तो भी यह उचित नहीं है क्योंकि मोक्ष को प्राप्त होकर भी जीवात्मा किसी एक स्थान विशेष पर नहीं रहता, अपितु स्वेच्छापूर्वक विचरता है।

पृथ्वीलोक से दूर किसी स्थान को स्वर्ग या नरक मानने की कल्पना कब की गई, इसके बारे में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। पुराण, कुरान और बाइबल तक की परम्परा तो स्पष्ट दिखाई देती है। संसार के सभी विद्वान् इस बात से सहमत हैं कि संसार की सबसे पहली पुस्तक वेद है। अत: यह स्वाभाविक है कि संसार में सभी प्रकार की विद्या वेद से फैली है। हालांकि समय, स्थान और विद्वानों के प्रमाद के कारणों से उनमें समय समय पर अनेक विकृतियाँ आई हैं कि उनका मूल स्वरूप ही अदृश्य हो गया है। यही अवस्था स्वर्ग की भी है।

वेद के अर्थों को समझने के लिए यह आवश्यक है कि वेद की भाषा और उसके अर्थ करने की शैली को समझा जावे। जिस प्रकार आजकल के पाश्चात्य विद्वानों के भाष्य पढ़कर वेदों के विद्वान् बने लोगों को यह समझ नहीं आ रहा है कि वेदों की भाषा केवल संस्कृत नहीं, अपितु 'वैदिक संस्कृत' है। इसी प्रकार प्राचीन काल में भी अपने मूल स्थान आर्यावर्त को छोड़कर विभिन्न स्थानों पर बसने गए लोगों में वेद विद्या का रूप धीरे-धीरे विकृत होता गया। वह मूल स्थान पर भी अत्यंत विकृत हो गया है। ऋषि दयानन्द के पुरुषार्थ से उस मूल स्वरूप को अब जाना जाने लगा है।

अथर्ववेद के चतुर्थकाण्ड में इस प्रकार के मंत्र मिलते हैं जिनका अर्थ आजकल के मत-मतान्तरों के स्वर्ग का निकाला जा सकता है। इस काण्ड के चौंतीसवें सूक्त का छठा मंत्र द्रष्टव्य है-

घृतह्रदा मधुकूला: सुरोदका: क्षीरेण पूर्णा उदकेन दध्ना।
एतास्त्वा धारा उपयंतु सर्वा: स्वर्गे लोके मधुमत् पिन्वमाना:
उप त्वा तिष्ठन्तु पुष्करिणी समन्ता:।।

इस मंत्र में एक सुन्दर, सर्वांग सुखपूर्ण अवस्था का वर्णन है। घृतह्रदा-घी दूध से भरी हुई नहरें, मधु और शहद से भरी हुई नदियों का वर्णन सामान्य संस्कृत जानने वाला व्यक्ति समझ सकता है। यह शब्द साम्य है। (यद्यपि इसका अर्थ पारमार्थिक है। यक घी की नहरें, ये शहद की नदियाँ साधन हैं, साध्य नहीं हैं।) इसी प्रकार के स्वर्ग

(बहिश्त) का वर्णन बाइबल और कुरान के स्वर्ग में भी आता है। सुरोदका का अर्थ है- ऐश्वर्य वा तत्त्व मथन का सेवन करने वाली; वहाँ इसका अर्थ शराब की नदियाँ हो गया। मधु का अर्थ भी यहाँ ज्ञान है। उक्त प्रकरण में आया है-'स्वर्गे लोके बहु स्त्रैणमेषाम्।' अर्थात् स्वर्ग में मनुष्य अनेक स्त्रियों के संपर्क में आता है। वस्तुतः यह एक सफल और सुखपूर्ण गृहस्थ का वर्णन है। घी, दूध, अन्न आदि का जहाँ प्राचुर्य हो, अश्वादि (वाहन) जैसी भौतिक सुविधाएँ, अनेक संबंधों वाले स्त्री पुरुष हों- दादी, नानी, मौसी, माता, बहन, भावज, बेटी आदि अनेक संबंधों वाली स्त्रियाँ और इसी प्रकार पुरुष। 'एषः यज्ञानां विततो बहिष्ठः।' (अथर्व. 4/34/5) वेद विद्या छूटने से यह 'बहिष्ठ' 'बहिश्त' बन गया और स्वर्ग के वास्तविक अर्थ को भूल गए।

गृहस्थ ही स्वर्ग है

वास्तव में हमारा गृहस्थ ही स्वर्ग है, यदि उसको विधिपूर्वक वहन किया जावे। जिस घर में सबके मन मिले हुए हों, जो हृदय से एक दूसरे की पीड़ा को समझते हों, एक दूसरे के सुख-दुःख को अपना सुख-दुःख समझते हों, एक दूसरे की उन्नति को देखकर प्रसन्न होते हों, द्वेष न करते हों, वह घर स्वर्ग ही है। यही स्थिति समाज और राष्ट्र की है। हम एक दूसरे से इस प्रकार प्रेम करें कि जैसे गाय अपने नवजात बछड़े से करती है। पुत्र पिता के अनुकूल चलने वाला हो, उसके श्रेष्ठ कार्यों को आगे बढ़ाने वाला हो। अपनी माता के भावों को समझकर तदनुकूल आचरण करता हो। पति और पत्नी एक दूसरे के साथ अमृतमयी वाणी बोलें व मधुरता का व्यवहार करें। परिवार, समाज, राष्ट्र व भूमण्डल के सभी सदस्य आपस में इस प्रकार व्यवहार करें तो यहीं स्वर्ग है।

महाभारत में विदुर प्रजागर के अन्तर्गत संसार के सुखों का वर्णन इस प्रकार किया गया है-

अर्थागमो नित्यमरोगिता च
प्रिया च भार्या प्रियवादिनी च।
वश्यश्च पुत्रोऽर्थकरी च विद्या
षड् जीवलोकस्य सुखानि राजन्।।
आरोग्यमानृण्यमविप्रवासः
सद्भिर्मनुष्यैः सह संप्रयोगः।
स्वप्रत्ययावृत्तिरभीतवासः
षड् जीवलोकस्य सुखानि राजन्।।

धन का निरन्तर आगमन, उत्तम स्वास्थ्य, प्रिय मधुरभाषिणी पत्नी, आज्ञाकारी पुत्र तथा लाभकारी विद्या; ये छः संसार के सुख हैं। स्वास्थ्य, ऋण न होना, प्रवास न होना, (घर छोड़ना पड़े) सज्जनों के साथ मेल, स्वतंत्र आजीविका और निर्भय निवास, ये छः संसार के सुख हैं।

आचार्य चाणक्य ने स्वर्ग और नरक का इस प्रकार उल्लेख किया है-

स्वर्ग स्थितानामिह जीवलोके,
चत्वारि चिह्नानि वसन्ति देहे।
दान प्रसंगो मधुरा च वाणी,
देवार्चनं ब्राह्मण तर्पणञ्च।।

अर्थात् स्वर्ग में रहने वाले की चार पहचान हैं- उसमें उदारता या दानशीलता की भावना हो, आपस में मधुर वाणी बोलते हों, ईश्वर के भक्त अर्थात् उसकी आज्ञा का पालन करने वाले हों और विद्वानों का सम्मान करने की भावना हो।

इसी प्रकार नरक स्थितों के लक्षण भी बताए हैं-

अत्यंत कोपं कटुका च वाणी,
दरिद्रता च स्वजनेषु वैरम्।
नीचप्रसंग कुलहीन सेवा,
चिह्नानि देहे नरकस्थितानाम्।।

अर्थात् अत्यधिक क्रोध, कटु वचन बोलना, दरिद्रता, अपने बंधु बांधवों से वैर या ईर्ष्या, अविद्वानों और पाखण्डियों की सेवा, ये नरक में रहने वालों के चिह्न हैं।

इस प्रकार स्वर्ग इस धरती पर ही है और वह गृहस्थ ही है। पुनर्जन्म में भी शुभकर्मों के आधार पर स्वर्ग=उत्तम स्थिति में जन्म प्राप्त होता है, इसलिए काल्पनिक स्वर्गों की चाह छोड़कर इस संसार में ही अपने जीवन को स्वर्गयुक्त बनाने का प्रयत्न करना चाहिए।

ऋषि के सरल उपचार
अप्राप्त की ईच्छा- प्राप्त की रक्षा,
रक्षित की वृद्धि और उससे देशोपकार।
अत्युत्साह, प्रयत्न, तन मन धन से,
ग्रहण करें यह सार।
'सत्यार्थ प्रकाश' ने आंखें खोल दीं,
देकर सद्ज्ञान अपार।।
- सत्यदेव प्रसाद आर्य मरूत
आर्य समाज मन्दिर, नेमदारगंज- 805121

रामायण के स्थानों का भौगोलिक परिचय

❐स्व. पण्डित क्षितीश जी वेदालंकार (पूर्व सम्पादक 'हिन्दुस्तान' एवं 'आर्यजगत्')

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के चरित्र को और रामायण कथा की ऐतिहासिकता को तब तक ठीक ढंग से हृदयंगम नहीं किया जा सकता जब तक वाल्मीकि रामायण में आने वाले स्थानों का भौगोलिक परिचय न हो। रामायण में आए स्थानों का परिचय यहाँ दे रहे हैं। कई स्थानों के परिचय के सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद हो सकता है। पर इस विवरण से इतना अवश्य स्पष्ट हो जाएगा कि उत्तर से दक्षिण तक और पूर्व से पश्चिम तक भारत के भूगोल से और उसकी आत्मा से श्रीराम किस तरह जुड़े हुए हैं।

अगस्त्य आश्रम– नासिक से दक्षिणपूर्व में 24 मील दूर।

आनर्त– उत्तरी गुजरात।

अंग– गंगा और सरयू के संगम पर बिहार स्थित प्रदेश।

अवन्ती– मालवा की प्राचीन राजधानी, उज्जैन।

अयोध्या– सरयू के दक्षिणी तीर पर अवध की पुरानी राजधानी।

भारद्वाज आश्रम– प्रयाग में।

बिन्दुसर– गंगोत्री से दो मील दक्षिण में स्थित ताल जहाँ भगीरथ ने तपस्या की थी।

ब्रह्मावर्त– सरस्वती और दृषद्वती (सिन्धु और ब्रह्मपुत्र) के बीच का प्रदेश।

चन्द्रभागा– चिनाब नदी जो चन्द्रा और भागा नामक दो धाराओं से मिलकर बनती है।

चर्मण्वती– चम्बल नदी।

चम्पा– भागलपुर के निकट अंगदेश की राजधानी।

चित्रकूट– बुन्देलखण्ड में कामतानाथ गिरि, जो मन्दाकिनी या पयस्विनी के तट पर स्थित है।

दक्षिणापथ– दक्षिण भारत। नर्मदा के दक्षिण का प्रदेश।

दण्डकारण्य– चित्रकूट से गोदावरी तक, पार्जिटर के अनुसार बुन्देलखण्ड से कृष्णा नदी तक फैला जंगल प्रदेश। अन्य नाम– जनस्थान। बस्तर रियासत जो अब मध्यप्रदेश का वनवासी इलाका है।

धर्मारण्य– मगध (दक्षिणी बिहार) में।

गान्धार– काबुल नदी का तटवर्ती प्रदेश, जिसमें रावलपिंडी और पेशावर के जिले शामिल थे। इसी प्रदेश की होने के कारण धृतराष्ट्र की पत्नी गांधारी कहलाई।

गौतम आश्रम– जनकपुर (तिरहुत) से 24 मील पर अहियारी गाँव के पास अहल्या स्थान।

गिरिव्रज –राजगृह, जो महाभारत के समय जरासंध की राजधानी थी। बौद्ध साहित्य में प्रसिद्ध।

गोकर्ण– गंगोत्री से 14 मील पर गोमुख।

हस्तिनापुर– कौरवों की राजधानी, मेरठ से 2 मील पर।

हिरण्यवाह– सोन नदी।

उक्षुमती– कालिन्दी नदी, जो कुमायूँ, रुहेलखण्ड और कन्नौज में होकर बहती है।

इन्द्रप्रस्थ– दिल्ली का पुराना नाम।

इरावती– रावी नदी।

कालिन्दी – यमुना।

कलिंग– उड़ीसा के दक्षिण और द्रविड़ देश के उत्तर में स्थित।

कामरूप– असम।

कम्बोज–हिन्दुकुश और कश्मीर के उत्तर में, पामीर का प्रदेश।

काम्पिल्य– कम्पिल, फर्रुखाबाद जिले में फतेहगढ़ से 28 मील उत्तर पूर्व में।

कांची– कांजीवरम, द्रविड़ देश की राजधानी।

कान्यकुब्ज– कन्नौज, गाधिपुत्र विश्वामित्र का जन्म स्थान।

कर्णाट– कर्नाटक।

कारुपथ– सिन्ध के पश्चिमी तट पर अटक के पास काला–बाग नामक स्थान। अब पाकिस्तान में।

कौशाम्बी– इलाहाबाद से 32 मील दूर, यमुना के दक्षिणी

तट पर कोसम ग्राम।
कौशिकी– कोसी नदी।
केकय– चिनाब और झेलम का मध्यवर्ती प्रदेश, कैकेयी का जन्मस्थान, जम्मू कश्मीर में।
केरल– मलाबार तट।
किरात– भारत का पूर्व भाग, नेपाल।
कोसल (उत्तर)– अवध।
कोसल (दक्षिण)– छत्तीसगढ़।
कृष्णवेणी– कृष्णा और वेणी नदी की संयुक्त धारा।
कुरु–जांगल– पांचाल के पश्चिमोत्तर में सम्भवत: कुरुक्षेत्र और थानेसर वाला हरियाणा–क्षेत्र।
लंका– सिंहल द्वीप, कईयों के मत में मध्यप्रदेश में अमर–कंटक, मेडागास्कर ऑस्ट्रेलिया और अरबसागर में स्थित मालदीव टापू।
लवपुर– लाहौर, जिसे राम के पुत्र लव ने बसाया, अब पाकिस्तान में।
लोहित्य– ब्रह्मपुत्र नदी।
मधुमन्त– दण्डकारण्य।
मधुपुरी– मथुरा, जिसे शत्रुघ्न ने बसाया।
मध्य देश– हिमालय और विन्ध्य का मध्यवर्ती प्रदेश।
मद्र– रावी और चिनाब का मध्यवर्ती प्रदेश, अब पाकिस्तान में।
मगध–दक्षिण बिहार : जिसकी पश्चिमी सीमा सोन नदी है।
मागधी– सोन नदी।
महेन्द्र पर्वत– पूर्वी घाट।
माहिष्मती– महेश्वर, नर्मदा के दक्षिणी तट पर, इन्दौर से 40 मील दक्षिण में स्थित।
महोदधि– बंगाल की खाड़ी।
महोदय– कन्नौज।
मलयगिरि–सरयू की सहायक नदी चूका, जहाँ कण्व ऋषि का आश्रम था।
मल्लदेश– मुलतान, जिसे लक्ष्मण के पुत्र चन्द्रकेतु ने बसाया था। कुछ लोग मुलतान को प्रह्लाद द्वारा बसाया मानते हैं; अब पाकिस्तान में।
माल्यवान्– तुंगभद्रा के तट पर ऐनेगुण्डी पर्वत।
मन्दाकिनी– ऋष्यवान् पर्वत से निकल कर चित्रकूट से होती हुई यमुना में मिलती है; अन्य नाम पयस्विनी।
मत्स्य– अलवर, भरतपुर।
मिथिला– जनकपुर, तिरहुत।
नैमिषारण्य– नीमसर, गोमती के तट सीतापुर से 20 मील और लखनऊ से 45 मील उत्तर पश्चिम में।
नलिनी– पद्मा या ब्रह्मपुत्र।
नन्दि–ग्राम– अवध में फैजाबाद से 9 मील दक्षिण में नन्दगाँव।
चम्पा– हम्पी (कर्नाटक) के उत्तर में एक सरोवर। इसी नाम की नदी भी है।
पांचाल– रुहेलखण्ड, गंगा से हिमालय की तलहटी तक फैला प्रदेश : द्रोपदी इसी प्रदेश की होने के कारण पांचाली कहलाई।
पंचवटी– नासिक।
पाण्ड्य– तिन्नवेल्ली और मदुरै जिला, तमिलनाडु।
पर्णाशा– बनास नदी।
पावनी– घग्घर नदी।
प्राग्ज्योतिषपुर– गोहाटी, असम की राजधानी।
प्रलम्ब– बिजनौर से 8 मील उत्तर में मण्डावर।
प्रसवण– तुंगभद्रा की तटवर्ती पर्वत शृंखला।
प्रयाग– इलाहाबाद।
पुष्कलावती– गांधार की राजधानी, पेशावर से 18 मील दूर, आधुनिक चार–सद्दा नामक स्थान, जहाँ सीमान्त गाँधी खान अब्दुल गफ्फार खां का जन्म हुआ।
राजगृह– दक्षिणी बिहार में मगध की पुरानी राजधानी।
रामगिरि– रामटेक, नागपुर से 24 मील उत्तर में।
रसातल– पश्चिमी तातार प्रदेश, जिसमें तुर्कस्तान और कैस्पियन सी।
(कश्यपसागर) का उत्तरी भाग शामिल था।
रत्नाकर– पश्चिमोदधि या अरब सागर।
ऋष्यमूक– तुंगभद्रा के तट पर ऐनेगुण्डी से 8 मील दूर स्थित पर्वत जहाँ राम की हनुमान् और सुग्रीव से भेंट हुई थी। यही स्थान बाद में (16वीं 17वीं सदी में) विजयनगर हिन्दू राज्य का केन्द्र बना, जिसके भव्य अवशेष आज भी 12 मील तक फैले पड़े हैं।
ऋष्यशृंग आश्रम– भागलपुर से पश्चिम में 28 मील दूर ऋषिकुण्ड।
सदानीरा– राप्ती नदी जो सरयू की सहायक नदी है।
सह्याद्रि– पश्चिमी घाट।
शाल्मली– चिनाब की सहायक नदी।
सांकाश्य– सीता के पितृव्य राजा कुशध्वज की राजधानी,

इक्षुमती नदी के तट पर संकिशा ग्राम।

सरस्वती– घग्घर नदी जो कभी हिसार के पास बहती थी।

सरयू– घाघरा नदी जो हिमालय के आन्तरिक प्रदेश में धौली गंगा कहलाती है।

शतद्रु– सतलुज नदी, जो मानसरोवर से निकलती है और जिस पर गोविन्दसागर तथा भाखड़ा बांध बना है।

सौराष्ट्र– काठियावाड़।

सौवीर– उत्तर सिन्ध, कच्छ और खम्भात की खाड़ी से लगता प्रदेश।

सिद्धाश्रम– शाहाबाद जिले में बक्सर के पश्चिम की ओर।

सिन्धु– सिन्धु नदी और उसका तटवर्ती उत्तरी प्रदेश; अब सिन्ध प्रदेश पाकिस्तान में है।

श्रावस्ती– राप्ती के तट पर सहेत–महेत गाँव; बौद्ध साहित्य में बहुचर्चित।

शृंगवेरपुर– प्रयाग से 18 मील दूर गंगा के तट पर स्थित सिगरौल।

सुतीक्ष्ण आश्रम– मन्दाकिनी के उद्‌गम के आस–पास कोई स्थान।

सुमागधी– सोन नदी।

शूर– मथुरा का निकटवर्ती प्रदेश जो शौरसेनी प्रदेश भी कहलाया।

सुवर्णद्वीप– जावा।

स्यन्दिका– गंगा और गोमती के बीच बहती कोसल देश की दक्षिण सीमा बनाने वाली सई नदी।

तक्षशिला– भरत के पुत्र तक्ष द्वारा बसाई गई नगरी; अब पाकिस्तान में रावलपिण्डी के पास; यहाँ का विश्वविद्यालय प्रसिद्ध था।

तमसा – टोंस नदी जो आजमगढ़ से होकर बलिया के पास गंगा में मिलती है।

ताम्रपर्णा – तिन्नवेल्ली में ताम्रवारी नदी।

त्रिकूट– सिंहलद्वीप (सीलोन) का एक पर्वत।

उशीनर – दक्षिणी अफगानिस्तान।

उत्कल– उड़ीसा।

उत्तरकुरु– तिब्बत और पूर्वी तुर्किस्तान।

उत्तरगंगा– रामगंगा नदी।

बाह्लीक– बलख, पश्चिमोत्तर पाकिस्तान।

वाल्मीकि आश्रम– तमसा (टोंस) नदी के तट पर प्रयाग से 20 मील दूर। कुछ लोग कानपुर से 14 मील दूर बिठूर को वह स्थान मानते हैं; सन् 1857 में नानाजी पेशवा का यह क्रांति–केन्द्र रहा।

वनायु– प्राचीन अरब देश।

बंग– बंगाल।

वाराणसी– काशी राज्य की राजधानी।

वत्स– इलाहाबाद के पश्चिम का प्रदेश जिसकी राजधानी कौशाम्बी थी।

वेदश्रुति– तमसा और गोमती के मध्य बहने वाली अवध में स्थित बेइता नदी।

वेत्रवती– बेतवा नदी।

विदर्भ– बरार, जो इस समय महाराष्ट्र का भाग है। महाराज नल इसी प्रदेश के राजा थे।

विदेह– तिरहुत जनक का राज्य।

विदिशा– भेलसा; शत्रुघ्न के पुत्र ने इसे बसाया था। बौद्ध साहित्य में बहुचर्चित। भोपाल से लगभग 30 मील दूर।

विपाशा– व्यास नदी जो रटांग दर्रे से निकल कर कुल्लू होकर बहती है। हिमाचल प्रदेश में इसी पर अब थीन बाँध बन रहा है।

विशाला– हाजीपुर से 18 मील उत्तर में गण्डक नदी के तट पर मुजफ्फरपुर के पास। बाद में बौद्ध साहित्य में यही वैशाली गणराज्य के नाम से प्रसिद्ध हआ। जिसमें लिच्छवि गण का शासन था।

विश्वामित्र आश्रम– आधुनिक बक्सर के पास कोसी नदी के तट पर कोई स्थान। (20 अक्तूबर, 1985 ई.)

प्रसिद्ध लेखक डॉ. विवेक आर्य का वक्तव्य

कीर्तिशेष पण्डित क्षितीश जी वेदालंकार आर्यजगत् के सिद्धहस्त लेखक, वक्ता और सम्पादक थे। 'हिन्दुस्तान' और 'आर्यजगत्' के अपने सम्पादन कार्यकाल में पण्डित जी ने निर्भीक, गवेषणापूर्ण, राष्ट्रवादी पत्रकारिता के नवीन कीर्तिमान स्थापित किये। उनके जीवनकाल में उनकी अनेक पुस्तकें प्रकाशित हुईं, जो राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित हुईं। अब उनके सम्पूर्ण साहित्य का पुनर्प्रकाशन हुआ है। मैं आर्यजगत् के गम्भीर पाठकों, गवेषकों, लेखकों से निवेदन करता हूँ कि वे इस श्रावणी पर क्षितीश जी के सम्पूर्ण साहित्य को मंगाकर अवश्य पढें। यह साहित्य आज की पीढ़ी को एक नई दिशा देगा, ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास है। (विवरण इस अंक के अन्तिम पृष्ठ पर देखें)

ऋग्वेद का तृतीय सूक्त

अश्विनी, विश्वेदेवा और सरस्वती की धाराएँ

❑आचार्य रामफल सिंह आर्य, (9418277714)
2080, प्रथम तल, G ब्लॉक, सैक्टर 57, गुरुग्राम-122003

लेखमाला में वेदमाता की कुक्षि से आज हम जो पयःपान करने जा रहे हैं, उसकी धारायें अश्विनी, विश्वेदेवा और सरस्वती की छाया में प्रवाहित हो रही ह-सं.

अश्विनी का युगल हमारे जीवन को महकाये।
सब देवों का संग हमारा मार्ग दर्शक बन जाये।।
हे सरस्वती वेदों की वाणी तेरा हम नित गान करें,
तेरे गीतों की झंकार से झंकृत सारा जग हो जाये।।

उपर्युक्त झंकार में परिलक्षित हो रहे तीन संकेत आपने अनुभव कर ही लिये होंगे। ये संकेत ही आज के हमारे स्वाध्याय के केन्द्र बिन्दु हैं। वेदमाता की कुक्षि से आज हम जो पयःपान करने जा रहे हैं, उसकी धारायें अश्विनी, विश्वेदेवा और सरस्वती की छाया में प्रवाहित हो रही हैं अर्थात् बारह मन्त्रों की इस श्ृंखला में ये तीनों ही देवता अर्थात् विषय निबद्ध हैं। इन्हीं की सुन्दर व्याख्यायें इन पावन ऋचाओं में की जा रही हैं। वेद मन्त्रों का सौन्दर्य यही है कि ज्ञान-विज्ञान हो, राज्य व्यवस्था हो, युद्धों का वर्णन हो या अन्य कोई भी विषय हो- सब छन्दोबद्ध हैं, गायन योग्य हैं। संसार के अन्य किसी ग्रन्थ या किसी भी पुस्तक में यह विशेषता नहीं है। वेदों से ही सीख कर हमारे ऋषि-मुनियों ने भी अपने ग्रन्थ छन्दोबद्ध रीति से रचे। आज जिस सूक्त को हम आपके सामने रखने जा रहे हैं वह भी तीन छन्दों में आबद्ध है- गायत्री, निचृद् गायत्री और पिपिलिका मध्य निचृद् गायत्री। इन मन्त्रों के ऋषि मधुच्छन्दा हैं।

इससे पूर्व कि हम कुछ मन्त्रों को आपके सामने रखें, मधुच्छन्दा शब्द पर ही विचार कर लेते हैं। मधु- प्राणो वै मधुः (शतपथ 6/4/3/2) मधु धमतेर्विपरितस्य (निघण्टु 10/31) छन्द धमति अर्चतिकर्मा (नि. 3/14) गतिकर्मा (निघ. 2/14) अर्थात् वह प्राण जो प्रकाशयुक्त होकर गति करता है। श्री पण्डित चमूपति जी ने मधुच्छन्दा का अर्थ मीठे संकल्प वाला लिखा है जो उक्त वर्णन का ही भावनामय प्यारा परिवर्तित रूप है।

तृतीय सूक्त का पहला मन्त्र है-

अश्विना यज्वरीरिषो द्रवत्पाणी शुभस्पाति। पुरुभुजा चनस्यतम्।।

पदार्थः- हे विद्या के चाहने वाले मनुष्यो! तुम लोग द्रवत्पाणी= शीघ्र वेग का निमित्त, पदार्थ विद्या के व्यवहार सिद्ध करने में उत्तम हेतु शुभस्पती= शुभ गुणों के प्रकाश को पालने और पुरुभुजा= अनेक खाने पीने के पदार्थों के देने में उत्तम हेतु अश्विना= अर्थात् जल और अग्नि तथा यज्वरी= शिल्प विद्या का संबन्ध कराने वाली, इषः= अपनी चाही हुई अन्नादि पदार्थों को देने वाली की क्रियाओं का चनस्यतम्= अन्न के समान अति प्रीति से सेवन किया करो।

भाव स्पष्ट है कि पदार्थ विद्या को व्यवहार में लाने के लिये जल और अग्नि के युगल से क्रिया का विकास करके उससे अनेक प्रकार के उत्तम भोगों को सिद्ध करना चाहिए। यह सिद्धि ऐसी हो कि जिससे मनुष्य उत्तम प्रकार का खान-पान भी कर सके और अपने लिये कल्याण का प्रबन्ध कर सके। इस मन्त्र का देवता अश्विनी है। अश्विनी का अर्थ है जोड़ा=युगल। आप विचार करके देख लीजिये कि शिल्प विद्या की सिद्धि क्या जल और अग्नि के बिना हो सकती है? इनके बिना तो किसी भी यन्त्र की कल्पना भी नहीं की जा सकती। पानी को रखने के लिये घड़ा हम प्रयोग करते हैं या किसी धातु का कोई बर्तन प्रयोग करते हैं, उसका निर्माण कैसे होता है? मिट्टी की अच्छी प्रकार से जांच करके उसका शुद्धिकरण किया जाता है। फिर जल से उसे गीला करके, गूंथ कर बर्तन तैयार किया और अग्नि में पकाया, तब जाकर घड़ा आपके हाथ आया। यह तो बहुत स्थूल सा उदाहरण है। रोटी बनानी है, दाल, चावल, खीर-पुडी, मिष्ठान्न बनाने हैं, फल तैयार करने हैं, औषधि बनानी है, यन्त्र

बनाने हैं- कुछ भी करना है, युगल आवश्यक है। युगल अर्थात् जोड़े के बिना न तो संसार चलता है और न ही व्यवहार चलता है। इस जोड़े की व्याप्ति से ही मिठास आती है, प्रेम आता है, दया और सहृदयता, संवेदना जागृत होती है। यह है वेद के शब्द 'अश्विनी' की व्याप्ति। इसी में सम्पूर्ण संसार समा जाता है। वेद से बाहर संसार भला कैसे हो सकता है? इसीलिये हम बार-बार लिखते हैं कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है। मनुष्य के ज्ञान में या विधि में अल्पज्ञता रहती है, सीमा रहती है क्योंकि वह स्वयं भी अल्पज्ञ है। ईश्वर के ज्ञान में यह न्यूनता नहीं होती।

जब हम वेद को ईश्वरीय ज्ञान कहते हैं तो उसका अर्थ यह भी होता है कि जो कुछ इस संसार में प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष है वह सब ईश्वर के ज्ञान में है, उसी में स्थित है। मनुष्य की स्थिति अलग है। मनुष्य तो यह भी नहीं जानता कि उसके शरीर में क्या है? उसकी आँखें कैसे और किन तत्त्वों से बनी हैं, सांस कैसे चलती है, शरीर के भीतर कितनी क्रियाएँ एक साथ हो रही हैं? क्या आपको अपना रक्त बनते हुए अनुभव हो रहा है? रक्त से मांस, मज्जा, अस्थि आदि धातु बनते हुये जान पड़ते हैं? सोते समय अपने शरीर का भान रहता है? क्या आप जाग्रत और स्वप्न की स्थिति की व्याख्या कर सकते हैं? क्या सुषुप्ति का वर्णन कर सकते हैं? जी नहीं, कभी नहीं कर सकते। परन्तु ईश्वर के साथ यह स्थिति नहीं है, उसे सृष्टि अथवा समस्त ब्रह्माण्डों में होने वाली प्रत्येक क्रिया का पूर्णत: और स्पष्ट ज्ञान है। और उसका यह ज्ञान ही वेद है।

महर्षि दयानन्द जी महाराज लिखते हैं-

हम लोग अच्छी-अच्छी सवारियों को सिद्ध करने के लिए अश्विना= पूर्वोक्त जल और अग्नि को कि जिनके गुणों से अनेक सवारियों की सिद्धि होती है, जो कि शिल्प विद्या में अच्छे-अच्छे गुणों के प्रकाशक और सूर्य के प्रकाश से अन्तरिक्ष में विमान आदि सवारियों से मनुष्य पहुँचने वाले होते हैं, ता:= उन दोनों को शिल्प विद्या की सिद्धि के लिये ग्रहण करते हैं। मनुष्य लोग जहाँ साधे हुए अग्नि और जल के सम्बन्ध युक्त रथों से जाते हैं वहाँ सोमविद्या वाले विद्वानों का प्रकाश निकट ही है।

वेद विद्याओं का यह महा भण्डार ही है जिनका कोई अन्त नहीं है। उपरोक्त में आपने अनुभव कर ही लिया है सूर्य के प्रकाश Solur Energy से चलने वाले यानों, विमानों का तो वर्णन है ही, इसके साथ -साथ सोमविद्या का भी संकेत कर दिया है। यह सोमविद्या क्या है? यह विद्वानों के अनुसंधान का विषय है। इतना तो अवश्य है कि अग्नि जल और सूर्य की ऊर्जा के विज्ञान से आगे की बात है। अब तनिक आगे के मन्त्रों पर भी दृष्टिपात कर लेते हैं।

अश्विना पुरदंससा नरा शवीरया धिया।
धिष्ण्या वनतं शिर:।।

भावार्थ : यहाँ भी अग्नि और जल के गुणों को प्रत्यक्ष दिखाने के लिए मध्यम पुरुष का प्रयोग है। इससे सब कारीगरों को चाहिए कि तीव्र वेग देने की कारीगरी और अपने पुरुषार्थ से शिल्पविद्या की सिद्धि के लिए उक्त अश्वियों की अच्छी प्रकार से योजना करें। जो शिल्पविद्या को सिद्ध करने की इच्छा करते हैं, उन पुरुषों को चाहिए कि विद्या और हस्तक्रिया के उक्त अश्वियों को प्रसिद्ध करके उनसे उपयोग लेवें।

वेदों में शिल्प, शिल्पक्रिया और शिल्पियों तथा कारीगरों के लिए अनेक स्थानों पर बड़े ही प्रशंसासूचक और सम्मान सूचक शब्दों का प्रयोग किया गया है। महर्षि दयानन्द जी महाराज ने सत्यार्थ प्रकाश में भी उन्हें बहुत आदर दिया। कितने दु:ख का विषय है कि वेदों का तात्पर्य और शिल्पकला का महत्व न जानकर कारीगरों के प्रति बहुत ही निन्दात्मक व्यवहार तथाकथित पोंगा पंडितों द्वारा मध्यकाल में किया गया, जिसका परिणाम यह हुआ कि भारत उन्नति के शिखर से पतन के गर्त में चला गया।

7-9 तीन मंत्रों का देवता 'विश्वेदेवा:' है, अर्थात् श्रेष्ठ विद्वान क्या-क्या कार्य करते हैं, इसका उपदेश है। फिर तीन मंत्रों का देवता सरस्वती लिखा है। मंत्र के देवताओं के क्रम में भी एक रहस्य छुपा है, जिसे हम आपके सामने रख रहे हैं। पहले मंत्रों का देवता अश्विनी था अर्थात् पदार्थों के मिथुन से संसार में क्या क्या होता है, यह बताया। फिर 'विश्वेदेवा:' आया कि उस युगल विज्ञान को जानकर विद्वान् लोग क्या करें और अन्त के तीन मंत्रों का देवता सरस्वती जिसका अर्थ महर्षि ने वाणी किया है- वाणी अर्थात् उपदेश। क्या आपको यह 'सर्वा: विद्या: पठित्वा तासां सर्वत्र प्रचारणम्' नहीं लगता? या वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है, यह परिलक्षित नहीं होता? विचार कीजिये और ऋषि के ऋषित्व पर मुग्ध हो जाइये। हे प्यारे ऋषि! तुम पर

सौ–सौ बार बलिहारी।

अब इस बात का मूर्तरूप देखिये–

ओमासश्चर्षणीधृतो विश्वेदेवास आ गत।
दाश्वांसो दाशुषः सुतम्।।(7)

भावार्थ : ईश्वर विद्वानों को आज्ञा देता है कि तुम लोग एक जगह पाठशाला में अथवा इधर–उधर देश–देशान्तरों में भ्रमते हुए अज्ञानी पुरुषों को विद्या रूपी ज्ञान देके विद्वान् किया करो कि जिससे सब मनुष्य लोग विद्या, धर्म और श्रेष्ठ शिक्षायुक्त होके अच्छे–अच्छे कर्मों से युक्त होकर सदा सुखी रहें। 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का मूर्त रूप और भला क्या होगा? इस समय हमें मेहता जैमिनी और पं. रूचिराम जी का स्मरण अनायास ही हो रहा है। काश, आर्यसमाज में कोई दूसरा रूचिराम भी होता तो आज पूरा अरब आर्यों का होता। अगले मंत्र को भी देखिये–

विश्वे देवासो अप्तुरः ईश्वर ने जो आज्ञा दी है इसको सब विद्वान् निश्चय करके जान लेवें कि विद्या आदि शुभ गुणों के प्रकाश करने में किसी को भी कभी थोड़ा भी विलम्ब वा आलस्य करना योग्य नहीं है। जैसे दिन की निकासी में सूर्य सब मूर्तिमान् पदार्थों का प्रकाश करता है, वैसे ही विद्वान् लोगों को भी सब विद्या के विषयों का प्रकाश सदा करना चाहिए। क्या यह दीक्षान्त भाषण का 'स्वाध्याय प्रवचनाभ्याम् मा प्रमदितव्यं' नहीं है?

नवें मंत्र का भी लगभग यही भाव है। ऋषिवर वेदमय थे। उनके जीवन में एक पल को भी व्यर्थ गंवाते हुए उनको किसी ने नहीं देखा। उनका आचरण ही सर्वश्रेष्ठ उपदेश था। क्या हमें अपने आचार्य के चरणों का अनुगामी नहीं होना चाहिए?

अगला मंत्र भी बड़ा प्यारा है–

पावकाः नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती।
यज्ञं वष्टु धियावसु।(10)

इस तथा अगले दो मंत्रों का देवता सरस्वती है। सरस्वती वेदों में अनेक स्थानों पर आया है, जिसे देखकर लोगों को सरस्वती नदी या चार हाथ वाली काल्पनिक देवी का भ्रम हो गया। ये दोनों ही कल्पनायें सत्य से नितान्त परे हैं। महर्षि दयानन्द जी ने सरस्वती शब्द का अर्थ वाणी किया है। मंत्र कह रहा है–

पावकाः सरस्वती अर्थात् पवित्र करने वाले व्यवहारों को चिताने वाली, जिसमें प्रशंसा योग्य ज्ञान आदि गुण हैं, ऐसी उत्तम सब विद्याओं को देने वाली वाणी। स्पष्ट है कि पवित्र करने वाली है और सब व्यवहारों को जनाने वाली है, वह नइदी तो जड़ होने से कर नहीं सकती और चार हाथ वाली भी काल्पनिक एवं जड़ है, अतः वह भी पवित्र करने वाली नहीं हो सकती। इसका अर्थ जो ऋषि ने किया, वही श्रेष्ठ एवं ग्राह्य है। निघंटु 2/23/57 में भी इस शब्द का अर्थ वाणी ही किया गया है। ऋषि द्वारा किया गया इस मंत्र का अर्थ देखिये–

वाजेभिः जो सब विद्या की प्राप्ति के निमित्त अन्न आदि पदार्थ हैं और उसके साथ **वाजिनीवती** ऐसी विद्या से सिद्ध की हुई क्रियाओं से युक्त **धियावसु** शुद्ध कर्म के साथ वास देने और **पावका** पवित्र करने वाले व्यवहारों को चिताने वाली **सरस्वती** जिसमें प्रशंसा योग्य ज्ञान आदि गुण हैं, ऐसी उत्तम सब क्रियाओं को देने वाली वाणी है। वह हम लोगों के **यज्ञम्** शिल्प विद्या के महिमा और कार्यरूप यज्ञ को **वष्टु** प्रकाश करने वाली हो।

यहाँ पर यज्ञ का भी व्यापक अर्थ आपको दिखाई दिया होगा अर्थात् शिल्प विद्या की महिमा और उसका कार्य रूप अर्थात् उस पर आधारित कार्य (Practical)। उसके आधार पर बनाये गये यन्त्र निर्माण आदि। यह यज्ञ का व्यावहारिक रूप है। विद्वान् स्वयम् जाने, शिल्पियों और कारीगरों को जनाये और यह क्रम निरंतर चलता रहे। निरन्तरता यज्ञ का सार्थक रूप है। ज्ञान यदि क्रिया में ही न आये तो उसका लाभ क्या हुआ?

अगला मन्त्र है–

चोदयित्री सुनृतानां चेतन्ती सुमतीनाम।
यज्ञं धधे सरस्वती॥ 11)

भावार्थ : जो आप्त अर्थात् पूर्ण विद्या युक्त और छल आदि दोष रहित विद्वान् मनुष्यों के सत्य ज्ञान होने के लिए योग्य होती है। अविद्वानों की नहीं। इस सूक्त का अन्तिम मन्त्र है–

महो अर्णः सरस्वती प्रचेतयति केतुना।
धियो विश्वा वि राजति॥(12)

भावार्थ : जैसे वायु से तरंगित और सूर्य से प्रकाशित समुद्र अपने रत्न और तरंगों से युक्त होने के कारण बहुत उत्तम व्यवहार और रत्न आदि की प्राप्ति में बड़ा भारी माना जाता है, वैसे ही जो आकाश और वेद का अनेक विद्या आदि गुण वाला शब्द रूपी महासागर, उसके प्रकाश कराने वाली वेद वाणी और विद्वानों का उपदेश है, वही साधारण मनुष्यों की

यथार्थ बुद्धि को बढ़ाने वाला होता है।

तनिक विचार कीजिये कि इतनी मार्मिक बात महर्षि जी लिख रहे हैं। कौन सी वाणी मनुष्यों का कल्याण करने वाली होती है? वेद ज्ञान से सिक्त सत्यनिष्ठ वाणी ऐसी ही होती है।

वेद का ज्ञान ऐसा है कि कितना भी इस पर विचार करते चले जायेंगे उतना ही इसका विस्तार होता चला जायेगा। एक कड़ी दूसरी कड़ी से जुड़ती चली जायेगी और आप देखेंगे कि एक शब्द में ही पूरा विश्व समा जायेगा। अपनी इसी बात को महर्षि जी ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है- 'सत्योपदेश के बिना मनुष्यों की उन्नति का कोई दूसरा कारण नहीं हो सकता।'

क्योंकि इन मन्त्रों का देवता सरस्वती है, अतः वाणी से सम्बन्धित व्यवहार का उपदेश किया गया।

अब कुछ विचार पीछे छूट गये मन्त्रों पर भी कर लेते हैं।

इन्द्रा याहि धियेषितो विप्रजूतः सुतावतः।
उप ब्रह्माणि वाघतः।(5)

पदार्थ :-इन्द्र! =हे परमेश्वर! धिया= निरंतर ज्ञानयुक्त बुद्धि वा उत्तम कर्म से ईशितः = प्राप्त होने और विप्रजूतः = विद्वानों के जानने योग्य आप ब्रह्माणि= ब्राह्मण जिन्होंने वेदों का अर्थ और सुतावतः = विद्या के अर्थ जाने हों तथा वाघतः =जो यज्ञविद्या के अनुष्ठान से सुख उत्पन्न करने वाले हों, उन सबों को कृपा से प्राप्त हूजिये।

ईश्वर किनको प्राप्त होता है या हो सकता है- इस बात को बड़े ही स्पष्ट रूप में यहाँ पर बताया गया। जिनकी ज्ञान युक्त बुद्धि है और उत्तम कर्म हैं, वही ब्राह्मण कहलाने के भी योग्य हैं कि जिन्होंने वेदों के अर्थ को जाना और अनेक विद्याओं का प्रकाश मनुष्यों के कल्याणार्थ किया है, जो यज्ञ विद्या के अनुष्ठान से सदा सभी को सुख पहुँचाते हैं।

आज ईश्वर प्राप्ति करवाने के लिए भी दुकानें खुली हुई हैं। अर्थ का संचय करने वालों ने ईश्वर को भी खरीदने और बेचने की वस्तु बना डाला। कोई लोगों को समोसा और लाल, हरी चटनी खिलाता है, कोई अवसर विशेष और स्थान विशेष पर जल में डुबकी लगाकर, कोई सर्वमनोकामना पूर्ण करने वाले ढोंगी, तान्त्रिकों शाहबाबाओं का चक्कर लगाकर न जाने किन-किन उपायों से कार्य सिद्ध करने में अपने धन और समय का व्यय कर रहे हैं। जबकि वेद ज्ञान से युक्त सत्यनिष्ठ वाणी, जिसका हम ऊपर उल्लेख कर चुके हैं, सीधा और सरल मार्ग यही है।

अगले मन्त्र में प्राण की महिमा का वर्णन करते हुए कहा गया है कि जो शरीरस्थ प्राण है, वह सब क्रिया का निमित्त होकर खाना-पीना, पकाना, ग्रहण करना, त्यागना आदि कर्म क्रियाओं से कर्म का कराने वाला तथा शरीर में रुधिर आदि धातुओं के विभागों को जगह-जगह पहुँचाने वाला है, वही शरीर आदि की पुष्टि तथा नाश का हेतु है।

सातवें मन्त्र-ओमासश्चर्षणी धृतो-- का भावार्थ है- ईश्वर विद्वानों को आज्ञा देता है कि तुम लोग एक जगह पाठशाला में अथवा इधर-उधर देश देशान्तरों में भ्रमते हुए अज्ञानी पुरुषों को विद्या रूपी ज्ञान देके विद्वान किया करो कि जिससे सब मनुष्य लोग विद्या, धर्म और श्रेष्ठ शिक्षायुक्त होके अच्छे-अच्छे कर्मों से युक्त होकर सदा सुखी रहें। नवें मंत्र का भी लगभग यही भाव है। आठवां मंत्र कह रहा है कि ईश्वर ने जो आज्ञा दी है इसको सब विद्वान् निश्चय करके जान लेवें कि विद्या आदि शुभ गुणों के प्रकाश करने में किसी को कभी भी विलम्ब वा आलस्य करना योग्य नहीं है।

'ईश्वर विद्वानों को आज्ञा देता है कि तुम लोग एक जगह पाठशाला में अथवा इधर-उधर देश देशान्तरों में भ्रमते हुए अज्ञानी पुरुषों को विद्या रूपी ज्ञान देके विद्वान किया करो कि जिससे सब मनुष्य लोग विद्या, धर्म और श्रेष्ठ शिक्षायुक्त होके अच्छे-अच्छे कर्मों से युक्त होकर सदा सुखी रहें।'

प्रिय पाठकगण! यह है वेद का आदेश और उपदेश जो संसार के प्रत्येक मनुष्य के लिये है। इन श्रेष्ठ बातों को छोड़कर अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिये नाना प्रकार के उपायों द्वारा एक मानव दूसरे मानव का शोषण करता है, घृणा करता है, द्वेष करता है और परस्पर शत्रुता को बढ़ाकर अनेक कष्टों और उलझनों को उत्पन्न कर लेता है। आप देखेंगे कि वेद में कहीं भी, कोई भी ऐसी बात नहीं लिखी जो किसी देश विशेष या काल विशेष के लिये हो, किसी की हानि करवाने वाली हो, अपितु स्थान-स्थान पर यह तो देखने में आता है कि तुम लोग प्रीति से रहो, पुरुषार्थ करो, विद्या की निरन्तर वृद्धि करते रहो। उसका प्रचार प्रसार करने में कभी आलस्य मत करो अपितु पूर्ण शक्ति और उत्साह से उस कार्य को करो जिससे सर्वत्र सुख शान्ति स्थापित हो सके। (आगामी अंकों में जारी)

एक दार्शनिक चर्चा
पुनर्जन्म क्यों और कैसे ?

❐महीपाल आर्य पूनिया, पूर्व प्रधान हसला हिसार
ग्रा. पो. मतलोडा, हिसार (8708308480)

लेखक

एशिया के एक बड़े भूभाग में पुनर्जन्म के सिद्धांत से सभी परिचित हैं तथा इसे स्वीकार करते हैं। इस्ताम्बूल (तुर्की का सबसे बड़ा शहर) में सन 545 ईस्वी में आयोजित चर्च पुरोहितों की एक परिषद् में निन्दित एवं परित्यक्त हो जाने के पहले पश्चिमी देशों में इसे सभी मानते थे। अपनी युक्तिसंगतता के कारण अब यह सिद्धांत पुन: व्यापक रूप से मान्य होने लगा है। पूर्वी देशों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण के तथा पश्चिमी देशों में पुनर्जन्म के सिद्धांत के प्रचार को देखते हुए ऐसा लगता है कि आधुनिक जीव विज्ञान की गवेषणाओं की पृष्ठभूमि में इसका एक स्पष्ट तथा संक्षिप्त विश्लेषण बहुतेरों के लिए रुचिकर होगा। 'पुनर्जन्म क्यों और कैसे?' ऐसा ही एक विश्लेषण है।

पुनर्जन्म संबंधी विवेचना से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि पुनर्जन्म के सिद्धांत को आधुनिक विज्ञान की गवेषणाओं से कोई भय नहीं है, प्रत्युत यह सिद्धांत ऐसी अनेक घटनाओं का स्पष्टीकरण करता है, जिन्हें न तो वैज्ञानिक विश्लेषण से न ही किसी और मतवाद के सहारे इतने संतोषजनक रूप से स्पष्ट किया जा सकता है। पुनर्जन्म के सिद्धांत तथा इसके परिपूरक कर्मवाद का सृजनात्मक, अर्थपूर्ण एवं दायित्वपूर्ण जीवन के साथ सीधा संबंध है। आनुवंशिकता तथा परिवेश मनुष्य के जन्म और विकास को समझने के लिए पर्याप्त नहीं।

पुनर्जन्म के सिद्धांत का प्रचार विशेषत: हिंदू धर्म और बौद्ध धर्म करते हैं। इस सिद्धांत के अनुसार जब तक आत्मा जगत् प्रपंच के आकर्षणों से मुक्त नहीं हो जाता, तब तक उसे पुन: एक नए मानव शरीर में जन्म लेना ही पड़ता है। हिंदुओं तथा बौद्धों के पुनर्जन्म संबंधी मतों में सूक्ष्म भिन्नताएं हैं। आत्मा के देहान्तर प्राप्ति में विश्वास केवल हिंदुओं तथा बौद्धों में ही सीमित नहीं है, यूनानी विचारधारा में, पारसिक धर्म शास्त्रों में, इसिनीज संप्रदाय के उपदेशों में, फरीसियों में, जस्टिन माटर तथा ओरिजन जैसे ईसाई चर्च के आदिकालीन आचार्यों में तथा सूफी संतों और कवियों में भी इस विश्वास के अस्तित्व के स्पष्ट प्रमाण मिलते हैं। संसार के विभिन्न भागों की आदिम जातियां एवं जनजातीयाँ भी इस सिद्धांत में विश्वास करती हैं। जन्म और मृत्यु के रहस्य आदिकाल से ही मानव मन को उद्वेलित करते आ रहे हैं। मनुष्य कहां से आता है? वह कहां जाता है? ये मानव मन के स्वाभाविक प्रश्न हैं।

मनुष्य को अपने भावी अस्तित्व में विश्वास के साथ ही उसे अपने पिछले अस्तित्व में भी विश्वास होता है। ईसा मसीह के कथन भी पुनर्जन्म के सिद्धांत को पुष्ट करते हैं। बापटिस्ट जॉन के संबंध में उन्होंने कहा– 'यदि तुम मानो तो यही वह इलियास् है जिसे फिर आना था, जिसे सुनना हो, सुन लो।' (प्रमाण मैथ्यू 11/14 –15)

मृत्यु के बाद का अस्तित्व जन्म से पहले के अस्तित्व को मान लेता है। जो मृत्यु से परे है, वह जन्म से भी परे होगा। उसका उद्‌भव या विनाश भौतिक शरीर पर निर्भर नहीं होता। स्कॉटलैंड के दार्शनिक एवं इतिहासकार डेविड ह्यूम (1711–1776) का कथन है– 'अत: यदि यह आत्मा अमर है तो हमारे जन्म के पहले भी यह वर्तमान थी और अगर इसके पूर्व अस्तित्व से हमारा किसी तरह का संबंध न रहा हो तो इसके परवर्ती अस्तित्व से भी हमारा कोई संबंध नहीं हो सकता, अत: पुनर्जन्म वाद इस प्रकार का एक ऐसा सिद्धांत है जिस पर दार्शनिकों का ध्यान आकर्षित हो सकता है।' (ऐस्से, डेविड ह्यूम, द इम्मोर्लिटी ऑफ द सोल, जॉर्ज रोटलिज एंड संस लिमिटेड, लंदन, पृष्ठ 424 –427)

स्वामी विवेकानंद कहते हैं– 'अगर भविष्य में चिरकाल के लिए तुम्हारा अस्तित्व रहना संभव हो तो यह भी सच है कि अनादि काल से तुम्हारा अस्तित्व था। इसके

अतिरिक्त और कुछ हो ही नहीं सकता।' (विवेकानंद साहित्य, 1963, अद्वैत आश्रम कोलकाता, द्वितीय खंड, पृष्ठ 113)

किसी अस्तित्व के शाश्वत होने की धारणा के साथ ही साथ यह धारणा कि उसका आरंभ होता है, निरर्थक है। काल में जिसका आरंभ होता है, अवश्य ही काल में उसका विलय भी होता है।

पुनर्जन्म का सिद्धांत कर्मवाद के सिद्धांत का परिपूरक है। मनुष्य का पुनर्जन्म उसके अपने कर्म को संपूर्ण करने के लिए ही होता है। वह जैसा बोता है, वैसा काटता है। कर्म के नियम मनुष्य को जन्म और पुनर्जन्म के चक्र में आबद्ध करते हैं। कर्म से जीवात्मा बंधता है तथा कर्म से ही उसकी मुक्ति हो सकती है। कर्म तभी तक बंधन का कारण होता है, जब तक मानव जगत् प्रपंच में आसक्त होता है। किंतु जब वह अनंत की प्राप्ति को अपना लक्ष्य बना लेता है तब कर्म उसकी मुक्ति का कारण बन जाता है। यह द्विविध सिद्धांत जीव के अतीत, वर्तमान एवं भविष्य को लेकर निर्मित उसके व्यक्तित्व के एक व्यापक तथा संगत प्रेक्षण पर आधारित है। यह जीवन की प्रतिष्ठित घटनाओं की व्याख्या करता है। जीवन नाट्य तथा इसके रहस्यों की एक बुद्धि संगत व्याख्या होने के नाते इस सिद्धांत के महत्व को प्राचीन काल से लेकर वर्तमान काल तक के विश्व के बड़े-बड़े दार्शनिकों ने समझा और मान लिया है। वास्तव में संसार के धर्म विज्ञानी, दार्शनिक, रहस्यवादी, वैज्ञानिक, कवि तथा मनोवैज्ञानिक सभी पुनर्जन्म के सिद्धांत का समर्थन करते हैं जो कर्मवाद का ही एक अनुक्रम है।

इंग्लैंड के मैनचेस्टर शहर के मुख्य ग्रंथपाल एल स्टैन्ली जोस्ट 'पुनर्जन्म तथा कर्म : आज के संसार पर प्रयुक्त एक आध्यात्मिक दर्शन' इस विषय पर लिखते हुए कहते हैं कि 'पुनर्जन्म की सत्यता के मौलिक प्रमाण को केवल बुद्धि के द्वारा ही समझा जा सकता है। यह प्रमाण किसी भी विषय को महत्व तथा अर्थ प्रदान करने की उस धारण शक्ति पर निर्भर है, जिसके अभाव में यह विषय इन दोनों से वंचित ही रह जाता है। दृश्य जगत् तथा विचार जगत् दोनों में पारमार्थिक किसी भी सत्य के प्रमाण का यही एकमात्र प्रकार है। इस विश्व ब्रह्माण्ड में एक नीति संगत व्यवस्था है। इस प्रारंभिक पूर्व कल्पना के आधार पर पुनर्जन्म के इस सिद्धांत को तर्क संगत रूप से प्रमाणित किया जा सकता है, और इस पूर्व कल्पना के बिना इस विश्व का अस्तित्व भी निराधार है। बस है केवल एक घोर अर्थहीनता या एक सुदीर्घ दु:स्वप्न। रिइन्कर्नेशन एन इस्ट वैस्ट एंथोलॉजी, कम्पाइल्ड एण्ड एडिटिड बॉय जोसेफ एंड कर्स्टन, द जूलियन प्रैस इनकॉर्पोरेटिड, न्यूयॉर्क, 1961, पृष्ठ 161)

पुनर्जन्म की स्मृति और उसकी सत्यता

पुनर्जन्म= जन्म का अर्थ प्रकट होना, जीव का शरीर को धारण करने का नाम जन्म है। जीवन, मृत्यु के पश्चात् पुन: जन्म का नाम 'पुनर्जन्म' है। वेद आदि शास्त्रों में जन्म-पुनर्जन्म में उत्तम इंद्रियों, उत्तम शरीर उत्तम योनि प्राप्ति के लिए अनेक प्रार्थना मंत्र हैं। योगी, विद्वान्, मुनि जो पवित्रता में सिद्धि प्राप्त कर लेता है, उसको पुनर्जन्म का ज्ञान होता है। (योग दर्शन)

लोक में अनेक बालक-बालिकाएं विभिन्न प्रदेशों में विदेश में समय-समय पर पूर्व जन्म की घटनाएं प्राय: सुनाते रहते हैं और युवा अवस्था आने पर भूल जाते हैं। लेखक को एक बालक की पूर्व जन्म की सत्य घटना देखने को मिली।

यह सच है कि हमें अपने पूर्व जन्म याद नहीं रहते, लेकिन इससे पुनर्जन्म का सिद्धांत अप्रमाणित नहीं होता। प्राय: यह तर्क उठाया जाता है कि अगर हमने पहले भी मनुष्य जन्म जीवन बिताए हैं तो हमें वे याद क्यों नहीं रहते? और क्योंकि वह हमें याद नहीं रहते इसलिए पुनर्जन्म का सिद्धांत ग्रहण करने योग्य नहीं है। लेकिन बात यह है कि हमारा अस्तित्व या उसका अभाव हमारी स्मृति पर निर्भर नहीं होता। हमें अपने बचपन के दिन भी याद नहीं होते। क्या इसका अर्थ यह है कि हम कभी बच्चे नहीं थे? हमारे लिए इसी जीवन के प्रारंभिक दिनों की बातें भूल जाना संभव है। आश्चर्य नहीं कि हमें अपने पिछले जन्म भी याद नहीं होते अन्यथा हमारा जीवन बड़ा ही जटिल हुआ होता। कुछ नहीं तो बहुत सारे लोग प्रवंचक ही निकलते।

पतंजलि के अनुसार ध्यान की एक विशेष विधि से मनुष्य अपने पूर्व जन्म की स्मृतियों को जगा सकता है। जैसा कि उनके योग सूत्र में कहा गया है- संस्कारसाक्षात्करणात् पूर्वजाति ज्ञानम्।। अर्थात् अवचेतन संस्कारों के प्रत्यक्षीकरण के फलस्वरुप पूर्व जन्मों का ज्ञान होता है। (पतंजलि योग सूत्र 3-18) इस प्रकार के अनुस्मरण को संस्कृत में 'जाति स्मर' कहा जाता है। गौतम बुद्ध के बारे में कहा जाता है कि उन्हें अपने पहले के सभी जन्म याद थे। सामञ्ञ फल सुत्त। श्री कृष्ण पूर्व जन्म के

बारे में कहते हैं–

बहूनि में व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुनः।

अर्थात् हे अर्जुन ! मैं बहुत सारे जन्म बिताए हैं और तुमने भी। परंतु तुम्हें वे सब नहीं मालूम मुझे मालूम है– (गीता 4/5)

कटु सत्य है कि पूर्व जन्म की स्मृति स्वल्प काल ही रहती है। पूर्व जन्म को भूल जाना दैवी व्यवस्था है, नहीं तो लोक में पूर्व जन्म के बंधु बांधव, पति–पत्नी का संबंध, धन–संपत्ति, जमीन–जायदाद के विविध प्रकार के झगड़े होने से मानव जीवन दुःखी होता है। वर्तमान जीवन में भी लोगों में मोह, अज्ञानवश अनेक झगड़े होते हैं। यदि पूर्व जन्म की स्मृति हो तो और जीव अधिक दुःखी, परेशान होता है।

जीव को पूर्वजन्म की स्मृति रहती है किंतु वह नवजात शिशु को जब तक दूध पीने का संस्कार रहता है, वह अकारण हंसता है, रोता है, वाणी इतनी असमर्थ होती है कि वह बोल नहीं पाता। जब बोलने का सामर्थ्य होता है, तब तक वह तीन–चार वर्ष में पूर्व स्मृति को भूल जाता है। लाखों–करोड़ों जीवों में एक–दो जीव ही हैं जो मानव शरीर में पुनः पुनः आते हैं, वे पूर्व जन्म की घटनाएं बता सकते हैं।

जीव का भ्रमण

यजुर्वेद के मंत्र 39.6 के अनुसार जीव का गमन तथा आगमन ईश्वर की व्यवस्था के अनुसार होता है। जब–जब जीव का आगमन या गण्मन होता है, तब जीव सूक्ष्म शरीर के सहारे सूर्य रश्मि और वायु के माध्यम से आता है मृत्यु के उपरांत जीव शरीर को छोड़कर प्रथम दिन सूर्य में, दूसरे दिन अग्नि में, तीसरे दिन वायु में, चौथे दिन आदित्य में, पांचवें दिन चंद्रमा में, छठे दिन ऋतु में, सातवें दिन मरुत् में, आठवें दिन बृहस्पति में, नौंवे दिन मित्र–प्राण में, दसवें दिन वरुण में, 11वें दिन इंद्र में, 12वें दिन विश्वेदेवा अर्थात् खाद्य पदार्थों में भ्रमण करते हुए अपने कर्मों के अनुकूल गर्भाशय को प्राप्त हो शरीर धारण कर उत्पन्न होता है।

विविध योनि में जाने से पूर्व जीव वायु के साथ रहता है। जल, औषधि वा प्राण आदि में प्रवेश करके वीर्य में प्रवेश करता है अर्थात् जिस योनि में जाना होता है उस योनि के नर शरीर में प्रथम प्रवेश करता है। पुनः गर्भाधान द्वारा स्त्री के गर्भाशय में स्थित होकर पुनः जन्म लेता है। ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के पुनर्जन्म का विषय अति गूढ़तम

जिस परमेश्वर के वश में बड़े–बड़े देवलोक हैं, जिससे यह विस्तृत अंतरिक्ष हुआ है जो सूर्य आदि लोकों को रचकर बड़ी महिमा के साथ चमकाता है उस आनंदस्वरूप देव की स्तुति, प्रार्थना, उपासना करनी चाहिए। वही जड़ चेतन सृष्टि का कर्ता, धर्ता और संहर्ता है।

रहस्य श्रेष्ठ और वेदज्ञ मुनि, योगी जानते हैं।

जीवात्मा का स्वरूप

जीव सूक्ष्म तत्त्व है। वह लिंग रहित है, असंख्य हैं, अल्प सामर्थ्य वाला क्रियाशील है। अल्पज्ञ है, कर्म करने में स्वतंत्र है, फल भोगने में ईश्वर अधीन है।

जीव के कर्मफल

जो जीव मनुष्य शरीर में सात्विक होता है वह देव अर्थात् विद्वान् जो रजोगुणी होते हैं वे मध्यम मनुष्य और जो तमोगुण युक्त होते हैं वे नीच गति को प्राप्त होते हैं। जो अत्यंत तमोगुणी हैं वे स्थावर वृक्ष आदि कृमि, कीट, मत्स्य, सर्प, कच्छप, पशु और मृग के जन्म को प्राप्त होते हैं। जो मध्य तमोगुणी है वह हाथी, घोड़ा, शूद्र, मलेच्छ, निंदित कर्म करने हारे सिंह, व्याघ्र, वराह अर्थात् शूकर के जन्म को प्राप्त होते हैं।

जो उत्तम तमोगुणी हैं वे चारण जो कि कविता, दोहा आदि बनाकर मनुष्यों की प्रशंसा करते हैं, सुंदर पक्षी, दाम्भिक पुरुष अर्थात् अपने सुख के लिए अपनी प्रशंसा करने वाले, राक्षस जो हिंसक, पिशाच, अनाचारी अर्थात् मद्य आदि के आहार कर्ता और मलिन रहते हैं, वह उत्तम तमोगुण के कर्म का फल है।

जो अधम रजोगुणी हैं, वे लुहार, मल्लाह, नट–नाटक करने वाले सेवक होते हैं। जो मध्य रजोगुणी होते हैं वे राजा, राज मंत्री, राज पुरोहित, राजदूत, वकील, सेनापति का जन्म पाते हैं। जो उत्तम रजोगुणी होते हैं वे ज्ञान विद्या विशेषज्ञ, बाजा बजाने वाले, यक्ष, अप्सरा, विद्वानों के सेवक होते हैं।

जो उत्तम सतोगुणी होते हैं वे तपस्वी, संन्यासी, वेदपाठी, विमान चलाने वाले, ज्योतिषी और देह को स्वस्थ और पुष्ट रखने वाले होते हैं। जो मध्यम सतोगुणी होते हैं वे जीव यज्ञ कर्ता, वेदार्थवित्, विद्वान्, विशेषज्ञ और अध्यापक होते हैं। (मनुस्मृति 12/40–42 50–52)

स्मरण रहे कि सृष्टा की अति गुप्त व्यवस्था रहती

है। सामान्य जन्म कर्म ही करते हैं। कर्मफल प्रदाता ही सब जानता है। लोक में प्रत्यक्ष है कि अच्छे कर्म का फल परिणाम अच्छा होता है बुरे कर्म का बुरा फल होता है। कभी-कभी कर्म फल में देर होती है। क्रमश: फल मिलने में देर हो सकती है। कुछ कर्म फल वर्तमान जीवन में, कुछ कर्म फल अगले जीवन में मिलते हैं।

जीव के शरीर

जीव के तीन शरीर होते हैं-

1. स्वाभाविक जो जीव के स्वाभाविक गुण रूप हैं, चेतन तत्व रूप है जो अगोचर होता है।

2. सूक्ष्म शरीर= पांच प्राण, पांच ज्ञानेंद्रियाँ, पंचमहाभूत, (पंच तन्मात्राएँ) मन तथा बुद्धि- 17 तत्वों का समुदाय सूक्ष्म शरीर कहलाता है। यह सूक्ष्म शरीर जन्म मरण आदि में भी जीव के साथ रहता है। जब तक कि जीव की मुक्ति नहीं होती, वह सूक्ष्म शरीर से संयुक्त रहता है। यह सूक्ष्म शरीर सूक्ष्म भूतों के अंशों से बना है। (सत्यार्थ प्रकाश, 9वाँ समुल्लास)

3. स्थूल शरीर= स्थूल शरीर पांच महाभूतों से बना है, जो दृष्टिगोचर होता है। यह मानव का स्थूल शरीर 11 इंद्रियों, पंचकोषों से तथा अंग उपांग से सुशोभित है, सुंदर है। इन्हीं इंद्रियों के कारण मनुष्य कर्म भोग योनि वाला कहलाता है। जीव के कर्मानुसार स्थूल शरीर में भी इंद्रियां कम-ज्यादा होती हैं। एकेन्द्रिय प्राणी, दो इंद्रिय प्राणी, पंच इंद्रिय प्राणी। ग्यारह इंद्रियाँ केवल मानव शरीर को ही प्राप्त हैं।

ये इन्द्रियाँ जीव के बंधु=मित्र हैं, जीव के सहायक हैं। सूक्ष्म तत्त्व रूप इंद्रियाँ स्थूल शरीर के स्थूल इंद्रियों के कर्म=कार्य में सहायक हैं। स्थूल शरीर के बिना जीवन का कोई भी कार्य संपादन नहीं होता।

स्थूल शरीर के अंग जिसके विकलांग हैं या इंद्रियों का अभाव है, जैसे- लंगड़े, अंधे, गूंगे, बहरे- वे बड़े असमर्थ हो जाते हैं। यह स्थूल शरीर वेदों में 'देवपुरी' कहा गया है। यह सृष्टा का बनाया हुआ आत्मा का श्रेष्ठ मंदिर है।

मुक्ति के साधन

जीवात्माओं में जो मुक्त नहीं होते, वे पुनर्जन्म ग्रहण करते हैं। जो मुक्त हो जाते हैं वे नहीं। (वे मुक्ति की अवधि पूरी हो जाने के बाद जन्म लेते हैं। मुक्ति अनन्त नहीं है।) ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना का करना, धर्म का आचरण और पुण्य का करना, सत्संग, स्वाध्याय, तीर्थ सेवन, सत्पुरुषों का संग और परोपकार आदि सब अच्छे कामों का करना तथा सब दुष्ट कर्मों से अलग रहना- यह सब मुक्ति के साधन कहलाते हैं। (आर्योद्देश्य रत्नमाला)

मुक्ति के अधिकारी

वही व्यक्ति मुक्ति के अधिकारी है जो-

1. वेद के सिद्धांतों को यथार्थ जानता हो।

2. जो निश्चयपूर्वक यथार्थ दृढ़ विश्वास ईश्वर और वेद में रखता हो। 3. सभी प्रकार की भौतिक वासनाओं से रहित होना।

4. योग अनुष्ठान से चित्त व आत्मा को निर्मल बनाना।

5. शुद्ध अंत:करण वाले संन्यासी, स्थितप्रज्ञ योगी, शुद्धात्मा मुक्ति को प्राप्त होकर आवागमन से छूट जाते हैं।

मुंडकोपनिषद 3/6 में लिखा है कि मुक्ति में जीव का अस्तित्व बना रहता है और संकल्प मात्र शरीर से इच्छा अनुसार उत्तम सुख ब्रह्मानंद को प्राप्त करता है। परान्त काल के बाद मुक्त जीव लोक उपकार के लिए पवित्र मानव देह धारण करते हैं। ईश्वर के अनुग्रह से यह मानव देह मिलता है। अथर्ववेद (11.4.20) में लिखा है-

अंतर्गर्भश्चरति देवतास्वाभूतो भूतः स उ जायते पुनः।। अर्थात् जीव गर्भ पिंड में गतिमान होते हुए पुन: पुन: उत्पन्न होता है। **पुनर्मनः पुनरायुर्मऽआगन् पुनः प्राण पुनरात्मा मऽआगन्।।** (यजुर्वेद 4.15) अर्थात जीव पुन: पुन: मन, इंद्रिय, प्राण, आयु आदि की इच्छा करता है। अथर्ववेद के मंत्र **अष्टचक्रा नवद्वारा देवनाम्पूरयोध्या।।** (10.2.31) के अनुसार आठ चक्र, नवद्वार वाली पुरी में जीव रहता है, अत: जीव का नाम पुरुष है।

अत: सार रूप से कहा जा सकता है कि जिस प्रकार सूक्ष्म बीज स्थूल वृक्ष को उत्पन्न करता है, उसी प्रकार सूक्ष्म भूतात्मा स्थूल शरीर को उत्पन्न करता है। जिस कर्म के कारण जीव पुनर्जन्म में प्रेरित होता है, उसी के अनुसार उस जन्म में सब कुछ प्राप्त करता है और जो पूर्व जन्म में अभ्यस्त सभी गुण उस जन्म में भी प्राप्त होते हैं।

अंतत हमारा तो यही कहना है कि जिस परमेश्वर के वश में बड़े-बड़े देवलोक हैं, जिससे यह विस्तृत अंतरिक्ष हुआ है जो सूर्य आदि लोकों को रचकर बड़ी महिमा के साथ चमकाता है उस आनंदस्वरूप देव की स्तुति, प्रार्थना, उपासना करनी चाहिए। वही जड़ चेतन सृष्टि का कर्ता, धर्ता और संहर्ता है।

एक भावुकतापूर्ण पारिवारिक कहानी

एक अनोखा तलाक

पति-पत्नी में प्यार और तकरार एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। जरा सी बात पर कोई ऐसा फैसला न लें कि आपको जिंदगी भर अफसोस हो।।

हुआ यों कि पति ने पत्नी को किसी बात पर तीन थप्पड़ जड़ दिए। पत्नी ने इसके जवाब में अपना सैंडिल पति की ओर फैंका। सैंडिल का एक सिरा पति के सिर को छूता हुआ निकल गया।

मामला रफा-दफा हो भी जाता, लेकिन पति ने इसे अपनी तौहिनी समझी। रिश्तेदारों ने मामला और पेचीदा बना दिया, न केवल पेचीदा बल्कि संगीन। सब रिश्तेदारों ने इसे खानदान की नाक कटना कहा, यह भी कहा कि पति को सैंडिल मारने वाली औरत न वफादार होती है न पतिव्रता। इसे घर में रखना, अपने शरीर में मियादी बुखार पालते रहने जैसा है।

बुरी बातें चक्रवृद्धि ब्याज की तरह बढ़ती है, सो दोनों तरफ खूब आरोप उछाले गए। ऐसा लगता था जैसे दोनों पक्षों के लोग आरोपों का वॉलीबॉल खेल रहे हैं। लड़के ने लड़की के बारे में और लड़की ने लड़के के बारे में कई असुविधाजनक बातें कहीं।

मुकदमा दर्ज कराया गया। पति ने पत्नी की चरित्रहीनता का तो पत्नी ने दहेज उत्पीड़न का मामला दर्ज कराया। छह साल तक शादीशुदा जीवन बिताने और एक बच्ची के माता-पिता होने के बाद आज दोनों में तलाक हो गया।

पति-पत्नी के हाथों में तलाक के कागजों की प्रति थी। दोनों चुप थे, दोनों शांत, दोनों निर्विकार।

मुकदमा दो साल तक चला था। दो साल से पत्नी अलग रह रही थी और पति अलग। मुकदमे की सुनवाई पर दोनों को आना होता। दोनों एक दूसरे को देखते जैसे चकमक पत्थर आपस में रगड़ खा गए हों।

दोनों गुस्से में होते। दोनों में बदले की भावना का आवेश होता। दोनों के साथ रिश्तेदार होते जिनकी हमदर्दियों में जरा-जरा विस्फोटक पदार्थ भी छुपा होता। कुछ महीने पहले जब पति-पत्नी कोर्ट में दाखिल होते तो एक-दूसरे को देख कर मुँह फेर लेते। जैसे जानबूझ कर एक-दूसरे की उपेक्षा कर रहे हों। वकील और रिश्तेदार दोनों के साथ होते।

दोनों को अच्छा-खासा सबक सिखाया जाता कि उन्हें क्या कहना है। दोनों वही कहते। कई बार दोनों के वक्तव्य बदलने लगते। वो फिर सँभल जाते।

अंत में वही हुआ जो सब चाहते थे, यानी तलाक। पहले रिश्तेदारों की फौज साथ होती थी, आज थोड़े से रिश्तेदार साथ थे। दोनों तरफ के रिश्तेदार खुश थे। वकील खुश थे, माता-पिता भी खुश थे।

तलाकशुदा पत्नी चुप थी और पति खामोश था।

यह मात्र संयोग ही था कि दोनों पक्षों के रिश्तेदार एक ही टी-स्टॉल पर बैठे, कोल्ड ड्रिंक्स लिया।

यह भी केवल संयोग ही था कि तलाकशुदा पति-पत्नी एक ही मेज के आमने-सामने जा बैठे।

लकड़ी की बेंच और वे दोनों--

'कांग्रेच्यूलेशन- आप जो चाहते थे वही हुआ' स्त्री ने कहा।

'तुम्हें भी बधाई-- तुमने भी तो तलाक देकर जीत हासिल की--' पुरुष बोला।

'तलाक क्या जीत का प्रतीक होता है?' स्त्री ने पूछा।

'तुम बताओ?'

पुरुष के पूछने पर स्त्री ने जवाब नहीं दिया, वह चुपचाप बैठी रही, फिर बोली, 'तुमने मुझे चरित्रहीन कहा था-- अच्छा हुआ- अब तुम्हारा चरित्रहीन स्त्री से पीछा छूटा।'

'वह मेरी गलती थी, मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था।' पुरुष बोला।

'मैंने बहुत मानसिक तनाव झेला है', स्त्री की आवाज सपाट थी। न दु:ख, न गुस्सा।

'जानता हूँ, पुरुष इसी हथियार से स्त्री पर वार करता है, जो स्त्री के मन और आत्मा को लहू-लुहान कर देता है- तुम

बहुत उज्ज्वल हो। मुझे तुम्हारे बारे में ऐसी गंदी बात नहीं करनी चाहिए थी। मुझे बेहद अफसोस है।' पुरुष ने कहा।

स्त्री चुप रही, उसने एक बार पुरुष को देखा।

कुछ पल चुप रहने के बाद पुरुष ने गहरी साँस ली और कहा, 'तुमने भी तो मुझे दहेज का लोभी कहा था।'

'गलत कहा था।' पुरुष की ओर देखती हुई स्त्री बोली। कुछ देर चुप रही, फिर बोली, 'मैं कोई और आरोप लगाती, लेकिन मैं नहीं।'

प्लास्टिक के कप में चाय आ गई। स्त्री ने चाय उठाई, चाय जरा-सी छलकी। गर्म चाय स्त्री के हाथ पर गिरी। स्सी- की आवाज निकली।

पुरुष के गले में उसी क्षण 'ओह' की आवाज निकली। स्त्री ने पुरुष को देखा। पुरुष स्त्री को देखे जा रहा था।

'तुम्हारा कमर दर्द कैसा है?'

'ऐसा ही है, कभी वोवरॉन तो कभी काम्बीफ्लेम' स्त्री ने बात खत्म करनी चाही।

'तुम एक्सरसाइज भी तो नहीं करती।' पुरुष ने कहा तो स्त्री फीकी हँसी हँस दी।

'तुम्हारे अस्थमा की क्या कंडीशन है- फिर अटैक तो नहीं पड़े?' स्त्री ने पूछा।

'अस्थमा। डॉक्टर सूरी ने स्ट्रेन-- मेंटल स्ट्रेस कम करने को कहा है' पुरुष ने जानकारी दी।

स्त्री ने पुरुष को देखा, देखती रही एकटक। जैसे पुरुष के चेहरे पर छपे तनाव को पढ़ रही हो।

'इनहेलर तो लेते रहते हो न?' स्त्री ने पुरुष के चेहरे से नजरें हटाकर पूछा।

'हाँ, लेता रहता हूँ। आज लाना याद नहीं रहा' पुरुष ने कहा।

'तभी आज तुम्हारी साँस उखड़ी-उखड़ी-सी है' स्त्री ने हमदर्द लहजे में कहा।

'हाँ, कुछ इस वजह से और कुछ--' पुरुष कहते-कहते रुक गया।

'कुछ-- कुछ तनाव के कारण-' स्त्री ने बात पूरी की।

पुरुष कुछ सोचता रहा, फिर बोला, 'तुम्हें चार लाख रुपए देने हैं और छह हजार रूपये महीना भी।'

'हाँ- फिर?' स्त्री ने पूछा।

'वसुंधरा में फ्लैट है-- तुम्हें तो पता है। मैं उसे तुम्हारे नाम कर देता हूँ। चार लाख रुपए फिलहाल मेरे पास नहीं है।' पुरुष ने अपने मन की बात कही।

'वसुंधरा वाले फ्लैट की कीमत तो बीस लाख रुपए होगी? मुझे सिर्फ चार लाख रुपये चाहिएँ- ' स्त्री ने स्पष्ट किया।

'बिटिया बड़ी होगी- सौ खर्च होते हैं-- ' पुरुष ने कहा।

'वह तो तुम छह हजार रूपये महीना मुझे देते रहोगे' स्त्री बोली।

'हाँ, जरूर दूँगा।'

'चार लाख अगर तुम्हारे पास नहीं है तो मत देना' स्त्री ने कहा।

उसके स्वर में पुराने संबंधों की गर्द थी।

पुरुष उसका चेहरा देखता रहा--

कितनी सहृदय और कितनी सुंदर लग रही थी सामने बैठी स्त्री, जो कभी उसकी पत्नी हुआ करती थी।

स्त्री पुरुष को देख रही थी और सोच रही थी, 'कितना सरल स्वभाव का है यह पुरुष, जो कभी उसका पति हुआ करता था। कितना प्यार करता था उससे--'

एक बार हरिद्वार में जब वह गंगा स्नान कर रही थी तो उसके हाथ से जंजीर छूट गई। फिर पागलों की तरह वह बचाने चला आया था उसे।

खुद तैरना नहीं आता था लाट साहब को और मुझे बचाने की कोशिशें करता रहा था-- कितना अच्छा है- मैं ही खोट निकालती रही।

पुरुष एकटक स्त्री को देख रहा था और सोच रहा था, 'कितना ध्यान रखती थी, स्टीम के लिए पानी उबाल कर जग में डाल देती।

उसके लिए हमेशा इनहेलर खरीद कर लाती, सेरेटाइड आक्यूहेलर बहुत महँगा था। हर महीने कंजूसी करती, पैसे बचाती और आक्यूहेलर खरीद लाती। दूसरों की बीमारी की कौन परवाह करता है? ये करती थी परवाह! कभी जाहिर भी नहीं होने देती थी। कितनी संवेदना थी इसमें। मैं अपनी मर्दानगी के नशे में रहा। काश, जो मैं इसके जज्बे को समझ पाता।'

दोनों चुप थे, बेहद चुप।

दुनिया भर की आवाजों से मुक्त हो कर, खामोश!

दोनों भीगी आँखों से एक दूसरे को देखते रहे--

'मुझे एक बात कहनी है' उसकी आवाज में झिझक थी।

'कहो' स्त्री ने सजल आँखों से उसे देखा।

'डरता हूँ' पुरुष ने कहा।

'डरो मत, हो सकता है तुम्हारी बात मेरे मन की बात हो' स्त्री ने कहा।

'तुम बहुत याद आती रही--' पुरुष बोला।

'तुम भी-' स्त्री ने कहा।

'मैं तुम्हें अब भी प्रेम करता हूँ।'

'मैं भी' स्त्री ने कहा।

दोनों की आँखें कुछ ज्यादा ही सजल हो गई थीं।

दोनों की आवाज जज्बाती और चेहरे मासूम।

'क्या हम दोनों जीवन को नया मोड़ नहीं दे सकते?' पुरुष ने पूछा।

'कौन-सा मोड़?'

'हम फिर से साथ-साथ रहने लगें- एक साथ- पति-पत्नी बन कर- बहुत अच्छे दोस्त बन कर।'

'ये पेपर?' स्त्री ने पूछा।

'फाड़ देते हैं।' पुरुष ने कहा और अपने हाथ से तलाक के कागजात फाड़ दिए।

फिर स्त्री ने भी वही किया। दोनों उठ खड़े हुए। एक दूसरे के हाथ में हाथ डाल कर मुस्कराए। दोनों पक्षों के रिश्तेदार हैरान-परेशान थे। दोनों पति-पत्नी हाथ में हाथ डाले घर की तरफ चले गए। घर जो सिर्फ और सिर्फ पति-पत्नी का था।।

पति-पत्नी में प्यार और तकरार एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। जरा सी बात पर कोई ऐसा फैसला न लें कि आपको जिंदगी भर अफसोस हो।।

(सतीन्द्र छाबरा की भित्ती से)

जिनकी नहीं होती माँ

❑प्रोफेसर शाम लाल कौशल (9416359045)

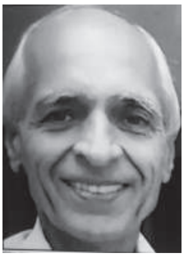

जिनकी नहीं होती मां
अपने दिल का दु:ख दर्द
बाटते होंगे किसके साथ।
जिनकी नहीं होती मां
वो अपनी खुशी के खजाने
सांझा करते होंगे किसके साथ।
जिनकी नहीं होती मां
अपने दिल के गहरे राज
सांझा करते होंगे किसके साथ।
जिनकी नहीं होती मां
गमों के गहरे समंदर मे
डुबकियां लगाते होंगे किसके साथ।
जिनकी नहीं होती मां
कामयाबी न मिलने की हालत में
आंसू बहाते होंगे किसके साथ।
जिनकी नहीं होती मां
जिंदगी के फुर्सत के लम्हे
रोकर बिताते होंगे किसके साथ।
जिनकी नहीं होती मां
अपने दिल की बेचैनी
बांटते होंगे किसके साथ।
जिनकी नहीं होती मां
अपने परिवार की समस्याएं
सांझा करते होंगे किसके साथ।

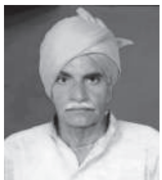

बिन्दु बिन्दु विचार

❑भलेराम आर्य, सांघी वाले
(9416972879)

❖संकल्प शक्ति से किसी भी लक्ष्य की प्राप्ति संभव है।
❖विपत्ति अंतस् पर पड़ी धुंध को साफ कर देती है।
❖शिक्षा में किया निवेश जीवन पर्यन्त प्रतिफल देता है।
❖आस्था से ही ईश्वर की अनुभूति संभव है।
❖अंत: करण की आवाज ही सर्वोत्तम मार्गदर्शक है।
❖अधिकारों के साथ कर्तव्य भी संलग्न होते हैं।
❖विनम्रता मानवीय गुणों में सर्वोपरि है।
❖पहले योजना बनाएं, फिर उसके अनुरूप कार्य करें।
❖सादगी व्यक्ति को आंतरिक शांति प्रदान करती है।
❖धर्मानुरूप आचरण ही भवसागर से पार करता है।
❖व्यवहार ही व्यक्तित्व का प्रतिबिंब होता है।
❖अपनी भाषा से ही उन्नति संभव है।
❖मार्गदर्शक जीवन के प्रकाश स्तंभ होते हैं।
❖उपवास आत्मा की शुद्धि का उपकरण है।
❖प्रेम के बिना जीवन वैसा है जैसे फल फूल के बिना वृक्ष।
❖मौन प्राय: शब्दों से ज्यादा प्रभावी होता है।
❖असुरक्षा व्यक्ति के विकास को संकुचित कर देती है।
❖विचार शून्यता की स्थिति विकास में बाधक बनती है।
❖कर्तव्य से विमुख होना पतन को आमंत्रण देना है।

प्रकृति का अनुपम उपहार केला

❑**आयुर्वेद शिरोमणि डॉक्टर मनोहरदास अग्रावत**, एनडी प्राकृतिक चिकित्सक

केले की उत्पत्ति सबसे पहले कहाँ हुई, यह अभी भी संदिग्ध है। वैसे वैज्ञानिकों का विचार है कि केले का मूल जन्म स्थान भारत या दक्षिण पूर्व एशिया द्वीप पुंज है। भारत के लिए केला कोई नया अथवा बाहर से आया फल नहीं है। अनेक प्राचीन धार्मिक ग्रंथों में देवताओं की पूजा एवं अनेक अनुष्ठानों में केले को प्रधान स्थान दिया जाता रहा है। आतिथ्य सत्कार में भी केले का उपयोग भारतीयों द्वारा होता रहा है। महाभारत में विदुर पत्नी द्वारा भगवान श्रीकृष्ण को केले के छिलके खिलाने के रसमय मार्मिक वर्णन को भला कौन भूल सकता है।

ईसापूर्व 500-600 के भारतीय पाली ग्रंथों में भी केले के उगाने और खाये जाने का वर्णन मिलता है। ईसा पूर्व 250 के एक मलेशियाई-ग्रंथ में भी केले से संबंधित विवरण मिलता है। इंडोनेशिया के संसार प्रसिद्ध प्राचीन मंदिर बोरो बुदुर में भित्तियों पर जुलूसों के दृश्यों में केले के वृक्षों का अंकन किया गया है।

दूसरी शताब्दी में चीन में केला उगाये जाने के प्रमाण मिलते हैं। अफ्रीका में केला पांचवीं सदी में लाया गया। सातवीं शताब्दी में यह भूमध्य सागरीय देशों में पहुंचा। वहाँ से दसवीं शताब्दी में पोलीनेशियाई यात्री इसे प्रशांत महासागरीय देशों में ले गए। अमेरिका में यह पुर्तगाली नाविकों द्वारा सोलहवीं शताब्दी के आरंभ में लाया गया।

केला जहाँ भी पहुँचा तेजी से लोकप्रियता को प्राप्त करता गया। इसकी मांग दिनो दिन बढ़ती ही गई। आजकल केला, वर्मा, मलाया, चीन, मिश्र, अफ्रीका, अमेरिका तथा आस्ट्रेलिया आदि देशों में बहुतायत से पैदा किया जाता है। भारत में भी केले ने विदेशी मुद्रा कमाने में बहुत प्रगति की है। एक हजार एकड़ की खेती में लगभग एक करोड़ से भी अधिक रुपयों की विदेशी मुद्रा कमाई जा सकती है।

महाराष्ट्र, तमिलनाडु एवं गुजरात राज्य में सर्वाधिक खेती केले की की जाती है। इसके अतिरिक्त असम, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल भी केला उत्पादक राज्य हैं।

केले को संस्कृत में भानुफल, कदलीफल व वनलक्ष्मी कहा जाता है। फारसी में-मोज, अरबी में-तना, लेटिन में-मूसासेपिंग्टन और अंग्रेजी में बनाना तथा हिन्दी में केला कहा जाता है।

निहीत तत्व

केला स्वास्थ्य के लिए प्रकृति का वरदान है। पका केला पोषक तत्वों का महत्वपूर्ण स्रोत है। इसका रासायनिक विश्लेषण इस प्रकार है:-

विटामिन 'बी' 36 प्रतिशत, कार्बोहाईड्रेट-2 प्रतिशत, थियामिन-8 प्रतिशत, प्रोटीन-2 प्रतिशत, विटामिन-'सी' 20 प्रतिशत, रेशा-10 प्रतिशत, 9 इंच के एक केले में 400 मिलिग्राम पोटेशियम होता है।

शक्ति एवं गर्मी प्रदान करने, शरीर के स्वास्थ्य कारी तत्वों से समृद्ध एवं भरपूर होने और अपने रसीले मधुर स्वाद के कारण केला सभी फलों को पीछे छोड़ गया है। इसमें शर्करा, स्टार्च, कैल्सियम, लोह एवं फास्फोरस प्रचुर मात्रा में हैं और ए, बी, सी विटामिन भी हैं। केले के 100 ग्राम गूदे से 153 कैलारी उर्जा मिलती है।

प्रकृति की यह अद्भुत कारीगरी है कि उसने केले के मधुर गूदे को जीवाणु रोधक आवरण प्रदान किया है। केले के छिलके में कुछ ऐसे रासायनिक तत्व पाये जाते हैं जो कि जीवाणुओं के अस्तित्व के लिए विष का काम करते है जिससे वे केले के गूदे को किसी भी प्रकार की हानि नहीं पहुंचा पाते।

हृदय रोगों सम्बन्धी नवीनतम शोधों से ज्ञात हुआ है कि पोटेशियम युक्त फलों के सेवन से दिल के दौरे की संभावनाएं 30 प्रतिशत कम हो जाती हैं। एक जर्मन वैज्ञानिक के अनुसार केले में एक ऐसा पदार्थ होता है जो मस्तिष्क को सेरिटोनिन बनाने के लिए प्रेरित करता है, जिससे थका हुआ मन व तन प्रफुल्लित हो जाता है।

आयुर्वेदिक मतानुसार

पका केला बल तथा कांति को बढ़ाता है। वात, कफ एवं रक्त पित्त को शांत करता है। प्रमेह नष्ट करता है। क्षुधावर्धक है, पौष्टिक, ठण्डा, कामोद्दीपक और सम्पूर्ण आहार की श्रेणी में आता है। पुरुषों के वीर्य को बढ़ाता है, स्त्रियों के प्रदर रोग को नष्ट करता है। यह सोमरोग जिसमें स्त्रियों को बहुत पेशाब आता है, की उत्कृष्ट औषधि है। प्यास शांत करता है।

केले के औषधीय गुण–

1. प्रतिदिन दोपहर में भोजन के पश्चात् केले का रस सेवन करने से रंग साफ होता है, बाल लम्बे होते हैं।

2. नियमित रूप से केला खाने से कब्ज, अग्निमांद्य, अफारा और खाने में अरुचि का भाव दूर होता है।

3. आयुर्वेद में केले के पिंड का रस क्षयरोग में प्रभावी औषधी के रूप में उपयोग किया जाता है।

4. कच्चा केला पेप्टिक अल्सर में भी उपयोगी पाया गया है।

5. केला संग्रहणी, पुराने दस्तों एवं पेचिश रोग में लाभ दायक है।

6. प्रात: नाश्ते में केले का सेवन अत्यन्त लाभकारी है। दिन में केला खाने से पाचन शक्ति बढ़ती है।

7. केले का नियमित सेवन करने से अनिद्रा, पेशाब की जलन, कब्ज आदि रोग मिट जाते हैं।

8. रक्त की कमी (एनीमिया), पथरी, मुंहासे, दंत रोग व चर्म रोगों में केले का सेवन फायदेमंद है।

9. सांवली रंगत को निखारने और चेहरे की झुर्रियाँ दूर करने के लिए केले के रस में थोड़ा सा नमक मिलाकर चेहरे, गर्दन, हाथ व पैरों पर लगाना चाहिये तथा सूखने पर धो लेना चाहिए।

10. प्रचुर मात्रा में कार्बोहाईड्रेट होने से केला गुर्दे की बीमारियों में भी लाभ के साथ दिया जा सकता है।

11. टाईफाईड बुखार के उतरने के बाद केला रोगी को पथ्य के रूप में बे खटके दिया जा सकता है।

12. दूध में केले का आहार बच्चों के लिए एक आदर्श आहार है। एक भाग मसला हुआ केला तथा तीन भाग दूध का मिश्रण बनाकर बच्चों को यह स्वादिष्ट भोजन दिया जा सकता है।

13. केला अनेक पोषण तत्वों, विटामिनों, खनिज लवण आदि से परिपूर्ण है। इससे भूख का भी शमन हो जाता है परन्तु इसमें प्रोटीन तथा वसा अल्प परिमाण में होते हैं, अत: यदि कोई केले के आहार पर ही कई दिन रहे तो उसका वजन कई पौंड घट जायेगा।

मोटे लोग इस आहार से बिना किसी परेशानी के अपना कई पौंड वजन घटा सकते हैं।

परन्तु दूसरी ओर यदि केले के साथ दूध को भी मिला लिया जाय तो यह पूर्ण एवं संतुलित भोजन हो जाता है, जिससे शरीर की सारी आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाती है। जो लोग मोटे होना चाहते हैं उनके लिए तो इससे बढ़कर कोई दूसरा रसायन उपलब्ध नहीं हो सकता। ऐसे लोगों को चाहिए कि वे दिन में दो–तीन बार 250 से 500 ग्राम दूध के साथ खूब पके तीन–चार केले उपयोग में ले।

14. दैनिक भास्कर दिनांक 9 मई 2011 के पृष्ठ 12 पर एक शोध प्रकाशित हुई है जो इस प्रकार है:–

रोजाना तीन केले खाकर बचें स्ट्रोक से–

लंदन। रोजाना तीन केले खाने से स्ट्रोक का खतरा कम हो जाता है। ब्रिटेन और इटली के शोधकर्ताओं के शोध में यह बात सामने आई है। शोधकर्ताओं के मुताबिक नाश्ते, दोपहर के खाने और शाम के वक्त एक–एक केला खाने से काफी मात्रा में पोटेशियम मिल जाता है। इसकी वजह से दिमाग में खून का थक्का जमने का खतरा 21 प्रतिशत कम हो जाता है। शोधकर्ता पहले हो चुके छ: अध्ययनों पर शोध करने के बाद इस नतीजे पर पहुंचे हैं।

इसके परिणाम से यह बात भी सामने आती है कि पोटेशियम की प्रचुर मात्रा वाले अन्य खाद्य पदार्थ जैसे दूध, पालक व दालों का सेवन करने से स्ट्रोक के खतरे से बचा जा सकता है।

सावधानियाँ

–रात में केले का सेवन नहीं करना चाहिये, इससे जोड़ों में दर्द व खाँसी की शिकायत होती है।

–बुखार में व मधुमेह में भी केले का सेवन नहीं करना चाहिए।

–मनोहर आश्रम, स्थान–उम्मेदपुरा,
पो. तारापुर (जावद)–458330, जिला नीमच

वैधानिक सूचना : पाठकों को सलाह दी जाती है कि वे औषधीय प्रयोग किसी योग्य चिकित्सक की देखरेख में करें। अनुपात, अनुपान या किसी अन्य कारण से संभावित हानि के लिये शांतिधर्मी जिम्मेवार नहीं है। –सम्पादक

भजनावली

रचनाकार : सहदेव समर्पित

विषयों में फंस के मानव जीवन अनमोल गंवाए

तर्ज : चिंगारी कोई भड़के--

विषयों में फंस के मानव, जीवन अनमोल गंवाए।
फिर आखिर में पछताए, कुछ हाथ न आए।।

इक ये अभिमान भयंकर, छुप कर बैठा है अन्दर।
धन दौलत का भुजबल का, तू बन बैठा है सागर।।
यह नश्वर तेरी काया, जिस पर है तू इतराए,
यह राज समझ नहीं आए, पल में मिट जाए।।1 ।।

ये काम क्रोध की अग्नि, जिसमें तू खुद को झोंके,
इस मन की चंचलता को ओ पगले क्यों ना रोके।।
यह काम अगन है ऐसी, ना भोग से जाए,
जितना तू इसे बढ़ाए, यह बढ़ती जाए।।2 ।।

धन लूटा इसका उसका चोरी छल जाल रचाके।
इसे अन्त साथ ले जाना, रख लेना इसे बचाके।
जब काल तुम्हारा आए, सोना चांदी ना पाए,
इक धर्म साथ में जाए, ना उसे कमाए।।3 ।।

यह मेरा है यह मेरा यह झूठी है मोह ममता।
यह चक्र विचित्र 'समर्पित' बिन योग कभी ना थमता
तू जिनके लिए दु:ख पाए, नहीं साथ तेरे कोई जाए,
जो दाता तुझे संभाले, उसको नहीं ध्याए।।4 ।।

1995 की बाढ़ पर लिखी हरयाणवी रचना

बहुत बड़ा संसार पड्या सै डूबण और तरण नै।
डूबणियां नैं बिन पाणी के बहुत जगाह डूबण नै।।

वो डूब्या जो दो भाईयां नै कहकै बात मुकर ग्या।
वो डूब्या जो सीधी साची बात कहण तै डरग्या।।
वो डूब्या जो अपणे सिर पै आप गुलामी धरग्या।।
डूबणिया तो वो सै जिसनै मांग मांग कै सरग्या।।
दो पीस्यां की खातिर जो कोई होज्या त्यार बिकण नै।

डूबणिया तो वौ सै जिसकी कथनी करनी न्यारी।
घरां खाण नै दाणै कोन्या बणता छत्तरधारी।।
खोदे जो विश्वास यार का करकै चोरी जारी।।
जिसकै बड़ज्या उसके घर मैं करज्या साफ बुहारी।।
छाती चौड़ी करकै चालै होर्या जो पाटण नै।।2 ।।

बिना बात बकवाद करै जो वो डूबणिया होवै।
वो डूबणिया हो सै जो कोई ल्याहज शरम नै खोवै।।
कहण सुणन नै कुछ कोन्या जो यूं हे थूक बिलौवे।
नाश करणिया उज्जड़ पाड़ा कर्या कराया खोवै।।
आगै सदा अड़ा पावै जो सूका साह पाक्कण नै।।3 ।।

पाणी मैं कहं लोग डूबग्ये के डूब्बण मैं डूब्बे सैं।
डूब्बणिये तो डूबणियां नैं लूट्टण मैं डूबे सैं।।
चंदा करकै गाम गली का खावण मैं डूब्बे सैं।।
वैं डूब्बे दो चार दिनां मैं यैं क्षण मैं डूब्बे सैं।।
'सहदेव' गर पूच्छण जावै त टोहलें जगाह लुकहण नैं।

बाल वाटिका

जानते हो!

प्र. विजय कुमार जांगिड़

●U.N.O. का फुलफॉर्म–
United Nation Organisation
●संयुक्त राष्ट्र संघ दिवस– 24 अक्टूबर
●संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी में भाषण देने वाले प्रथम व्यक्ति– अटल बिहारी वाजपेयी
●संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना का वर्ष– 1945
●संयुक्त राष्ट्र संघ का मुख्यालय– न्यूयार्क
●संयुक्त राष्ट्र संघ के वर्तमान महासचिव– बान की मून
●संयुक्त राष्ट्र संघ के सदस्य राष्ट्रों की कुल संख्या– 193
●भारत यू. एन. ओ. का सदस्य किस वर्ष से है– 1945 से

☺😐☺हास्यम्☺😐☺

■एक सब्जी बेचने वाले के घर जब बच्चा पैदा हुआ तो एक महिला ने पूछा– बधाई हो! बच्चा कैसा है भाई साहब!
'एकदम ताजा है बहन जी'–उसने उत्तर दिया।

■अध्यापक ने कक्षा में पूछा– 'व्हाट' को हिन्दी में क्या कहते हैं?
एक बच्चे का ध्यान कहीं और था, उसने खड़े होकर कहा– जी क्या?
अध्यापक– शाबाश, बैठ जाओ।

■नानी– बेटा, अपनी नानी की कभी याद नहीं आई?
टप्पू– हाँ नानी, प्रश्न-पत्र देखकर मुझे आप बहुत याद आई।

■चैकर– अपना टिकट दिखाओ।
आदी– तुमने टिकट लिया है?
चैकर– नहीं।
आदी– खुद बिना टिकट के चलते हो और मुझे टिकट लेने के लिए कह रहे हो?

■एक मोटे आदमी ने तीसरी मंजिल से छलांग लगा दी। अगले दिन उसे होश आया तो उसने अपने आप को हस्पताल में पाया।
उसने डॉक्टर से पूछा– मैं जिन्दा कैसे बच गया?
डॉक्टर ने दु:खी होकर कहा– आप तो बच गए पर आप जिन तीन आदमियों पर गिरे थे, वे नहीं बच सके।

प्रहेलिका:

–अनुव्रत आर्य

● काली गुणवाली बड़ी, रही डाल पर डोल,
जब मस्ती में बोलती, मिश्री देती घोल।।

● ऐसा एक अनोखा पक्षी, उसके हाड़ न मांस,
हजार मील जो उड़ता जाए, कभी न लेता सांस।

● खड़ी-खड़ी मैं बदन जलाऊँ
खड़ी खड़ी मैं दे दूँ जान।
अंधियारे हर घर दुकान में, आता सबको मेरा ध्यान

● सिर पर सिकुड़ी आगे छितरी,
हर घर में है साजा।
शान से चलती धूल उड़ाती,
करती काम यह ताजा।।

● खेत में उपजे सब कोई खाय।
घर में उपजे घर बंट जाय।।

को य ल ह वा ई ज हा ज मो म ब त्ती झा डू फू ट

विचार-वाटिका

❑प्रतिभा बहन

♦नया पाने की चाह में पुराने को मत भूलो।
♦पत्थर की कोई चट्टान कमजोर लोगों की राह का रोड़ा बन जाती है, किंतु शक्तिशालियों के लिए सफलता की सीढ़ी बन जाती है।
♦सफलता का पहला रहस्य आत्मविश्वास है।
♦यदि तुम्हें जीवन से प्रेम है तो समय को बरबाद मत करो, क्योंकि जीवन समय से बना है।
♦शेक्सपियर ने कहा था– 'मैंने समय को नष्ट किया था, समय मुझे नष्ट कर रहा है।'
♦बुद्धिमान लोग जीने के लिए खाते हैं, वे खाने के लिए नहीं जीते।
♦भोजन शांत भाव से मन लगाकर करने से भली प्रकार पचता है।
♦एकता जीवन का मार्ग है, आपसी फूट पतन का मार्ग है।
♦एक और एक मिल कर ग्यारह होते हैं।

धरोहर

❑सत्यसुधा शास्त्री

एक व्यापारी के चार बेटे थे। वह बूढ़ा हो गया था। उसे हरदम यही चिन्ता खाए जाती थी कि उसके बाद घर की संभाल कौन करेगा। उसने चारों बेटों की परीक्षा करनी चाही। उसने अपने घर पर एक बड़े यज्ञ का आयोजन किया और अपने बेटों को एक एक मुट्ठी धान देकर कहा– इसको संभाल कर रखना और जब मैं मांगूं तब वापस लौटा देना।

सबसे बड़े बेटे ने सोचा– पिताजी मजाक कर रहे हैं। उसने धान को ऐसे ही फैंक दिया। दूसरे ने सोचा– घर में बहुत धान रखा ही है, जब पिताजी मांगेंगे तो उसमें से एक मुट्ठी निकाल कर दे दूंगा। तीसरे ने उस एक मुट्ठी धान को अच्छी तरह से पोटली में बांधकर संदूक में रख दिया।

सबसे छोटे बेटे ने उस एक मुट्ठी धान को मकान के पिछवाड़े में बो दिया। अच्छी वर्षा हुई। अच्छी फसल हुई। दूसरी, तीसरी, चौथी साल भी उसने धान बोया, इस प्रकार उसने कई घड़े धान इकट्ठा कर लिया।

उस साल व्यापारी ने फिर एक यज्ञ का आयोजन किया। उसने अपने चारों बेटों से एक मुट्ठी धान मांगा। बड़े ने कह दिया कि मैंने तो सोचा था कि आप मजाक कर रहे हैं, इसलिए मैंने धान फैंक दिया। दूसरे ने घर में पड़ी धान में से एक मुट्ठी लाकर दे दिया। तीसरे ने संदूक में से निकाल कर वहीं पोटली पिता को सौंप दी। चौथे ने कहा– पिताजी उस एक मुट्ठी धान से मेरे पास अनेक घड़े धान हो गई है। उसने सारी धान मंगवाकर पिता के सामने रख दी। पिता ने प्रसन्न होकर उस बेटे को व्यापार की सारी जिम्मेदारी सौंप दी और खुद वानप्रस्थ हो गए।

वेद में आता है– बुद्धिमान पूर्वजों की बनाई हुई श्रेष्ठ परम्पराओं की रक्षा करो। **ज्योतिष्मतः पथो रक्ष धिया कृतान्।** हम अपने पूर्वजों से प्राप्त श्रेष्ठ परम्पराओं की रक्षा करके, उनके दिये ज्ञान का विस्तार करके ही ऋषि ऋण से उऋण हो सकते हैं।

कविता

●शकुन्तला काजल 'शकुन'

तकदीर किसे कहते माता,
मिलती कहाँ बता दो माता।
मैं भी जाकर ले आऊँगी,
बस तुम राह दिखा दो माता।
कमतर नहीं आपकी बेटी,
उठ सबको बतला दो माता।
बिन पंखों के उड़ जाऊँगी,
थोड़ा सा मुस्का दो माता।
पापा आसमान का तारा,
मेरी जगह बता दो माता।
तकदीर लिखूंगी खुद अपनी,
पलक जरा झपका दो माता।।

●●●

पहले बैल्ट लगाओ पापा,
फिर गाड़ी चलाओ पापा।
माना मैं छोटा बच्चा हूँ,
इतना नहीं बनाओ पापा।
सीट बैल्ट है बहुत जरूरी,
फिर क्यों आँख चुराओ पापा।
पुलिस अंकल नहीं देख रहे,
ये कह मत बहलाओ पापा।
सिर्फ जिंदगी नहीं आपकी,
हमें ध्यान में लाओ पापा।

ठग बिल्ली

चूहे ने बड़ा बिल बना रखा था। कई दिनों से एक मोटी बिल्ली उसे पकड़ने के लिए ताक लगाए बैठती, पर चूहा बिल से बाहर ही न निकले। बिल्ली थी बड़ी चालाक। एक दिन बिल के अन्दर थोड़ा सा मुंह लगाकर फुसफुसाई– 'एक बात बताओ चूहे भाई, अंदर बैठे क्या करते हो? कभी राम का नाम भी लिया करो।' 'हाँ मौसी, मैं तो राम, शिव का सुमिरन करता ही रहता हूँ।' उसने जरा सा मुँह निकालकर कहा।

चूहे की जो गंध आई तो बिल्ली के मुँह से लारें टपकनी शुरू। 'यहाँ पानी जैसा क्या है!' चूहा बोला। 'अरे तुम्हारे भाग्य से यहां पवित्र जल की धारा फूटी है। यह तुम्हारे पाप धोने आई है। अब तू ध्यान लगा और कसकर आँखें मींच। समय न गवां, इस पवित्र जल में डुबकी लगा।'

आँखें मूंदकर चूहे ने छलांग लगाई और सीधा बिल्ली के खुले हुए मुंह के अन्दर। बिल्ली का मुँह झट से बंद।

चूहा घबराकर बोला–यहाँ तो बहुत अंधेरा है व गीलापन भी है। बिल्ली बोली, तुम्हें अपने पापों की सजा मिल रही है, इसलिए नरक के अंधेरे में पड़े रहो। शीघ्र ही यह पानी तुम्हें बहाकर स्वर्ग ले जाएगा। वहाँ पहुँचकर तुम शांति पा सकोगे।'

इस तरह बिल्ली चूहे को खा गई।

शिक्षाः आंखें मूंदकर किसी के झूठे बहकाने पर विश्वास मत करो। हमेशा अच्छे बुरे परिणाम के बारे में सोच समझकर निर्णय लेना चाहिए।

गुरुकुल प्रभात आश्रम में अंतर्राष्ट्रीय योगदिवस

विश्व योग दिवस के विशेष अवसर पर गुरुकुल प्रभात आश्रम, टीकरी में योग दिवस का शुभारंभ करने हेतु पहले यज्ञ और हवन का आयोजन किया गया। इसके पश्चात् गुरुकुल प्रभात आश्रम टीकरी के कुलाधिपति के सान्निध्य में और गुरुकुल के व्यवस्थापक शिवम्, अजय, सुबोध कुमार और साई के कोच विकास और समस्त गुरुकुल परिवार की उपस्थिति में आसन, प्राणायाम करते हुए योग का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर गुरुकुल के कुलाधिपति जी ने योग दिवस का उद्देश्य बताया कि योग से तन और मन में सौहार्द के योग का संवर्धन होता है, इसी से सभी में सौहार्द भाव बढ़ता है और विश्व का कल्याण होता है। उन्होंने कहा कि हमारा संगमन, संवदन, मनन व मंथन साथ हो, यह योग से ही सम्भव है। योग से मन और बुद्धि की वृत्तियों पर विजय होती है। इस अवसर पर कुलाधिपति जी ने योग की परम्परा का आख्यान करते हुए कहा कि महर्षि पतंजलि ने योगसूत्र में योग का अर्थ करते हुए कहा है कि चित्त की समस्त वृत्तियों का निरोध जिसके द्वारा किया जाए, वही योग है और योग की परम्परा अनादिकाल से समस्त विश्व में प्रवाहमान है। योग को मुख्यत: 6 अंगों के माध्यम से विद्वानों ने देखा। इन्हीं अंगों में दो अंग हैं- आसान और प्राणायाम। इन्हीं को आज विश्व योग दिवस पर सभी कर रहे हैं। इसके बाकी अंगों को भी जीवन में अपनाना चाहिए। यह योग समस्त विश्व को शान्ति और कल्याण के सूत्र में पिरोने का कार्य करता है। जिस प्रकार योग व्यक्तिगत रूप में शरीर को पुष्ट करता है तो उसी प्रकार विश्व को सुदृढ़ करता है। सूर्य नमस्कार और योग करने के पश्चात् कुलाधिपति जी ने समस्त विश्व के कल्याण हेतु ऋग्वेद के संज्ञान सूक्त के मंत्रों के माध्यम से विश्व और इसमें स्थित समस्त प्राणियों के तन और मन के पूर्ण स्वास्थ्य, शान्ति और कल्याण के लिए प्रार्थना करवाई।

ग्राम जाडरा, जिला रेवाड़ी में कन्या चरित्र निर्माण शिविर के रूप में प्रेरणादायी कार्यक्रम सम्पन्न हुआ

आर्य वीरांगना दल जाडरा रेवाड़ी द्वारा आर्य बालिका योग एवं चरित्र निर्माण शिविरका आयोजन एक जून से 8 जून 2025 तक किया गया, जिसका समापन 8 जून को किया गया। समापन समारोह में मुख्य अतिथि श्रीमान् विद्यासागर जी एस एच ओ थाना रामपुरा रेवाड़ी थे। इस अवसर पर बालिकाओं द्वारा भव्य योग एवं व्यायाम-प्रदर्श किया गया। समस्त ग्रमवासियों ने कार्यक्रम की भूरि भूरि प्रशंसा की। कार्यक्रम में मुख्य रूप से खुशीराम जी पूर्व डीएसपी, नन्दलाल जी पूर्व सरपंच, हरिसिंह जी आर्य, कृष्ण स्वरूप आर्य पूर्व सरपंच, मेजर सूबेसिंह, लालसिंह जी थानेदार, रोशनलाल आर्य पूर्व सरपंच प्रधान आर्यसमाज जाडरा, कप्तान विरेन्द्र सिंह, मा. राजेन्द्र सिंह उपस्थित रहे। समस्त ग्राम पंचायत का सहयोग रहा। बालिकाओं ने बहुत प्रेरणा ग्रहण की।

-रोशनलाल आर्य पूर्व सरपंच
ग्रा. पो. जाडरा, जिला रेवाड़ी

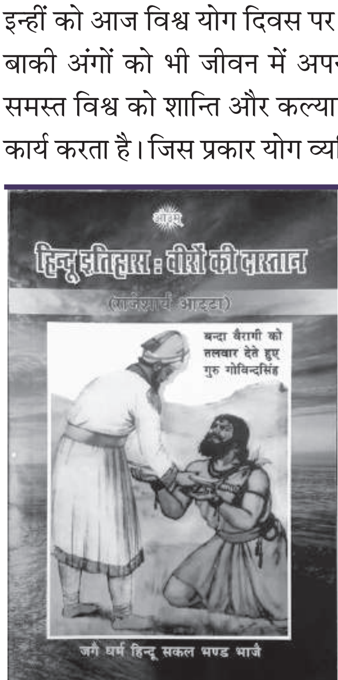

●क्या भारत का इतिहास केवल पराजयों का इतिहास है? ●पोरस विजयी हुआ था या सिकन्दर? ●हूणों को किसने हराया? ●क्या जाट गुज्जर विदेशी हैं? ●तैमूर को किसने हराया? ●गजनवी को किसने लूटा? ●क्या आर्य विदेशी हैं?

●विदेशी इतिहासकारों के मिथकों को खण्डित कर भारतीय परम्परा के वीरों के शौर्य की प्रामाणिक जानकारी देने वाली रोमांचक पुस्तक

●हिन्दू इतिहास वीरों की दास्तान

●लेखक : प्रसिद्ध इतिहासगवेषक **राजेशार्य आट्टा**
●प्रकाशक : रचना प्रकाशन पानीपत
पुस्तक शांतिधर्मी कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है।
240 पृष्ठ, रजिस्टर्ड डाक खर्च सहित 125 रुपये मात्र।
अपना पता 9416253826 व्हाट्स एप्प पर प्रेषित करें।
पुस्तक प्राप्त करने के लिये 125 रुपये मात्र जमा करायें

वैदिक धर्म प्रचार के इच्छुक उपदेश प्रचारक तथा भजनोपदेशक आमंत्रित हैं

वैदिक विचारधारा के विस्तार और प्रचार हेतु एक व्यवस्थित प्रचार योजना बनाई जा रही है, जिसके अंतर्गत आर्य समाज और वैदिक विचारधारा के प्रति समर्पित व्यवहारकुशल और चरित्रवान व्यक्तियों के द्वारा पूरे देश में व्यापक स्तर पर प्रचार प्रसार करवाया जाएगा। इस हेतु निर्धारित चयन प्रक्रिया के अंतर्गत चयन किए गए उपदेशकों, प्रचारकों तथा भजनोपदेशों को यह जानकारी प्रदान की जाएगी कि एक निर्धारित योजना के अंतर्गत प्रचार प्रसार का कार्य किन-किन मुख्य विषयों को आधार बनाकर एकरूपता के साथ सभी स्थानों पर किया जाए। प्रचार के दौरान वितरित की जाने वाली प्रचार सामग्री तथा साहित्य की भी जानकारी दी जाएगी।

इस हेतु प्रारंभिक रूप से दस प्रचारकों का चयन किया जाएगा जो भारत के हिंदी भाषी राज्यों तथा गुजरात और महाराष्ट्र राज्यों में प्रचार करेंगे। चयनित महानुभावों को कम से कम 3 वर्ष संगठन के साथ कार्य करना होगा। सभी प्रचारकों को सम्मानजनक मानदेय और आवश्यक प्राथमिक सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएँगीं।

स्वाध्यायशील, कुशल वक्ता, व्यवहार-कुशल तथा मिशनरी भावना वाले जिज्ञासु सागर आमंत्रित हैं। गुरुकुल शिक्षा प्राप्त शास्त्री एवं आचार्य तथा प्रचार प्रसार के कार्य में अनुभवी आवेदकों को प्राथमिकता दी जाएगी। कृपया शीघ्र ही फोटो सहित अपनी शैक्षिक योग्यता तथा अनुभव आदि का पूर्ण विवरण निम्नलिखित पते पर भेजें अथवा मेल करें।

आवेदन भेजने का पता

श्री प्रकाश जी आर्य, आर्य समाज मंदिर,
2795, पंडित राजगुरु शर्मा मार्ग इंदौर रोड महू-453441
मध्य प्रदेश मो. 9826655117

भवदीय
(सुरेश चंद्र आर्य)
प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

राज्यपाल श्री आचार्य देवव्रत जी ने की आम नागरिकों के साथ एसटी बस से यात्रा
लोगों से संवाद और अनुभवों ने यात्रा को अविस्मरणीय बना दिया : आचार्य देवव्रत जी

गुजरात के राज्यपाल श्री आचार्य देवव्रत आणंद कृषि विश्वविद्यालय में आत्मा परियोजना और आणंद कृषि विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित प्राकृतिक कृषि परिसंवाद में भाग लेने के लिए परंपरागत प्रोटोकॉल और वीवीआईपी यातायात व्यवस्था को दरकिनार करते हुए, एक प्रेरणादायी पहल के तहत गुजरात राज्य सड़क परिवहन निगम की एसटी बस सेवा से आम नागरिकों के साथ यात्रा कर के आणंद पहुंचे।

राज्यपाल ने इस यात्रा के लिए ऑनलाइन एडवांस बुकिंग के माध्यम से नॉन-एसी सुपर डीलक्स श्रेणी की एसटी बस में तीन टिकटों का आरक्षण करवाया था। यह बस विसनगर से आणंद के लिए चलने वाली ऑर्डिनरी बस सेवा थी।

रविवार सुबह 7.20 पर राज्यपाल श्री आचार्य देवव्रत अचानक राजभवन से बिना किसी औपचारिक घोषणा के गांधीनगर एसटी डिपो पहुंचे और वहां से आम यात्रियों के साथ उक्त बस में सवार हुए। बस ने अपने निर्धारित रूट और स्टॉपेज के अनुसार चलते हुए सुबह 10.15 बजे आणंद बस स्टेशन पर पहुंचाया।

जनता के बीच बैठकर यात्रा का लिया अनुभव :

राज्यपाल ने अपनी इस सादगीपूर्ण यात्रा के दौरान बस में बैठे अन्य यात्रियों से संवाद किया और उनसे राज्य सरकार द्वारा प्रदान की जा रही परिवहन सुविधाओं को लेकर फीडबैक लिया। उन्होंने बताया कि यात्रियों ने रोडवेज की सेवाओं और हो रहे नवीनीकरण को लेकर संतोष प्रकट किया।

राज्यपाल ने अनुभव साझा करते हुए कहा- लंबे समय से मेरी बड़ी इच्छा थी कि एक दिन मैं गुजरात रोडवेज की सामान्य बस में आम नागरिकों के साथ यात्रा करूँ। इस दौरान मुझे राज्य के विभिन्न हिस्सों से यात्रा कर रहे भाई-बहनों से मिलने और बातचीत करने का अवसर मिला। श्री आचार्य देवव्रत जी ने कहा- मैंने बस में बैठे स्टूडेंट्स, छोटे बच्चों, युवाओं, बुजुर्गों- सभी से संवाद किया। लोग सरकार की ओर से मिल रही परिवहन सुविधाओं को लेकर संतुष्ट हैं। यात्रियों ने मेरे साथ यात्रा को अपनापन और खुशी का अनुभव बताया। मेरे लिए यह यात्रा अत्यंत सुखद और स्मरणीय रही।

उन्होंने कहा- जनता और प्रशासन के बीच जो समरसता और संवाद होना चाहिए, उसका प्रत्यक्ष अनुभव मुझे इस यात्रा के माध्यम से मिला। मैं समझता हूं कि इस तरह की यात्राएं जनता से सीधा जुड़ाव बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

एक मिसाल बनी यह यात्रा :

राज्य के प्रथम नागरिक होने के बावजूद राज्यपाल द्वारा आम जनों के साथ बस यात्रा करना एक मिसाल है, जो प्रशासनिक सादगी, जनसंपर्क और सेवा भावना का प्रतीक है। उन्होंने यह सिद्ध किया कि जनप्रतिनिधि जब आमजन के बीच उतरते हैं, तो न केवल विश्वास बढ़ता है, बल्कि व्यवस्थाओं में सुधार की संभावनाएं भी सशक्त होती हैं। राज्यपाल श्री आचार्य देवव्रत जी का स्वागत करने आणंद एसटी स्टेशन पर जिला कलेक्टर श्री प्रवीण चौधरी, जिला विकास अधिकारी सुश्री देवाहुति, जिला पुलिस अधीक्षक श्री गौरव जसानी, निवासी अतिरिक्त कलेक्टर श्री आर. एस. देसाई, कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति श्री के. बी. कथीरिया सहित गुजरात राज्य सड़क परिवहन निगम के वरिष्ठ अधिकारी एवं कर्मचारी भी उपस्थित रहे। यह यात्रा 25 मई को की गई।

ओ३म्

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की

200वीं जयंती

आर्यसमाज स्थापना के

150वें वर्ष

के अवसर पर

विश्व के इतिहास में अब तक का सबसे विशाल

सार्द्ध शताब्दी अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन नई दिल्ली

30 अक्टूबर से 2 नवंबर 2025

तदनुसार कार्तिक शुक्ल 8, 9, 10, 11 विक्रमी 2082

तिथियां सुरक्षित कर लेवें एवं सबको सूचित करें।

• ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति • सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा • दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15, हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001

प्राणिमात्र के कल्याण की वैदिक भावनाओं से अनुप्राणित

महर्षि दयानन्द निर्दिष्ट मुख्य उद्देश्य 'संसार का उपकार' के लिये पूर्ण समर्पित

परिवार और समाज के पुनर्निर्माण का साहित्यिक मासिक

आपका प्रिय शान्तिधर्मी हिन्दी मासिक

शांतिधर्मी का सदस्यता/ग्राहकता सहयोग

प्रिय और सम्मानित पाठक! हम प्रत्येक अंक में सार्थक, सर्वोत्तम, विविधतापूर्ण, विचारपरक अध्ययन सामग्री देने का प्रयास करते हैं। हमने शांति धर्मी की पृष्ठ संख्या भी बढ़ा दी है। आप सब के आशीर्वाद से शांतिधर्मी का विस्तार हो रहा है। पर कुछ पाठकों को साधारण डाक से शांतिधर्मी नहीं प्राप्त हो पाता। इससे हमें भी कष्ट होता है और पाठक को भी असुविधा होती है।

इस समस्या से बचने के लिये पाठकों से निवेदन है कि वे अपनी प्रति पंजीकृत डाक से मंगवायें। पंजीकृत डाक से शांतिधर्मी का सदस्यता/ग्राहकता सहयोग इस प्रकार रहेगा–

एक वर्ष : 500 रुपये (रजिस्टर्ड डाक खर्च सहित)

पाँच वर्ष : 2100 रुपये (रजिस्टर्ड डाक खर्च सहित)

ध्यान दीजिये– हम आपसे एक वर्ष का केवल 200/ और 5 वर्ष का केवल 600/– ही ले रहे हैं। (12 अंकों का रजिस्टरी शुल्क पैकिंग सहित लगभग 336 रुपये बनता है।) क्योंकि हमारा उद्देश्य व्यवसाय नहीं, धर्म और राष्ट्रीयता का प्रचार है।)

❍ 10 या अधिक प्रतियाँ एक स्थान पर मंगाने पर 200/–वार्षिक के हिसाब से अग्रिम राशि भेजें। वाञ्छित प्रतियाँ हर मास पंजीकृत डाक से आपके पते पर भेजी जायेंगी। इस पैकेट का रजिस्टरी खर्च **हम वहन करेंगे**। यदि आप समर्थ हैं तो अपनी ओर से कम से कम दस प्रतियों का वितरण करके यह विद्या का दान अवश्य करें।

❍ **शिक्षण संस्थाएँ** वरिष्ठ बालकों या स्टॉफ में वितरण हेतु एक वर्ष तक 10 या अधिक प्रतियाँ पंजीकृत डाक से मँगायें।

❍ नई आजीवन सदस्यता हम बंद कर रहे हैं। 20 वर्ष तक पुराने सदस्य सदस्यता का नवीनीकरण अवश्य कराकर सहयोग करें।

❍ जिन आदरणीय पाठकों को उनकी प्रति साधारण डाक से मिल रही है, उनके लिये वार्षिक शुल्क 200/ ही है। **लेकिन वे कृपया पत्रिका न पहुंचने पर हमारे साथ अनावश्यक विवाद न करें। रजिस्टरी से भेजने पर हमारा श्रम और खर्च बढ़ता है तथापि हम चाहते हैं कि हमारे प्रिय पाठकों को पत्रिका नियमित रूप से प्राप्त हो।**

❍ ग्राहकता से संबंधित किसी भी जानकारी के लिये कृपया व्हाट्सएप या फोन करें–

094162 53826 भवदीय, **सम्पादक मण्डल**

शांतिधर्मी का ग्राहकता शुल्क जमा कराने के लिये स्कैन करें

साधारण डाक से : एक वर्ष 200/–

पंजीकृत डाक से : एक वर्ष : 500/–

पाँच वर्ष : 2100/–

कृपया राशि जमा कर अपना पता व्हाट्स एप करें– 9416253826

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक सहदेव द्वारा प्रियंका प्रिंटर्स, जींद के लिए आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक से छपवाकर, कार्यालय शान्तिधर्मी ७५६/३, आदर्श नगर, सुभाष चौक (पटियाला चौक), जीन्द-१२६१०२ (हरि०) से प्रकाशित। सम्पादक : सहदेव

आर्य उप प्रतिनिधि सभा गौतम बुद्ध नगर के तत्त्वाधान में 29 जून को 'जातीय संघर्षों में टूटता भारतीय हिन्दू समाज : कारण, समस्या व समाधान' विषय पर वानप्रस्थी देवमुनि जी की अध्यक्षता में विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया

ग्राम सिवाहा जिला जींद में श्री अमित आर्य के दादा जी श्री पृथ्वीसिंह की 19वीं पुण्य तिथि पर स्मृति यज्ञ का आयोजन सहदेव शास्त्री जी के ब्रह्मत्त्व में हुआ। वैदिक विद्वान् व सामाजिक व्यक्तित्त्व प्रो. महावीर सिंह आर्य जी का भी सान्निध्य रहा

ग्राम जाडरा, जनपद रेवाड़ी में आर्यसमाज व ग्राम पंचायत द्वारा युवक व युवतियों के चरित्र निर्माण शिविरों का भव्य आयोजन हुआ, तीन दिन का वार्षिकोत्सव भी भव्यता से मनाया गया। (हरिराम आर्य, जाडरा)

यशस्वी लेखक, सिद्धहस्त सम्पादक, ओजस्वी वक्ता

श्री पं. क्षितीश जी वेदालंकार

का सम्पूर्ण साहित्य संकलन प्रकाशित

1. **पं. क्षितीश वेदालंकार ग्रन्थावली- खण्ड-1, सिद्धान्त अंक**
   1. निज़ाम की जेल में, 2. आप्त राष्ट्रपुरुष, 3. दिव्य दयानन्द, 4. आर्यसमाज की विचारधारा, 5. ईश्वर संसार के प्रसिद्ध वैज्ञानिकों की दृष्टि में — पृष्ठ 569, मूल्य 500
2. **पं. क्षितीश वेदालंकार ग्रन्थावली- खण्ड-2, हिन्दी-हिन्दू, हिन्दुस्तान अंक**
   1. जातिभेद का अभिशाप, 2. हिन्दी ही क्यों ? 3. भारत को हिन्दू (आर्य) राष्ट्र घोषित करो, 4. कश्मीर : झुलसता स्वर्ग — पृष्ठ 474, मूल्य 500/-
3. **पं. क्षितीश वेदालंकार ग्रन्थावली- खण्ड-3, अभिनन्दन अंक**
   1. चयनिका, 2. राष्ट्रीय पत्रकारिता के पुरोधा — पृष्ठ 676, मूल्य 500/-
4. **पं. क्षितीश वेदालंकार ग्रन्थावली-खण्ड-4, यात्राएँ, उपन्यास एवं हास्य विनोद अंक**
   1. बांग्ला देश : स्वतंत्रता के बाद, 2. पंडिम के दुर्गम पथ पर, 3. उत्तराखण्ड के पथ पर, 4. स्वेतलाना, 5. गांधी जी का हास्य विनोद — पृष्ठ 440, मूल्य 500/-
5. **पं. क्षितीश वेदालंकार ग्रन्थावली-खण्ड-5, ललित साहित्य अंक**
   1. फिर इस अन्दाज से बहार आई, 2. ओ मेरे राजहंस, 3. देवता कुर्सी के — पृष्ठ 466, मूल्य 650-
6. **पं. क्षितीश वेदालंकार ग्रन्थावली- खण्ड-6, 'आर्य-जगत्' के अग्रलेख**
   1. हिन्द की चादर पर दाग, 2. राष्ट्रीय एकता की बुनियादें, 3. असलियत क्या है ? 4. क्षितीश जी के अन्य लेख — पृष्ठ 540, मूल्य 700/-
7. **पं. क्षितीश वेदालंकार ग्रन्थावली, खण्ड-7, राजनीति नहीं, राष्ट्रनीति** — पृष्ठ 584, मूल्य 700/-

पूरी ग्रंथावली एक साथ मँगाने पर 40 प्रतिशत छूट; साथ ही `तूफ़ान के दौर से पंजाब' की प्रति नि:शुल्क

प्राप्ति स्थान :-

अरविन्द प्रकाशन® प्रा०लि०

स्पोर्ट्स कॉम्प्लैक्स एन्क्लेव, दिल्ली रोड, मेरठ-250002

फोन (0121) 2521607, 4002779, 9927070730

ई-मेल : info@arvindprakashan.com वेब : arvindprakashan.com

शाखाएँ :-

- शिवम यशोदालाल कॉम्पलैक्स, ट्रांसपोर्ट नगर, गेट नं० 2 के सामने, जकारियापुर, पी०एस०-रामकृष्ण नगर, पटना मो. 9334482533, 9430312773
- न्यू पान दरीबा, टी०बी० क्लीनिक के सामने, चौपला रोड, बरेली फोन : 0581-2452767, मो. 9927070729
- 87/223 ए, आचार्य नगर, कानपुर मो. 7895124848